अनुक्रमणिका

१.	विश्वमंगलकारी श्रीराधारानी ब्रजयात्रा	३
२.	यात्रा के चमत्कार	९
३.	धामप्रेम–प्राप्ति का स्रोत 'सत्संग'	१९
४.	मोहविभंजनी श्रीगीताजी	२२
५.	भक्त–आसक्ति से भव–मुक्ति	२४
६.	रानी झालीबाई की गुरु भक्ति	२८
	'रसीली ब्रजयात्रा भाग– २' ग्रन्थ का विमोचन	३०

यात्रा विशेषांक

संरक्षक

श्री राधा मान बिहारी लाल

प्रकाशक

राधाकान्त शास्त्री

मान मन्दिर सेवा संस्थान

गह्वर वन, बरसाना, मथुरा (उ. प्र.)

Website : www.maanmandir.org

E-mail : ms@maanmandir.org

Tel. : 9927338666, 9927194000

मूल्य – १० रूपये

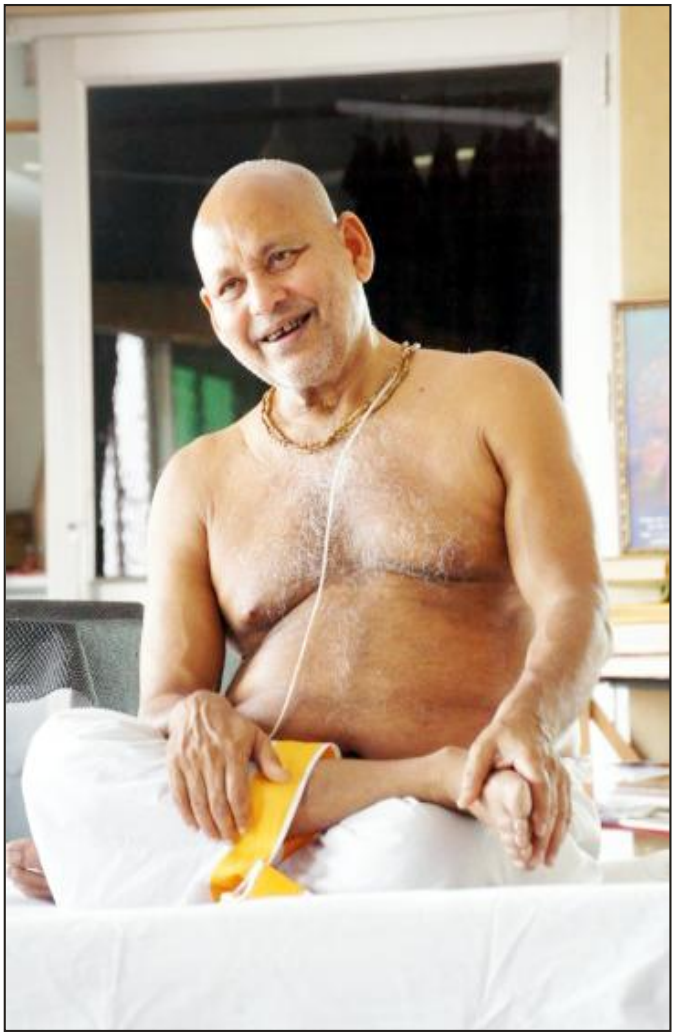

ब्रजोपासक बनना है तो सम्मान की भूख नहीं रखनी चाहिए, गँवार बन जाओ। ब्रज में तो परमेश्वर ने भी गाली खाई है। इसी का नाम ब्रजोपासना है। किसी ने अपमान कर दिया तो हँस जाओ। जो गँवार नहीं बना, उसे ब्रज रस नहीं मिलेगा।

–पूज्य श्री बाबा महाराज

श्रीमानमन्दिर की बेवसाइट www. maanmandir. Org के द्वारा आप बाबाश्री के प्रात:कालीन सत्संग का ८.३० से ९.३० तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६.३० से ७.३० तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं।

प्रकाशकीय

धाम–धामी के साम्य का उल्लेख सर्वत्र सुलभ है परंतु धामी के दर्शन भौतिक नेत्रों से सहज प्राप्त नहीं है लेकिन धाम का न केवल दर्शन अपितु सतत् सन्निधि संभव है। इसके अतिरिक्त जो कार्य स्वयं भगवान् नहीं कर सके, वह धाम ने कर दिया। जगज्जननी सीता की निंदा करने वाले रजक (धोबी) को भी धाम ने तार दिया। जगत्पिता ब्रह्मा ने ग्वाल–गोवत्स हरण का अपराध किया जो अक्षम्य था, उसे भी धाम ने दूर किया। ब्रह्माजी ने ब्रजधाम की परिक्रमा किया और भगवत्कृपा प्राप्त किया। धाम–महिमा अनंत है। ब्रज के परम विरक्त संत पूज्य श्री रमेश बाबा जी महाराज ने धाम–निष्ठा के लिए ही अपने को पूर्णतया समर्पित कर रखा है। गत ६६ वर्षों से ब्रजधाम में अखंड वास करते हुए ब्रज के वन, सरोवर, पर्वत, यमुनाजी आदि की निरंतर सेवा में संलग्न हैं। ब्रजधाम ८४ कोस की यात्रा गरीब, अमीर सभी कर सकें, इस कृपा–भावना से सन् १९८८ से प्रतिवर्ष नि:शुल्क यात्रा कराने का संकल्प उन्होंने लिया। लगभग ३० वर्षों से १५ से २० हजार यात्रियों को ४० दिवस पर्यन्त ब्रजयात्रा आवास, भोजन, उपचार आदि समस्त सुविधाओं के साथ करा रहे हैं। देश के विभिन्न प्रांतों से आये लोग एक लघु भारत का दृश्य प्रस्तुत करते हैं। यही नहीं यात्रा के माध्यम से ब्रज के पर्यावरण, स्वच्छता तथा जनता में जन–जागरण व हरिनाम–प्रचार भी किया जाता है। यह यात्रा प्रतिवर्ष दशहरा के दो दिन पश्चात् त्रयोदशी से शुरू होती है। यात्रा में अनेक चमत्कार होते हैं। ऐसी पतितपावनी यात्रा का लाभ अधिकांश भक्तों को मिल सके एतदर्थ मान मंदिर सेवा संस्थान से मासिक प्रकाशित होने वाली पत्रिका के इस अंक को **'यात्रा विशेषांक'** के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है पाठकों को यह अंक धामप्रेम–वर्द्धक सिद्ध होगा।

–राधाकान्त शास्त्री

विश्वमंगलकारी श्रीराधारानी ब्रजयात्रा

संत श्री भामिनी शरण जी *(मान मन्दिर)*

गर्गसंहिता के अनुसार जब द्वापरान्त में पृथ्वी सहित देवगण गोलोकधाम में भगवान् श्रीकृष्ण से भू-भार हरण हेतु अवतार के लिए प्रार्थना करने गए तो श्याम सुन्दर ने राधारानी की ओर देखकर कहा- हे देवी ! मैं पृथ्वी पर अवतार लूँगा किन्तु आपके बिना मेरी लीला अधूरी रहेगी अतः कृपा करके आप भी मेरे साथ पृथ्वी पर अवतार लीजिये। राधारानी ने स्पष्ट कह दिया

यत्र वृन्दावनं नास्ति यत्र नो यमुना नदी।
यत्र गोवर्द्धनो नास्ति तत्र मे न मनःसुख॥

(गर्गसंहिता गोलोक खंड-३/३२)

जहाँ वृन्दावन नहीं है, गोवर्धन पर्वत नहीं है तथा यमुना नदी नहीं है, वहां मेरे मन को सुख नहीं मिलता। इनके बिना मैं नहीं रह सकूँगी।

तब श्रीजी की कृपा और श्री कृष्ण की प्रेरणा से समस्त ब्रजभूमि का गोलोकधाम से पृथ्वी पर अवतरण हुआ।

वेदनागक्रोशभूमिं स्वधाम्नः श्रीहरिःस्वयम्।
गोवर्धनं च यमुनां प्रेषयामास भूपरि॥

(गर्गसंहिता गोलोक खंड-३/३३)

यह ब्रजधाम पृथ्वी पर दृष्टिगोचर होते हुए भी पृथ्वी से और विश्व ब्रह्माण्ड से परे, त्रिगुणातीत दिव्य चिन्मय है। भगवान् ने ब्रज को इस पृथ्वी पर इसीलिए स्थापित किया है ताकि इसके आश्रय के द्वारा हम सहजता से भगवत्प्रेम, भगवत्प्राप्ति और नित्यधाम की प्राप्ति कर सकें। ब्रजपरिक्रमा के द्वारा भक्तापराध जैसा भयंकरतम अपराध भी नष्ट होता है जिसे स्वयं भगवान् भी क्षमा नहीं करते हैं। इसीलिए जब ब्रह्मा जी ने मोहवश श्री श्यामसुंदर के सखा गोप बालकों तथा उनके बछड़ों का हरण कर लिया तो उनको भक्तापराध लग गया। इस अपराध के परिमार्जन हेतु उन्होंने तीन बार ब्रज-परिक्रमा की तब उनका भक्तापराध नष्ट हुआ।

इत्यभिष्टूय भूमानं त्रिः परिक्रम्य पादयोः।
नत्वाभीष्टं जगद्धाता स्वधाम प्रत्यपद्यत॥

(श्रीमद्भागवत१०/१४/४१)

ब्रज-परिक्रमा करहु देह को पाप नसावहु।

(सूरदास जी)

ब्रजयात्रा क्यों की जाती है, ब्रजयात्रा का क्या उद्देश्य होता है और क्या होना चाहिए? ब्रह्मा जी ने भी ब्रजयात्रा की थी, श्री विदुर जी ने भी ब्रजयात्रा की, नागा जी महाराज तो एक दिन में ही सम्पूर्ण ब्रज मण्डल की परिक्रमा कर लिया करते थे। शरीर का प्रत्येक अंग, प्रत्येक अवयव भगवान् के लिए ही कर्म करे, हमारा प्रत्येक कर्म, प्रत्येक क्रिया भगवदार्पित हो। हम लोग कहते हैं कि हम भगवान् की शरण में हैं, भगवान् की शरणागति ग्रहण करनी चाहिए। श्रीमद्गीता जी का जो अंतिम उपदेश है और जो गीता जी का सार है, उसमें भी भगवान् ने यही कहा कि **मामेकं शरणं व्रज**...एक मात्र मेरी शरण में आ। शरणागति अन्यत्र नहीं लेनी चाहिए क्योंकि सच्ची शरण एकमात्र भगवान् के प्रति है। **'मामेकंशरणम्'** भगवान् ने कोई दूसरी शरण के बारे में नहीं कहा, उन्होंने कहा कि एकमात्र मेरी ही शरण में आया जाये। ब्रजयात्रा भगवान् की शरणागति ग्रहण करने की एक विधि है।

श्रीभट्टदेवाचार्य जी महाराज ने कहा है-

धनि धनि चरण चलत तीरथ को,
धनि गुरु जिन हरि नाम सुनायो।
मदन गोपाल शरण तेरी आयो॥

वे चरण धन्य हो जाते हैं, शरीर से किया हुआ प्रत्येक कर्म धन्य हो जाता है, वह शरीर धन्य हो जाता है, वह जीवन धन्य हो जाता है, वह जन्म धन्य हो जाता है जो भगवान् के काम आ जाए क्योंकि ये श्रीमद्भागवत में लिखा है-

''पादौ हरेः क्षेत्रपदानुसर्पणे''

(श्रीमद्भागवत ९/४/२०)

चरणों से यदि भगवद्धाम की यात्रा नहीं की गयी तो ये चरण केवल जड़ की तरह हैं जैसे पेड़ अचर जीव हैं, चल फिर नहीं सकते, जहाँ खड़े हैं वहां खड़े ही रहेगें, इन्हें धूप-ताप-शीत आदि बहुत से द्वन्द सहने पड़ते हैं, कष्ट सहने पड़ते हैं। ये न तो अपना कष्ट दूर कर सकते हैं और न ही किसी से कह सकते हैं, न कष्ट दूर करने का प्रयास कर सकते हैं। जड़ आदि योनियों से मुक्ति प्राप्त करने के लिए ही धाम की परिक्रमा की जाती है।

ब्रजयात्रा से लौकिक लाभ और पारमार्थिक लाभ-दोनों प्रकार के लाभ होते हैं। ब्रजयात्रा करने से लौकिक लाभ तो यह होता है कि हम जड़ योनियों की प्राप्ति से दूर रहते हैं, हमारे पाप नष्ट होते हैं। ऐसे-ऐसे जघन्य पाप ब्रज-परिक्रमा से नष्ट होते हैं, जिनकी हमलोग कल्पना भी नहीं कर सकते और पारमार्थिक लाभ यह है कि ब्रजयात्रा के माध्यम से हमलोगों को संतसानिध्य मिलता है,धाम वास मिलता है, सतत् हरिनाम संकीर्तन श्रवण करने को मिलता है। ब्रजयात्रा करने से सबसे बड़ा लाभ यही है कि हमारा चित्त, हमारा अंतःकरण बिना प्रयास के स्वतः ही भगवान् में लगा रहता है, हम न चाहें, हम प्रयास न करें तो भी ब्रजयात्रा के द्वारा हमारा चित्त भगवान् में लगा रहेगा। ऐसा संयोग मान मंदिर से संचालित राधारानी ब्रजयात्रा में ही बनता है। इसयात्रा में चौबीस घंटे अखण्ड कीर्तन चलता रहता है

इसलिए न चाहने पर भी कान में सतत् हरिनाम प्रवेश करता रहता है। इस तरह से स्वमेव ही भगवद्–शरणागति सुगमता पूर्वक हो जाती है। इसलिए ब्रज–परिक्रमा इस उद्देश्य से करनी चाहिए कि हम भगवान् की शरण ग्रहण करें। ब्रजयात्रा करते समय आपस में भक्तों के प्रति कटु वाणी, राग–द्वेष आदि द्वंदों का परित्याग कर देना चाहिए तब हमें ब्रज–परिक्रमा का यथार्थ फल मिलेगा।

ब्रजनिष्ठ परम श्रद्धेय पूज्य श्रीरमेश बाबामहाराज द्वारा संचालित श्री राधारानी ब्रजयात्रा अपने में अलौकिक है, ब्रज में ब्रजयात्राओं का व्यापारीकरण होने लग गया, शुल्क लेकर पदयात्रा नहीं अपितु वाहनों द्वारा यात्रा करायी जाने लगीं और शुल्क भी इतना अधिक लिया जाता है कि गरीब व्यक्ति ब्रजयात्रा नहीं कर सकते। ब्रजयात्राओं में धन का इतना वर्चस्व देखकर पूज्य श्री बाबामहाराज को बहुत दु:ख हुआ कि गरीब व्यक्ति तो धनाभाव में ब्रजयात्रा, ब्रज का दर्शन ही नहीं कर सकते। इस समस्या को देखकर बाबा महाराज ने संकल्प कर लिया कि अब मान मंदिर द्वारा एक ऐसी यात्रा का शुभारम्भ होगा जो पूर्णतया नि:शुल्क होगी, जिसमे गरीब श्रद्धालु बिना किसी रोकटोक के सहजता से ब्रज–परिक्रमा कर ब्रजभूमि का दर्शन कर सकेंगे। श्री बाबा के संकल्प को पूर्ण होने में देर नहीं लगी और सन् १९८८ से उनके नेतृत्त्व में ब्रजयात्रा का शुभारम्भ हो गया।श्री बाबा महाराज ने इस यात्रा का नामकरण किया 'श्री राधारानी ब्रजयात्रा'। श्रीबाबा ने कहा कि यह राधारानी की यात्रा है और वे ही इसका संचालन करती हैं। यात्रा के लिए जो पर्चे मुद्रित किए गए थे, श्री बाबा महाराज ने मान मंदिर के प्रबंधकों से स्पष्ट कह दिया कि इन पर्चों में केवल श्री राधामानबिहारीलाल का ही नाम देना,यदि मेरा नाम डाला गया तो मैं यात्रा में नहीं जाऊंगा।

बाबा महाराज के निर्देशानुसार यात्रा का संचालन किया गया किन्तु उस समय मान मंदिर पर अर्थ का पूर्णतया अभाव था, यात्रा उठाना अत्यंत दुरुह कार्य था, उस समय मान मंदिर पर रहने वाले बाबा के प्रति पूर्ण समर्पित ब्रजवासी श्री रघुवीर भगत जी अपना खेत गिरवी रखकर ११ हजार रूपए ऋण लाये और उसी धन से यात्रा का शुभारम्भ हुआ। मान मंदिर की आर्थिक स्थिति उस समय इतनी शोचनीय थी कि न तो यात्रा के लिए तम्बू तनात की व्यवस्था थी, न भोजन का प्रबंध था, केवल ११ मन सत्तू पिसाकर सत्तू का ही आहार यात्रियों को उपलब्ध कराकर यात्रा की गयी। बिजली, पानी आदि किसी प्रकार की कोई सुविधा नहीं थी, ग्रीष्मऋतु में लू के भीषण झकोरों को सहते हुए प्रारम्भिक यात्रायें की गयीं। जब बरसाना से प्रथम बार श्री बाबा महाराज के नेतृत्त्व में २०० लोगों के साथ यात्रा रवाना हुई तो कुछ लोगों ने श्री बाबा महाराज का बहुत विरोध किया कि इन्हें यात्रा संचालन करने का कोई अधिकार नहीं है किन्तु श्रीबाबामहाराज ने किसी विरोध, किसी कठिनाई की कोई परवाह नहीं की और प्रेम दीवानी मीराजी की तरह अति निरंकुश और निडर होकर ब्रजयात्रा का नेतृत्त्व किया। समस्त असुविधाओं से युक्त होने पर भी श्री राधारानी ब्रजयात्रा में महाराज श्री द्वारा अखण्ड नाम संकीर्तन की व्यवस्था की गयी थी। प्रारम्भ में यह तीन वर्षों में एक बार ही उठाई जाती थी परन्तु इसकी लोकप्रियता इतनी बढ़ती गयी कि श्रद्धालु भक्तों के प्रबल आग्रह पर १९९६ से यह यात्रा प्रतिवर्ष उठाई जाने लगी है। राजस्थान के एक वयोवृद्ध प्रसिद्ध संत यात्रियों के लिए भोजन व्यवस्था का कई वर्षों तक प्रबंध करते रहे परन्तु यात्रा में भक्तों की प्रतिवर्ष बढ़ती संख्या देखकर एक बार उन्होंने श्री बाबा महाराज से प्रार्थना किया कि राधारानी ब्रजयात्रा में लोगों की संख्या प्रतिवर्ष वृद्धि को प्राप्त हो रही है और इसी प्रकार देश में महंगाई भी तेजी से बढ़ रही है,ऐसी स्थिति में आप कम से कम प्रत्येक ब्रजयात्री के लिए १०० रुपये का शुल्क रख दीजिये अन्यथा भविष्य में यात्रा का निर्वाह करना असंभव हो जायेगा। उनकी बात सुनकर श्री बाबा ने उत्तर दिया कि यह श्री राधारानी की ब्रजयात्रा है, इसका निर्वाह, पोषण और परिसंचालन वह स्वयं करती हैं, उनके रहते भला हम क्यों इसके निर्वाह की चिंता करें। वह संत श्री बाबा के उत्तर को सुनकर बोले – महाराज! ऐसी स्थिति में मेरे लिए भविष्य में यात्रा हेतु भोजन की व्यवस्था का प्रबंध करना असंभव होगा।श्री बाबा महाराज ने उनसे कहा कि आप चिंता मत करें, भोजन–व्यवस्था का उत्तरदायित्त्व आप छोड़ दीजिये। यात्रियोंसे शुल्क लेने के स्थान पर मैं यात्रा को बंद करना अधिक श्रेष्ठ समझूंगा किन्तु यात्रियों से पैसा लेना मैं अपराध समझता हूँ। श्री बाबा महाराज के परामर्श से उन संत ने भोजन व्यवस्था का प्रबंध छोड़ दिया और यात्रियों की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती गयी फिर भी यात्रा में किसी प्रकार की असुविधा नहीं हुई और अब तो १५ से २० हजार यात्री तक आनन्द से प्रतिवर्ष नि:शुल्क यात्रा का लाभ उठाते हैं। समस्त असुविधाओं से प्रारंभ हुई यह ब्रजयात्रा अब सर्वसुविधासंपन्न और परम रसमयी बन गयी है। यात्रियों को दोनों समय भोजन उपलब्ध कराया जाता है, प्रात:काल अल्पाहार प्रदान किया जाता है। इसके अतिरिक्त बीमार पड़ जाने पर यात्रियों की चिकित्सा हेतु डॉक्टरों का प्रबंध किया जाता है जो नि:शुल्क रूप से रोगियों को औषधि वितरण करते हैं। प्रात:काल ५ से ६ बजे के मध्य ब्रजयात्रा अपने पड़ाव स्थल से अगले पड़ाव को चल देती है। ब्रजयात्रियों को अपना सामान स्वयं नहीं वहन करना पड़ता है, इसके लिए बड़े–बड़े वाहनों की व्यवस्था की जाती है। यात्रीगण सुबह परिक्रमा में चलते समय अपना सामान पड़ाव स्थल पर ही छोड़ जाते हैं, फिर वाहन उनके सामान को अगले पड़ाव पर पहुंचा देते हैं। यह व्यवस्था भी पूर्णरूपेण नि:शुल्क है। राधारानी ब्रजयात्रा का सबसे महत्वपूर्ण आकर्षण होता है चौबीस घंटे का अखण्ड

कीर्तन, इसके कारण चालीस दिवसीय यात्रा का प्रत्येक क्षण, रस और प्रेम की अनुभूति कराता रहता है। प्रात:काल जब यात्रा अपने गन्तव्य को रवाना होती है तो उसकी भी एक समुचित व्यवस्था होती है। यात्रा की विशाल पंक्ति में सबसे आगे एक संत श्री जी की झंडी लेकर चलते हैं, उनके पीछे मान मंदिर द्वारा संचालित 'दीदीजी गुरुकुल' के बालक और बालिकाएं चलते हैं, उनके पीछे साधु –संत चलते हैं, उनके पीछे श्रीराधामानबिहारीलाल को एक डोले में विराजित कर एक संत चलते हैं, उनके पीछे मान मंदिर की साध्वियों व संतजनों की कीर्तन मंडली होती है, जो मधुर स्वर में परिक्रमा के सम्पूर्ण मार्ग पर कीर्तन करते हुए चलती है, कीर्तन मण्डली के पश्चात् १५ से २० हजार यात्रियों की विशाल कतार होती है जो पूर्ण अनुशासित रूप से संकीर्तन करते हुए नृत्य–गान करते हुए चलती है। मान बिहारी लाल जी के डोले के आगे मान मंदिर की दिव्य साध्वियां सारे रास्ते नृत्याराधन करती हुई चलती हैं। इस रसमय गान और नृत्य से यात्रा का वातावरण अत्यधिक सरस हो जाता है। यात्रा की अग्रिम पंक्ति में माइकों द्वारा जो रसमय कीर्तन होता है वह दूर तक सभी यात्रियों को सुनाई पड़े इसके लिए वायरलेस ध्वनि यंत्रों की व्यवस्था की जाती है। इसके लिए दस–बारह युवकों का प्रबंध किया जाता है जो अपने कंधो पर लाउड स्पीकर और मशीन लेकर चलते हैं, इन यंत्रों में ऐसी व्यवस्था होती है कि यात्रा की अग्रिम पंक्ति में जो कीर्तन होता है, बिना तार के ही उसकी ध्वनि २–3 किलोमीटर तक प्रसारित होती रहती है और उसके माध्यम से दूर तक फैले हुए पंद्रह–बीस हजार यात्री संकीर्तन का रसमय श्रवण करते हुए आनंद से झूमते हुए चलते हैं। मार्ग में जो भी लीला स्थलियाँ पड़ती है, यात्रा के व्यवस्थापक संतजन यात्रियों को उनका दर्शन कराते एवं उनकी महिमा का वर्णन करते हैं। राधारानी ब्रजयात्रा से ब्रजवासियों का अगाध स्नेह है, परिक्रमा के दौरान जो भी गाँव आते हैं, वहां के ब्रजवासी अत्यंत प्रेम और उत्साह के साथ यात्रियों का स्वागत करते हैं। यात्रियों को फूलों की माला पहनाते हैं और उन्हें अनेक भोज्य पदार्थ बनाकर खिलाते हैं। प्रत्येक गाँव के ब्रजवासी प्रतिवर्ष अत्यधिक बेसब्री (अति उत्साह) के साथ राधारानी ब्रजयात्रा की प्रतीक्षा करते हैं और यात्रा के आगमन पर अनेकों गाँवों में सम्पूर्ण मार्ग पर फूलों की वर्षा करके, आरती उतारकर और कीर्तन मण्डलियों के सहित अनेकों व्यंजनों के साथ ऐसा स्वागत होता है कि सभी का मन प्रेम से प्रफुल्लित हो जाता है। राधारानी ब्रजयात्रा के प्रति ब्रजवासियों का अभूतपूर्व प्रेम दृष्टिगोचर होता है। यात्रा जब अपने गन्तव्य को पहुँचती है तो वहाँ पहले से ही यात्रियों के आवास हेतु दूर–दूर तक फैले विशाल तम्बू–तनातों की व्यवस्था की जाती है। कई टैंकरों के द्वारा यात्रियों के लिए जल और स्नान सुविधा का प्रबंध रहता है। जेनरेटर के द्वारा विद्युत व्यवस्था का भी प्रबंध रहता है। यात्रा के पड़ाव स्थल पर भी अनवरत रसमय संकीर्तन और नृत्य की अनुपम छटा बिखरी रहती है। जिन लीला स्थलियों से यात्री गुजर कर आते हैं और जहाँ पर उनका पड़ाव स्थल होता है, सायंकालीन सत्संग में श्री बाबा महाराज शास्त्रीय प्रमाण के द्वारा विस्तार से वहां की कथा सुनाते हैं। श्रीबाबा का दर्शन एवं उनके सत्संग का लाभ उठाने के लिए स्थानीय पड़ाव स्थल के ब्रजवासी भी बड़ी संख्या में आते हैं और अपनी संकीर्तन मण्डली के साथ देर रात तक कीर्तन और नृत्य करते हैं। सन् २०११ की यात्रा से श्रीबाबामहाराज शारीरिक अस्वस्थ्यता के कारण यात्राकाल में सायंकाल वाहन से प्रतिदिन यात्रियों को लीला स्थलियों का बोध कराने हेतु आते हैं। इसके पूर्व की सम्पूर्ण यात्राओं में श्रीबाबामहाराज स्वयं पूरी यात्रा में ब्रजयात्रियों के साथ रहते थे। जब वह यात्रा में चलते थे तो मार्ग में जो भी गाँव पड़ते थे वहां के ब्रजवासियों को अत्यधिक उत्साह के साथ प्रतिदिन संकीर्तन प्रभातफेरी में जाने को कहा करते थे। श्री बाबा महाराज के उपदेश का ग्रामीण ब्रजवासियों पर ऐसा प्रभाव पड़ता था कि अगले दिन से ही विशाल संख्या में कीर्तन करते हुए वे प्रभात फेरी आरम्भ कर देते थे। ब्रजयात्रा के माध्यम से श्री बाबा महाराज ने सम्पूर्ण ब्रजमंडल के हजारों गाँवों में संकीर्तन प्रभात फेरियों को प्रारंभ करा दिया, प्रभात फेरियों को अधिक सुचारू रूप से चलाने हेतु उनकी प्रेरणा से हजारों गाँवों में नि:शुल्क माइक और ढोलकों का भी वितरण किया गया।

राधारानी ब्रजयात्रा का उद्देश्य केवल ब्रज की परिक्रमा और ब्रज दर्शन ही नहीं है अपितु इसका मूल उद्देश्य तो ब्रजभूमि में भगवन्नाम संकीर्तन का प्रचार करना, ब्रज के नष्ट हो रहे तीर्थस्थलों का जीर्णोद्धार,उनका पुन: प्राकट्य तथा इनके माध्यम से ब्रज की लुप्त हो रही संस्कृति का संरक्षण करना है। इस यात्रा के माध्यम से इस उद्देश्य की पूर्ति में बहुत अधिक सफलता मिली है। ब्रज में अनेकों कुण्डों का जीर्णोद्धार किया गया,नवीनलीला स्थलियों की खोज हुई,वनों का संरक्षण किया गया तथा ब्रज वसुन्धरा के दिव्य पर्वतों को खनन माफियाओं के चंगुल से मुक्त कराकर उनकी सुरक्षा की गयी।

राधारानी ब्रजयात्रा में सतत् संकीर्तन का दिव्य रस द्वापर काल के कृष्ण कालीन ब्रज की स्मृति दिलाता है। इस यात्रा के दौरान श्री बाबा महाराज की शास्त्रीय संगीत पर आधारित युगल महामंत्र की धुनों का रसमय गायन होता है। राधारानी ब्रजयात्रा में ही श्री बाबा ने युगल महामंत्र की अनेकों नूतनधुनों की रचना की। इस यात्रा में निर्धन और धनी, प्रान्तीय एवं सांप्रदायिक भेद पूर्णतया मिट जाते हैं। भारत वर्ष के सभी प्रान्तों के एवं विदेशों तक के श्रद्धालु जन इस यात्रा में सम्मिलित होते हैं। समस्त सम्प्रदायों के वैष्णव भी बिना

किसी संकीर्णता के यात्रा का लाभ उठाते हैं। यात्रा में जो अखण्ड कीर्तन होता है, उसमें नाम कीर्तन को लेकर कोई सांप्रदायिक दुराग्रह नहीं रहता। समस्त वैष्णव सम्प्रदायों के अनुयायीजन अपनी रुचि के अनुसार कीर्तन करने को स्वतंत्र रहते हैं। चालीस दिन तक यात्रियों को जिस रस, आनन्द और प्रेम की अनुभूति होती है, उसका प्रभाव यह होता है कि यात्रा के समापन पर अनेकों यात्री करुण क्रन्दन करते हुए अपने घरों को जाते हैं। घर जाने के बाद भी उन्हें निरन्तर यात्रा की स्मृति होती रहती है और वे पत्रों और फोन के द्वारा बताते हैं कि स्वप्न में भी उन्हें यात्रा का दर्शन होता है।

यही वह यात्रा है जिसने जाने कितनों को राधा माधव का अनन्य उपासक बनाकर सांसारिक मोह माया से सदा सर्वदा के लिए दूर कर दिया, कई भक्तों को तो इस यात्रा के माध्यम से ही अखण्ड ब्रजवास की उपलब्धि हुई।

'रसीली ब्रजयात्रा' ग्रन्थ की लेखिका बाल विदुषी मुरलिका जी भी इसी यात्रा से संस्कारित होकर पूज्य श्री बाबा महाराज की अनुकम्पा से देश की विदुषी भागवत प्रवक्त्री बनीं। ब्रजयात्रा में सुश्री मुरलिका जी एवं उनके ताऊजी अति नि:स्पृह भागवत प्रवक्ता डॉ.श्री रामजी लाल शास्त्री का अद्‌भुत योगदान चला आ रहा है। भागवतकथाओं से प्राप्त दैवी द्रव्य का बिना स्पर्श किए ही इन महान विभूतियों के द्वारा नि:स्पृह भाव से राधारानी ब्रजयात्रा के लिए सर्वसमर्पण हो जाता है। उन्हीं के निवास स्थल श्री राधा रस मंदिर से ४० दिनों तक यात्रियों की सेवा हेतु भोजन सामग्री लेकर विशाल वाहन प्रतिदिन यात्रा पड़ाव को जाया करते हैं।

श्री राधारानी ब्रजयात्रा की एक अन्य विशेषता यह है कि हजारों की संख्या में श्री चैतन्य महाप्रभु के अनुयायी बंगाली भक्त अतिशय श्रद्धा और उत्साह के सहित सुदूर बंगाल प्रान्त से इस यात्रा में सम्मिलित होते हैं। वे अत्यंत श्रद्धा–भक्ति के साथ अहर्निश कीर्तन करते हैं और बंगाल की ही श्रद्धामयी स्त्रियाँ दोनों समय अत्यधिक परिश्रम और सेवा भाव के सहित यात्रा पांडाल में दूर–दूर तक जाकर यात्रियों को भोजन प्रसाद का परिवेषण करती हैं।

यात्रा के अन्त में विदाई समारोह का आयोजन होता है जिसमें श्री बाबा महाराज यात्रियों को यह संकल्प दिलाते हैं कि वे अपने नगरों और गाँवों में जाकर भगवन्नाम–कीर्तन की धूम मचा दें, प्रभात फेरियों का शुभारम्भ करके देश और समाज की सेवा करें। श्री बाबा महाराज के इस दिव्य उद्‌बोधन का यह प्रभाव होता है कि यात्रीगण अपने–अपने प्रान्तों,नगरों और गांवों में जाकर संकीर्तन प्रभात फेरियों का संचालन करने के अति दुर्लभ जनकल्याणकारी कार्य में संलग्न हो जाते हैं।

यात्रा समापन

४० दिन तक ब्रज यात्रियों को विलक्षण संकीर्तन रस, ब्रज वासियों के प्रेम, ब्रज रस और श्री बाबा महाराज के अभूत पूर्व सत्संग की प्राप्ति होती है। यह सब ब्रज स्वामिनी रास रासेश्वरी श्री राधारानी की कृपा से होता है। अत: उनकी कृपा की अनुभूति पूर्वक सभी यात्री ब्रजयात्रा समाप्त करके अपने–अपने गन्तव्य को चले जाते हैं इस अग्रिम कृपा की आशा और विश्वास के साथ कि अनवरत ब्रजभूमि का स्मरण बना रहे। हम ब्रज को न भूलें और ब्रज हमें न भूले तथा हम श्री बाबा महाराज को न भूलें और श्री बाबा महाराज हमें न भूलें।

यात्रा नियम

जिज्ञासु भक्त कैसे यात्रा करें ?

निम्नलिखित प्रतिपादित नियमों का संयम से पालन करें–

१. भगवान् भक्तों की सरलता एवं भोलेपन पर रीझते हैं। सांसारिक चतुराई को घर पर छोड़ कर आयें एवं इस भाव से यात्रा करें कि प्रभु हम पर रीझ जाएँ।

२. प्रत्येक यात्री में कृष्ण होने का भाव रखें।

३. सुख–सुविधाओं को छोड़ कर यात्रा करें। कार या बस से यात्रा करना यात्रा नहीं है वरन् एक रजोगुणी देशाटन है। पैदल तथा हो सके तो नंगे पाँव यात्रा करें। ब्रजभूमि का कंकड़, पत्थर और काँटा भी आपके पाँव में चुभे तो उस लक्ष कोटि आनन्द की प्राप्ति अन्यत्र कहीं सम्भव नहीं है। यह वही ब्रजभूमि है जहाँ राधामाधव एवं सखागण नंगे पाँव खेला करते थे और गोचारण के लिये जाते थे।

४. यह धाम चिन्मय है एवं हमारे प्राकृत चक्षुओं से इसका नित्य स्वरूप नहीं दिखाई पड़ता। आस पास फैली गंदगी से विचलित न होवें तथा धाम में साफ सफाई रखें तथा स्वयं गन्दगी का कारण न बनें।

५. कटु शब्द न बोलें। क्रोध न करें। यात्रियों से धक्का मुक्की न करें।

६. लीला स्थली पर जाने से पूर्व मान मंदिर से प्रकाशित ग्रन्थ 'रसीली ब्रज यात्रा' के लीला सम्बंधित अध्याय को पढ़ें तथा लीला चिंतन करें।

७. यात्रा में २४ घंटे भगवन्नाम कीर्तन होता है। यात्रा करने आये हैं तो व्यर्थ की बात न करें और निरन्तर नाम में रुचि, आस्था एवं भाव रखें।

८. 'रसीली ब्रज यात्रा' भाग– १ के अध्याय 'धामोपासना' के अनुसार यात्रा में तीन बार स्नान का नियम है। पवित्र कुण्डों में यथा शक्ति स्नान करें। यदि समयाभाव के कारण ऐसा न हो सके तो ब्रज की रज में लोट लगायें। यह आचार्यों की आज्ञा है। उत्तम यह है कि उस ब्रज रज में

लोटे जहाँ भक्तों ने नृत्य किया हो।

९. स्त्रियों का मासिकधर्म यात्रा में व्यवधान नहीं है। ब्रज की रज में लोटें और भगवन्नाम मे निरन्तर मग्न रहें। भगवन्नाम ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, म्लेच्छ, श्वपच, चाण्डाल और नीच से भी नीच प्राणी को सुलभ है तथा इसमें कोई रोक टोक नहीं है।

१०. श्रीनारायणभट्टजी कृत ग्रन्थ ब्रज भक्ति विलास में ब्रज की लीला स्थलियों, मन्दिरों, कुण्डों, पर्वतों एवं ऋषि स्थलों के प्रार्थना, आचमन एवं दर्शन मन्त्रों का उल्लेख है। ये सब जाग्रत मन्त्र हैं और इनका चमत्कार प्रत्यक्ष गोचर है।

महीभानुसुतायैव कीर्तिदायै नमो नमः।
सर्वदा गोकुले वृद्धिं प्रयच्छ मम कांक्षितां॥

(ब्र.भ.वि)

पूज्य बाबा महाराज बरसाने में यह मन्त्र बुलवाते हैं और उसका चमत्कार यह है कि आज माताजी गौशाला में ४५,००० गौ हैं। इसलिये श्रद्धा पूर्वक भावनाओं से संयुक्त हो इन मन्त्रों का आह्वान ग्रन्थानुसार तत्–तत् लीला स्थलों पर पहुँच कर करें।

११.उपरोक्त बाह्य नियमों के पालन का औचित्य तभी है जब अंतर्नियमों का पालन भी हो रहा हो। जैसे जीव तीन बार स्नान तो कर रहा है परन्तु नेत्रों से विषयों को भी ग्रहण कर रहा है। इस मिथ्या आचरण से बचें। हम प्रभु को धोखा नहीं दे सकते।

ब्रजयात्रा एक महायज्ञ है जिसमें भगवन्नाम की बहुलता है। इस नाम से जन्म जन्मांतरों के पाप कटते हैं। उस अनन्त को प्राप्त करने के लिये एक जीव क्या साधन कर सकता है? जीव भगवन्नाम ले सके यह सिर्फ महापुरुषों की महती कृपा से ही प्राप्त होता है। अतः इस यात्रा का सम्पूर्ण आनन्द लें और सुधि पाठकगण दत्तचित्त होकर 'रसीली ब्रज यात्रा' को पढ़ें व अधिकाधिक लीला लाभ प्राप्त करें।

ब्रज रज–माहात्म्य

श्रीआद्य शंकराचार्यजी की ब्रजरज–निष्ठा

शंकरावतार आद्य शंकराचार्य जी ने जिस समय भारत भूमि में भक्ति की पुनीत मंदाकिनी प्रवाहित की, जिससे जन–जन का मानस पंकज आप्लावित हो गया। आपके कृष्ण भक्ति प्रचार–प्रसार के विषय में भक्तमाल जी के प्रणयन कर्ता श्री नाभा जी महाराज कहते हैं – **"कलियुगधर्म पालक प्रगट आचारज शंकर सुभट"** एवं भक्तमाल जी के प्रसिद्ध टीकाकार श्रीप्रिया दास जी का कथन है **"विमुख समूह लैके किये सनमुख स्याम अति अभिराम लीला जग विसतारी है।"**

अपने सुदिव्य प्रभाव से भगवद् विमुखों को हरि भक्त (वैष्णव) बना दिया। नास्तिक वाद का खंडन करके कृष्ण लीला का विस्तार किया। आपके द्वारा रचित **"भज गोविन्दं भज गोविन्दं"** (चर्पट पंजरिका) मोहमुद्गर में तो आद्य शंकराचार्य जी ने ब्रजराज श्रीकृष्ण की भक्ति का प्रतिपादन करते हुए कृष्ण भक्ति की शिक्षा पर विशेष प्रकाश डाला एवं "प्रबोध सुधाकर" नामक ग्रन्थ में तो आपने स्पष्ट रूप से परतत्व के रूप में साक्षात् श्रीकृष्ण की ही महिमा का निरूपण किया है –

यद्यपि साकारोप्यं तथैकदेशी विभाति यदुनाथः।
सर्वगतः सर्वात्मा तथाप्ययं सच्चिदानन्दः॥

(प्रबोध सुधाकर)

भारत अटन करते हुए जब आप शिष्यों सहित ब्रजभूमि के निकट आये तो एक विलक्षण नियमोल्लङ्घन आपने किया। यात्राकाल में जहाँ भी आचार्य पाद विराजते, आसीन होने के पूर्व सेवक शिष्यों द्वारा उतना भूमि भाग खोदा जाता, लीपा जाता, जल से सिंचित किया जाता, रज शुद्धि की दृष्टि से किन्तु जब ब्रज देश की ओर बढ़े तो आद्याचार्य ने भूमि–खनन निषेध कर दिया। शिष्य समाज विस्मयान्वित था, गुरुदेव को क्या हो गया है? चलो भूमि खनन नहीं तो भूमि मार्जन तो कर दें। परिमार्जित भूमि पर आसीन हो गये। ब्रज के और निकट पहुँचे तो भूमि–मार्जन भी निषेध कर दिया, जल सिंचित भूमि पर बैठ जाते। ब्रज की पावन अवनि में जब प्रवेश हुआ तो रसमय ब्रह्म के नवीन फेन से फेनिल हो उठा हृत्पटल,"अब जल सिंचन की भी आवश्यकता नहीं है" कहकर चारों ओर ब्रज रज में लोटपोट होने लगे।

शिष्य वृन्द– ''गुरुदेव ! आप यह क्या कर रहे हैं?'' शिष्यों के पूछने पर कृष्ण भाव–भावित यति की वाणी मुखरित हो उठी एवं उत्तर रूप में बहुत सुन्दर गोविन्दाष्टक गाया।

गोष्ठप्राङ्गणरिङ्गणलोलमनायासं परमायासम्।

(गोविन्दाष्टकम्)

''अरे, ब्रह्मचरणकंज की किंजल्क कणिका से अभिषिक्त यह शुचितम ब्रजरज सुरेन्द्राद्यभिलषित है।'' (देवता भी जिसे चाहते हैं।

श्रीमद्वल्लभाचार्य जी का ब्रजभूमि–प्रेम

चौरासी वैष्णव वार्ता जी में पुष्टि सिद्धान्ताचार्य "श्रीमद् वल्लभ महाप्रभुजी" ने भी यही मत सुस्पष्ट प्रकट किया।

एक समय आचार्यपाद ब्रज में पधारे, साथ में भगवदीय प्रभुदास जलोटा थे। श्री गोवर्धन में आकर गोपाल लाल को स्थल भोग लगाया एवं प्रभुदास जी को आज्ञा की– ''यह प्रसाद आप पा लो।" प्रभुदास जी बोले– "जै जै! मैंने स्नान नहीं किया है।''

सुनकर आचार्य पाद सस्मित मुख बोले–

वृक्षे वृक्षे वेणुधारी पत्रे पत्रे चतुर्भुजः।
यत्र वृन्दावन तत्र लक्ष्यालक्ष्यकथा कुतः,
जलादपि रजः पुण्यं रजसोऽपि जलं वरम्।
यत्र वृन्दावनं तत्र स्नात्वास्नात्वाकथा कुतः॥

(चौरासी वैष्णव वार्ता)

ब्रज स्वरूप लोचन गोचर कराया– ''प्रभुदास! देखो यहाँ वृक्ष–वृक्ष पर वेणुधारी विराजमान हैं एवं प्रत्येक पत्र पर चतुर्भुज (ऐश्वर्यमय दर्शन) वृन्दावन में ग्राह्य–त्याज्य ही निषिद्ध है, जल से रज श्रेष्ठ है और रज से जल। अतः यहाँ स्नान–अस्नान विचारणीय नहीं है, लो यह प्रभु प्रसाद ग्रहण करो।" आचार्यपाद ने बिना स्नान किये ही प्रभुदास जलोटा को प्रसाद पाने की आज्ञा दी

तावङ्घ्रियुग्ममनुकृष्य सरीसृपन्तौ घोषप्रघोषरुचिरं व्रजकर्दमेषु।
तन्नादहृष्टमनसावनुसृत्य लोकं मुग्धप्रभीतवदुपेयतुरन्ति मात्रोः॥

(भागवत १०/८/२२)

इस रज में परब्रह्म मैया द्वारा स्नान कराने पर भी लुटलुटी लगाता है फिर अन्य कोई कर्मकाण्ड विचार की कहाँ आवश्यकता?

विदुरजी की ब्रजयात्रा

पुरेष्वितिमथुरादिनगरेषु परमेश्वरक्रीडास्थानत्वात्
गोकुलनिकट वृन्दावनायुपवनानिअद्रिर्गोवर्द्धनादिः कुंजा
मलतागृहाःसर्वाण्येतानि भगवत्संबंधात्पुण्यजनकान्यपि
भक्तिजनकानिअपंकतोयेष्विति
कृष्णजलक्रीड़ादियोग्येषुसरितांसरस्सुकालीयादिहृदेषुपर्यटने
निमित्तमनंतमूर्तेरासादिक्रीडनचिन्हैःसम्यगलं
तेषुजलस्थलप्रधानेष्वे–काकीचरतिस्मेत्यर्थः॥

(भागवत ३/१/१८.सुबोधिनी)

आनन्दकन्द परमानन्द ब्रजेन्द्रनन्दन की नित्य लीला भूमि के मथुरादि नगर, वृन्दावनादि पुण्योपवन, गोवर्धनादि पर्वत, गह्वरादि कुञ्ज (जोकि श्रीजी–ठाकुरजी की मिलन स्थली है) श्री कृष्ण के यमुनादि जल क्रीड़ास्थल के सेवन से पुण्योपलब्धि के साथ भगवद्भक्ति की भी प्राप्ति होती है। अन्य तीर्थ पुण्य प्रदान करने वाले हैं किन्तु ब्रजधाम ठाकुर जी से नित्य सम्बद्ध होने के कारण पुण्य जनक तो है ही, भक्तिजनक भी है। इन सभी ब्रज तीर्थों में विदुरजी ने भ्रमण किया। अनन्तर, अपंकतोय जहाँ सुन्दर जल है

तन्मञ्जुघोषालिमृगद्विजाकुलंमहन्मनःप्रख्यपयःसरस्वता।
वातेन जुष्टं शतपत्रगन्धिना निरीक्ष्य रन्तुं भगवान् मनो दधे॥

(भागवत १०/१५/३)

जिस प्रकार महात्माओं का मन निर्मल होता है, उसी प्रकार सब सरोवरों का जल निर्मल है, जिसे देखकर प्रभु प्रसन्न हो रहे हैं।

कालिय हृदादि ये सब ठाकुर जी की जल क्रीड़ा के योग्य स्थान हैं। ठाकुर जी की रासादि क्रीड़ाओं से अलंकृत चरण चिन्ह पहाड़ी पर हैं।

श्रीनिकेतैस्तत्पदकैर्विस्मर्तुं नैव शक्नुमः

(भागवत १०/४७/५०)

ब्रज का कण–कण श्री कृष्ण चरणों से चिन्हित है, इन सभी स्थलों पर कुरुश्रेष्ठ विदुर जी ने रमण किया।

तीर्थों के दो प्रकार बताये

१. जल प्रधान

२. स्थल प्रधान।

जल प्रधान यमुना जी ...आदि। स्थल प्रधान वृन्दावन, बरसाना ... आदि। सर्वत्र विदुरजी ने अन्तर्बाह्यनियम ग्रहण कर उनका निर्वहन कर एकाकी अटन किया।

यात्रा कैसे करें?

अनन्य होकर यात्रा करें।

अनन्य से तात्पर्य ''अनन्यः सर्वत्र श्री कृष्णैकदृष्टि''

दोषदृष्टि से तटस्थ हो सर्वत्र कृष्णैकदृष्टि रखें। अन्तःकरण को निर्मल करने वाले व्रतों का आधार लें। श्री ठाकुर जी के लिए विरह भाव को हृदय में स्थापित करके अन्वेषण के निमित्त कृष्णदर्शन की लालसा से पर्यटन करें। कृष्ण प्राप्ति ही एकमात्र लक्ष्य करके कभी गोकुल गमन करें, कभी वृन्दावन तो कभी बरसाना आदि तीर्थों में। कभी एकान्त स्थान में ध्यान करें,ध्यान से तात्पर्य भगवद् सेवा, स्मरण, कीर्तन, जप, पाठ आदि का आचरण। एक बार मेद्य (पवित्र) भोजन करें। त्रैकालिक स्नान करें, भूशयन करें।

अभ्यंग शरीर का श्रृंगार, तेल लगाना, मालिशादि करना ये सब वर्जित है। यहाँ तीन गुण, तीन दोषों के निवारक हैं।

१. त्रैकालिक स्नान से अपावित्र्य की निवृत्ति।

२. मेद्याहार से प्रमाद की निवृत्ति ।

३. श्रृंगार न करने से देहाध्यास की निवृत्ति।

४. तीर्थाटन के उपयुक्त अवधूत वेषधारण करें।

प्रभु को जिनसे संतोष प्राप्त हो, ऐसे ४ व्रतों का पालन करें

१. एकादशी उपवास तथा अन्य जो वैष्णव व्रत हैं।

२. सर्वभूतदया प्राणीमात्र पर दया।

३. यथालाभ संतोष।

४. सर्वेन्द्रिय संयम।

ये समस्त व्रत भगवद् तोष के हेतुभूत हैं। अतः इन व्रतों का आचरण किया जाय। यात्रा में सत्संग, उपासना (नामसंकीर्तन) परमावश्यक हैं। सभी नियम, सभी कर्म प्रभु के निमित्त ही सत्कर्म या सद्धर्म बनते हैं।

यात्रा के चमत्कार

अन्तर्राष्ट्रीय कथा व्यास डॉ. श्री रामजीलाल शास्त्री (मान मन्दिर, बरसाना)

ब्रज की निधि पूज्य रमेश बाबा द्वारा संचालित श्रीराधारानी ब्रजयात्रा एवं उसकी चमत्कारपूर्ण घटनाएँ व अनुभूतियाँ –

श्रीबलदेव प्रसाद शुक्ल जिन्हें शुक्ल भगवान् कहकर सम्मानित किया जाता था, उनकी तपस्या के फलस्वरूप रामेश्वर भगवान् की कृपा से उन्हें सन् १९३७ में बहादुरगंज इलाहाबाद में एक पुत्ररत्न की प्राप्ति हुई, जिसका नाम रामेश्वर प्रसाद शुक्ल रखा गया, प्रारम्भ से विश्वविद्यालय तक की शिक्षा इसी नाम से हुई। घर में लाड़–प्यार में इनको 'रमेश' नाम से पुकारा जाता था। सन् १९५४ में इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की, इसी बीच में 'प्रयाग संगीत समिति' से प्रभाकर की परीक्षा में टॉप किया यानि सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। सन् १९५४ से श्रीबाबामहाराज ब्रज में आ गए और गह्वरवन, बरसाना स्थित मानगढ़, मानमंदिर में जो पहले खण्डहर और डाकुओं का अड्डा था, जहाँ लोग दिन में जाने में भी डरते थे, वहाँ रहने लगे। जब से बाबा श्री ब्रज में आए तब से आज तक ब्रज के बाहर नहीं गये।

१९८८ में खण्डार तहसील जिला सवाई माधोपुर राजस्थान के प्रसिद्ध संत नित्यानंद जी महाराज, जिन्होंने अपना सारा जीवन अपने सेवकों के साथ नाम–प्रचार में लगा दिया, उन्होंने पूज्य बाबा महाराज से प्रार्थना किया कि आप ब्रज के बाहर नहीं जाते हैं, हमलोगों को ब्रज ८४ कोस की यात्रा करा दीजिये। पूज्य महाराज जी राजी हो गए इस शर्त पर कि किसी भी यात्री से शुल्क नहीं लिया जाएगा, यह यात्रा पूर्णत: नि:शुल्क होगी। अपनी इच्छा से श्रद्धापूर्वक कोई भी जो कुछ भी सेवा करना चाहेगा, वह सेवा स्वीकार कर ली जायेगी। मई–जून में यात्रा प्रारम्भ कर दी गई। साधन कुछ भी नहीं थे, ११ बोरी सत्तू पिसा लिया गया था। भोजन पड़ाव पर ही बना लिया जाता था। उस समय मात्र २५० यात्री थे। रात्रि में तीन बजे से यात्रा प्रारम्भ हो जाती थी और प्रात: सूर्योदय होने के बाद लगभग नौ बजे तक दूसरे पड़ाव पर पहुँच जाती थी, उसके बाद स्नान आदि नित्य क्रिया होती थी। श्रीनित्यानंदजीमहाराज की भक्त मण्डली रसोई बनाती थी। मानमंदिर के भक्तगण तन्मयता के साथ कीर्तन करते थे। यात्रा में २४ घंटे कीर्तन चलता रहता था।

आगरा के एक भक्त धनीराम शर्मा ने पूज्य महाराज जी से निवेदन किया कि कुछ भक्त यात्रा में आर्थिक सेवा करना चाहते हैं यदि उनका नाम बोल दिया जाय तो उनका भी मनोबल बढ़ेगा और अन्य लोगों को सेवा के लिए प्रेरणा मिलेगी और हमारी यात्रा का खर्च सहज में ही पूरा हो जाएगा परन्तु महाराजजी ने यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया यह कहकर कि गरीब आदमी जो मात्र ५रु. या ११रु. भेंट करते हैं उन्हें भोजन करने में कितना संकोच होगा, वे सोचेंगे कि कुछ अर्थदाताओं ने १ हजार या ५ हजार दिया है और हमने मात्र ५ या ११ रु. दिए हैं। उनके मन में पीड़ा होगी इसलिए हमें वह धन स्वीकार नहीं है। हम एक समय खिचड़ी खा लेंगे, भोजन एक ही समय कर लेंगे, लेकिन हमें वह सेवा नहीं चाहिए जिसमें अपने नाम की कामना हो। हमें यज्ञ राजस या तामस नहीं बनाना है। ऐसे लोगों से कह दो कि वे केवल यात्रा करें, सेवा वहाँ कर दें जहाँ उनका नाम हो।

इसलिए '**श्रीराधारानी ब्रजयात्रा**' बहुत ही सात्विक यात्रा है, जिसमें अनेकों चमत्कार होते आ रहे हैं, उनमें से कुछ चमत्कार यहाँ वर्णित किये गए हैं।

१. डॉ.जगदीश लवानियाँ जो आबूधाबी में थे, उनके माता–पिता ने यात्रा की थी। वे वैद्य थे और यात्रा में बीमार यात्रियों की मलहम पट्टी व औषधि की व्यवस्था करते थे, वृद्ध थे, नंगे पाँव नहीं चल पाते थे। महाराज ने उन्हें जूते पहन कर चलने की अनुमति दे दी थी। महाराज जी ऊँचा गाँव में पर्वत पर कुछ चिन्ह दिखा रहे थे। इसी बीच उनके जूते में लगी छोटी कील (चोबा) का कहीं पारस से स्पर्श हो गया और वह सोने की बन गयी। इसके २–३ दिन बाद जब कील उनके पाँव में चुभने लगी तो उन्होंने उसे निकाला, पीले रंग की कील देखकर वह हैरान हुए, उसे घर जाकर स्टोव से तपाया तो वह चमकने लगी, मालूम पड़ा कि वह सोने की थी। जूते में सोने की कील कैसे ? यह समझ में आया कि उसका स्पर्श कहीं पारस से हो गया था इसलिए वह सोने की बन गयी थी। शास्त्रों के अनुसार ब्रजभूमि दिव्य रत्नों,पारसमणि और चिन्तामणि से निर्मित है। ब्रज में आज भी ये मणियाँ है परन्तु हमें पहचान नही है।

२. एक बार दाऊ जी से यात्रा चली थी तो एक वृद्ध माता को रास्ते में उल्टी दस्त होने लगे, हैजे की सी स्थिति थी। उसे समीप के एक गाँव में छोड़ दिया गया यह कहकर कि पड़ाव पर पहुँच कर किसी वाहन से ले जायेंगे। ग्रामवासियों ने उसे बड़े प्रेम से रख लिया और कहा कि हम अच्छी तरह इनकी देखभाल करेंगे, आप कोई चिंता न करें। होनहार की बात कि २ घंटे बाद वह वृद्ध माता मर

गई। ४–५ व्यक्ति उसे चारपाई पर डालकर यात्रा में ले आये। गर्गाचार्य जी के स्थान गिड़ाया गाँव पार कर हम लोग यमुना पार करके गए ही थे कि उन्होंने जोर से चिल्लाकर कहा– बाबा, वो बुढ़िया मर गयी। यात्रा रुक गई। उस बुढ़िया के गाँव के ११ आदमी यात्रा में थे, २ आदमी तुरंत अपने गाँव सैन्वे चले गए यह पूछने कि उसका अन्तिम संस्कार यात्रा में करें या गांव लाकर करें। उन दिनों फोन–मोबाइल आदि की व्यवस्था नहीं थी। पूज्य महाराज जी ने यात्रियों से कहा–देखो भाई! इस वृद्धा के प्रति सच्ची सहानुभूति, श्रद्धांजलि व सेवा यही है कि उनके निमित्त कीर्तन किया जाये। श्रीबाबा के कहने पर सभी ने बड़ी धूम धाम से नाचते–गाते हुए कीर्तन किया। कीर्तन का नेतृत्त्व स्वयं श्रीबाबा ने किया, उसका परिणाम यह हुआ कि वह बुढ़िया जीवित हो गयी, उसने आँखें खोली, मुंह खोला, उसमें कुछ पानी डाला गया, धीरे–धीरे उसकी चेतना बढ़ती गयी तो उसे पास में महावन डिस्पेंसरी में ले जाया गया। वहाँ डॉक्टरों ने उसे कुछ बोतल चढ़ाई, शाम को उसके गाँव के लोग उसे ले जाने के लिए ट्रैक्टर ले कर आ गए। उसके जीवित होने का समाचार पाकर उन्हें बड़ी प्रसन्नता हुई और वे लोग उसे अपने गाँव ले गए। उसके बाद वह बुढ़िया १७ साल तक जीवित रही।

३. तीसरा चमत्कार केदारनाथ में हुआ। रात में चोरों ने भोजन बनाने के बर्तन गौरी कुण्ड में पटक दिए कि जब यात्रा चली जायेगी तब हम ले जायेंगे। प्रात:काल होने पर जब रसोइया बर्तनों को सँभालने लगे तो देखा कि बर्तन नहीं थे। कोई व्यक्ति नहाने को कुण्ड में गया, जब नीचे गहरे पानी में गया तो एक बर्तन पाँव के नीचे आ गया। खोजने पर सब बर्तन मिल गए।

४. चौथा चमत्कार वृन्दावन में हुआ। यात्रा राम जिवाई आश्रम में ठहरी हुयी थी। यात्रा में कैश व्यवस्था का काम दिल्ली के मित्तल सेठ संभाले थे। वह बोले–अब सब पैसे खतम हो गए हैं। कोई दूसरा व्यक्ति हिसाब सम्भाले, मैं यह सेवा नहीं कर सकता। पूज्य महाराज जी ने उनसे कहा–धैर्य रखो, सब कार्य राधारानी करेंगी। यह उन्ही की यात्रा है, हम लोग कुछ नहीं हैं। वह बोले– महाराज, मैं ये नहीं मानता, मुझे तो पैसा चाहिए इंतजाम करने को। इस घटना के २–३ घंटे बाद एक भक्त आए और उन्होंने बीस हजार रुपये का चेक पूज्य महाराज को अर्पित किया और उन्होंने वह चेक मित्तल साहब को व्यवस्था सँभालने के लिए दे दिया।

दूसरी यात्रा १९९१ में गर्मियों के मई–जून में हुयी थी। पिसाया में अश्वत्थामा जी की वनी है, उसमें आज भी यह चमत्कार है कि अगर कोई भी व्यक्ति अनजाने में भी वहाँ से लकड़ी ले जाए तो उसका अनिष्ट निश्चित रूप से होता है – 'या तो उसके घर में गाय–भैंस आदि किसी भी पशु की या परिवारी जन की मृत्यु हो जाती है।' इस भय से कोई भी व्यक्ति उस वनी से लकड़ी तोड़ता नहीं है। उस वनी में श्रीराधारानी ब्रजयात्रा रुकी थी। घना जंगल था, बाहर कोई यात्रा के लिए लाईट का भी प्रबंध नहीं था। इधर ७–८ डाकू यात्रा को लूटने के उद्देश्य से बन्दूक के साथ उस वनी में आ गए। राजस्थान में सवाई माधोपुर जिले की खण्डार तहसील का एक आदमी जिसका मानसिक संतुलन ठीक नहीं था, पागल जैसी स्थिति थी, वह उन बदमाशों के पास गया और बोला – तुमने बाबा को दण्डवत नहीं की, चलो बाबा को दण्डवत करके आओ, जोर–जोर से बातें होने लगी तो जनता जाग गई। वे चोर लोग भी महाराज को दण्डवत करके वापिस चले गए। किसी के साथ कोई घटना नहीं हुई। यात्रा में न कोई पुलिस का इंतजाम था, न कोई शस्त्र ही थे। केवल भगवान् के नाम के सहारे से ही यह यात्रा चलती है। यात्रा में आने वाली सारी बाधाएं इसी नाम संकीर्तन के प्रभाव से दूर हो जाती हैं। इस वनी में रात्रि में रहकर नाम संकीर्तन किया जाय अथवा कोई अनुष्ठान किया जाये तो अश्वत्थामाजी की कृपा से उसे आरोग्य की प्राप्ति होती है, कोढ़ आदि भयानक बीमारी भी दूर हो जाती हैं।

पूर्व में प्राय: प्रत्येक तीसरे वर्ष अधिक मास में यात्रा हुआ करती थी। एक बार कुछ अमेरिका के भक्तों ने यात्रा में सम्मिलित होने की इच्छा व्यक्त की परन्तु कहा कि हम गर्मी में यात्रा नहीं कर सकते हैं, उन लोगों की वजह से १९९३ में अक्टूबर में दीवाली के अवसर पर ३० दिन की यात्रा रखी गयी, वह यात्रा भी अविस्मणीय रही। अमेरिका से ज्योति नानवती, हेमा मोदी व सुभाष पुरी आदि तीन व्यक्ति प्रमुख यात्री थे। ज्योति ने यात्रा में जो सेवा की उसकी आज भी लोग याद करते हैं। यात्रियों के यात्रा से आने के बाद वह उनके चरणों को गर्म पानी से धोती और रात्रि में सोने से पहले यात्रियों के चरणों में वैसलीन लगाती थी।

एक बार यात्रा शेषशायी में रुकी थी। शिवचन्दी नाम का एक यात्री जिसे रात्रि में धुंधला दिखाई देता था,वह रात्रि में लघुशंका के लिए गया तो कुएँ में गिर गया। कुएँ में गिरने की आवाज होने पर लोग दौड़े और उसे बाहर निकाला गया। कोई चोट तो क्या उसके शरीर में कोई खरोंच भी नहीं आयी। उसने बताया कि मुझे तो हनुमान जी ने गोद में ले लिया था। वह हनुमान जी का भक्त था।

१९९५ में यात्रा अप्रैल मई में रखी गयी परन्तु वह समय भी अनुकूल नहीं रहा क्योंकि किसानों के लिए फसल का समय है।

१९९५ में जब यात्रा अप्रैल मई में रखी गई थी तो पंजाब के

महात्मा कृष्णानन्द जी ने पूज्य महाराज जी से आग्रह किया कि यह यात्रा तो प्रतिवर्ष उठनी चाहिए जब सारा इन्तजाम श्री जी करती हैं तो आप लोग क्यों चिंता करते हैं। भोजन के लिए राशन के ट्रक और कम्बलों के ट्रक (यात्रियों के लिए) हम पंजाब से भिजवा दिया करेंगे। पूज्य महाराज जी ने स्वीकृति दे दी। हमने इसका विरोध किया था क्योंकि हम लोग जो प्रबंध में रहते थे, प्राय: अध्यापक थे और हमें इतनी लम्बी छुट्टियां प्रतिवर्ष मिलना कठिन था। पूज्य महाराज जी ने स्वीकार कर लिया। यात्रा का समय शरद पूर्णिमा से दो दिन पहले यानि आश्विन मास शुक्ल पक्ष त्रयोदशी रख दिया गया। मजे की बात यह रही कि कृष्णानन्द जी महाराज जिन्होंने प्रति वर्ष यात्रा उठाने का इतना आग्रह किया था और राशन–कम्बल आदि भेजने की जिम्मेदारी ली थी, उनके यात्रा में दर्शन ही नहीं हुए, वह आए ही नहीं।

वास्तव में ये राधारानी यात्रा श्रीजी की है, उन्हीं की कृपा से इसका संचालन होता है। पूज्य महाराज जी कहते हैं कि किसी भी यात्री को लौटाओ नहीं। ये भाव रखो कि यात्री साक्षात् श्रीकृष्ण हैं। इस भाव से सेवा करो। किसी यात्री को झिड़को नहीं। इस यात्रा का नाम है **श्रीराधारानी ब्रजयात्रा**, वे ही इसकी संचालिका हैं। महाराजजी कहते हैं कि हमारा नाम कभी यात्रा में मत रखना। हमारा नाम रखोगे तो फिर वो चमत्कार नहीं होंगे।

पूज्य महाराज जी कहते हैं कि भगवान् की वाणी कभी असत्य नहीं होती है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता में कहा है–

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जना: पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥

(श्रीमद्भगवद्गीता ९/२२)

जो अनन्य रूप से मेरा चिंतन करते हैं, उपासना करते हैं, उनके योगक्षेम का वहन मैं स्वयं करता हूँ। आज यात्रा में १५–१६ हजार यात्री प्रतिवर्ष चलते हैं। करोड़ों रूपये खर्च हो जाते हैं। हम लोगों की क्या सामर्थ्य है जो इतना खर्च कर सकें परन्तु श्री राधारानी करने वाली हैं– सब व्यवस्था। इसलिए कभी कोई कमी नहीं आती है। ऐसा कोई वर्ष नहीं होता जो यात्रा में चमत्कार न हों कृपा की अनुभूति न हो।

एक वृद्ध माता यात्रा करने आई थीं, वह रोजाना पूज्य महाराज जी से प्रात: आरती के बाद लगभग ५ बजे लौंग लेने आया करती थीं। एक बार यात्रा रमणरेती में रुकी थी। वल्लभगढ़ से उनके घर वाले जिनका मेडीकल स्टोर था, उसे लेने आ गए थे यद्यपि वह कुछ बीमार भी थी परन्तु यात्रा छोड़ कर जाना नहीं चाहती थी। उसी रात में लगभग २ बजे उस बुढ़िया की मृत्यु हो गयी परन्तु आश्चर्य की बात यह हुई कि अगले दिन नित्य की भांति वह महाराज जी के पास आरती के बाद सबेरे गई किन्तु बोली कुछ नहीं और लौंग के लिए हाथ फैला दिया। महाराज जी बोले – अरे भाई, इसे लौंग दे दो। उसने लौंग लिया और चली गयी।अगले पड़ाव पर सूर्यास्त के बाद नित्य की भांति जब सत्संग हुआ तो लोगों ने महाराज जी को बताया कि कल रात को लगभग २ बजे उस बुढ़िया का देहांत हो गया। पूज्य महाराज जी ने कहा कि हम कैसे मानें, वह तो नित्य की भांति आज हमारे पास आरती के बाद सुबह ६ बजे लौंग लेने आई थी और हमने एक संत को उसे लौंग देने को कहा था और वह लेकर चली गयी परन्तु बोली कुछ नहीं थी लेकिन आज वह अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक देर तक खड़ी हुई मुझे बहुत देर तक देखती रही।

लगभग दो वर्ष पूर्व की घटना है, बंगाल के दो यात्री जो बड़े गरीब थे, फटा हुआ वस्त्र घुटनों तक पहने थे, एक बनियान थी, वे मान मन्दिर में प्रात: सत्संग के बाद पूज्य महाराज जी के पास गए, उनके चरणों में प्रणाम किया और बोले– बाबा! हम यात्रा करना चाहते हैं। महाराज जी ने उनसे कहा – यात्रा करो, तुम्हें रोकता कौन है? उन्होंने कहा– बाबा, हमारे पास टका (पैसा) नहीं है। महाराज जी बोले कि हमारे यहाँ यात्रा का कोई शुल्क नही हैं। ऐसा सुनकर उन दोनों ने एक–एक रुपया और एक–एक नारियल भेंट किया। महाराज जी अपने सेवक (एक सन्त) से बोले कि इसे संभालकर रख लो, इनका एक रुपया एक लाख के बराबर है। अगले ही दिन एक चमत्कार हुआ, पंद्रह–सोलह वर्ष की एक बालिका उसी समय सत्संग के बाद पूज्य महाराज जी के कमरे में पहुँची। उस समय वहाँ पंद्रह बीस लोग बैठे थे। उसने महाराज जी को प्रणाम करते हुए कहा– बाबा! यात्रा में चलने की तो मेरी भी इच्छा थी किन्तु मैं चल नही पा रही हूँ। मेरी माँ ने मुझे भेजा है और कहा है कि यह धनराशि बाबा को दे आना। ऐसा कहकर उसने एक–एक लाख की हजार नोट वाली दो गड्डियां श्रीबाबा के सामने रखीं। महाराज जी को वही कल वाली एक रुपये वाली बात याद आ गयी कि ये एक रुपया नहीं, एक लाख के बराबर है। महाराज जी ने उससे पूछा–लाली! तेरा नाम क्या है? वह बोली– बाबा! मेरा नाम राधिका है। अब मैं जा रही हूँ, माँ मेरा इन्तजार कर रही होगी, ऐसा कहकर वह कमरे से बाहर चली गयी। पूज्य महाराज जी ने सेवकों से कहा कि देखना यह कहाँ जा रही है? सेवकों ने बाहर जाकर देखा तो वह नीचे जीने तक गयी फिर एकदम गायब हो गयी। जीने में नीचे आसपास कहीं नहीं मिली, न जाने कहाँ अंतर्धान हो गयी।

मेरा यह विश्वास है कि छोटे–छोटे निर्मल बालक–बालिकाएं निश्छल–निष्काम आराधना करते हैं तो श्यामा–श्याम यात्रा में इन सबके साथ रहते हैं तभी तो यात्रा में इतना आनंद आता है। भगवान् की प्रतिज्ञा है

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च।
मद्भक्ता: यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद॥
(पद्मपुराण)

धामी भगवान् से ज्यादा महत्व भगवान् के धाम का होता है। जो अपराध भगवान् स्वयं दूर नहीं कर पाते वह अपराध उनके धाम की सेवा से,धाम की परिक्रमा करने से दूर हो जाता है। मोहवश ब्रह्माजी से अपराध हुआ, वह गोवत्स व वत्सपालों को चुरा ले गए। श्री कृष्ण ने उतने ही रूप बना लिए, जितने ग्वाल और बछड़े थे। एक वर्ष बाद ब्रह्मा जी ने आकर देखा तो वहाँ तो वैसे ही बछड़े और ग्वाल हैं। ब्रह्मलोक में देखा तो वहाँ भी वैसे ही पाए, तो उन्हें भ्रम हुआ कि असली ये हैं या वे हैं। पहिचान मिलाने गए तो ठाकुर जी ने एक और लीला कर दी। ब्रह्मा का रूप बनाकर ब्रह्मलोक में पहुंचे और पहरेदारों से बोले कि मेरे हुक्म के बिना कोई अन्दर नही आना चाहिए। यहाँ अनेकों नकली ब्रह्मा मेरा रूप बनाए घूमते रहते हैं। जब ब्रह्माजी ही भगवान् की लीला नहीं समझ पाए तो बेचारे द्वारपाल क्या समझेंगे, वे बोले– सरकार! बिना आपकी आज्ञा के किसी को यहाँ अन्दर नहीं आने दिया जाएगा। अब इधर असली ब्रह्माजी ब्रह्मलोक में आए तो जो द्वारपाल ब्रह्माजी को देखकर खड़े हो जाते थे, जय–जयकार करते थे, वे आज ब्रह्मा जी को धक्का देकर निकाल रहे हैं और बोले कि तुम्हारे जैसे बहुरुपिया बहुत घूमते हैं। सरकार का आदेश नहीं है अन्दर जाने का।

कृष्ण भरोसौ छोड़ि के करै भरोसौ और।
सुख सम्पत्ति की कहा कहों वाको नरकहु नाहीं ठौर॥

ब्रह्माजी समझ गए कि प्रभु के अलावा हमारे लोक में जाने की किसी की सामर्थ्य नहीं है, फिर तो उन्होंने बहुत स्तुति की, अपने को धिक्कारा कि मैंने आप पर अपनी माया का प्रयोग किया, प्रभो! मेरे अपराध को आप क्षमा करें। जैसे –उदरस्थ शिशु के लात मारने को माँ अपराध नहीं मानती है बल्कि प्रसन्न होती है, उसी प्रकार मैं भी आपका उदरस्थ शिशु हूँ क्योंकि आपके नाभिकमल से ही उत्पन्न हुआ हूँ। अंत में ब्रह्मा जी ने ब्रजवासियों के सौभाग्य की प्रशंसा करते हुए कहा –

अहो भाग्यमहो भाग्यं नन्दगोपव्रजौकसाम्।
यन्मित्रं परमानन्दं पूर्णं ब्रह्मसनातनम्॥

(श्रीमद्भागवत १०/१४/३२)

ये ब्रजवासी धन्य हैं जिनके मित्र परब्रह्म परमेश्वर श्री कृष्ण हैं, जो कभी इनके कंधे पर चढ़ते हैं तो कभी वे इनके कंधे पर चढ़ते हैं। हम भले ही ब्रह्मा बन गये परन्तु हमारा ऐसा सौभाग्य नहीं है।

हे प्रभो! आप ऐसी कृपा करें कि इस ब्रजभूमि में आप हमें कंकड़–पत्थर, लता–पता, घास–औषधि, वृक्ष आदि कुछ भी बना दें ताकि इन ब्रजवासियों की चरणरज हमारे मस्तक पर पड़े और हम कृतार्थ हो जाएँ।

ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार ब्रह्माजी यहाँ बरसाने में ब्रह्माचल पर्वत बने हैं। ब्रह्माजी के चार मुख हैं, इसी प्रकार इस पर्वत के भी ४ शिखर हैं– १.मानगढ़ २. दानगढ़ ३. भानुगढ़ ४. विलासगढ़ – जो ब्रह्माजी के मुख के प्रतीक हैं। नन्दगाँव में भगवान् शिव नन्दीश्वर पर्वत बने हैं। गोवर्धन में विष्णु भगवान् गिर्राज पर्वत बने हैं। इस प्रकार सृष्टि के सबसे बड़े देवता ब्रह्मा, विष्णु, महेश इस ब्रजभूमि में पर्वत बने हैं ताकि ब्रजवासियों की चरणरज हमारे मस्तक पर पड़ती रहे।

ब्रह्माजी ने बहुत स्तुति की परन्तु भगवान् बोले नहीं। अंत में ब्रह्माजी ने **'त्रि: परिक्रम्य'** तीन बार ब्रज ८४ कोस की परिक्रमा की, ब्रज की सेवा की तब श्रीकृष्ण प्रसन्न हुए। ब्रज की सेवा क्या है? ब्रज के पर्वतों का संरक्षण, ब्रज के कुण्ड–सरोवरों का जीर्णोद्धार, यमुनाजी की सुरक्षा, वनों का संरक्षण, ब्रज की गौओं की रक्षा व उनका पोषण (गौ–सेवा)। श्रीकृष्ण ब्रह्माजी का कष्ट निवारण नहीं कर सके परन्तु जब उन्होंने ब्रजधाम की सेवा की, परिक्रमा की, तभी उनके कष्ट का निवारण हुआ और तभी से ब्रजयात्रा का प्रचलन हुआ। धाम की परिक्रमा, सेवा करने से सभी प्रकार के अपराधों का शमन, निराकरण हो जाता है। इसीलिए हमारे पूज्य महाराज ने प्रतिवर्ष आश्विनी मास शुक्ल पक्ष त्रयोदशी से ८४ कोस की ब्रज यात्रा का प्रारम्भ किया है। यह यात्रा प्रतिवर्ष होगी, सबके लिए नि:शुल्क है। अनेकों यज्ञों का फल, दान–पुण्य, तपस्या आदि शुभ कर्मों का पुंज इस यात्रा के एक अंश के फल को नहीं पा सकता है क्योंकि इसमें हर समय भगवन्नाम–संकीर्तन होता है। प्रत्येक स्थल की महिमा को पूज्य श्रीबाबा महाराज बताते हैं। इस यात्रा में उन्हीं भाग्यशाली निष्काम लोगों का द्रव्य लगता है जिन्हें नाम की भूख नहीं है, हमारे मानबिहारीलाल उसी सात्विक भावनाओं के द्रव्य को स्वीकार करते हैं।

जो लोग किसी कारणवश यात्रा नहीं कर पाते हैं और अपनी सामर्थ्य के अनुसार अन्य यात्रियों के यात्रा करने में सहयोग करते हैं तो उन्हें उन यात्रियों के यात्रा करने का पुण्य सहज में ही प्राप्त हो जाता है। अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए स्वयं यात्रा

करते हुए भगवन्नाम लेते हुए अन्य सभी के प्रति सौहार्द्र एवं सहयोग की भावना रखें।

सन् १९९७ में यमुनाजी में बड़ी भयंकर बाढ़ आई थी। कलक्टर ने आस-पास के सब गाँव खाली करा दिए थे। उस समय 'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा' वृन्दावन में रुकी थी। लोगों ने महाराज जी से कहा कि महाराज! अब तो २-३ दिन यहाँ वृन्दावन में ही रुकना पड़ेगा क्योंकि यमुना पार इस समय नहीं जा सकते हैं। महाराजजी बोले - "ठीक है।" लेकिन अगले दिन जब यात्रा चलने का समय हुआ पूज्य महाराज जी चल दिये। केशीघाट से यमुना पार करके मांट और फिर भांडीरवन जाना था, लगभग सौ सवा सौ लोग यमुना पार जाने को स्टीमर में बैठ गये। कुछ लोग नावों से गए। एक विचित्र घटना यह हुई कि नदी के बीच जब स्टीमर पहुंचा तो उसका डीजल खत्म हो गया। पूज्य महाराज जी ने कहा अब एक ही उपाय है, तन्मयता से कीर्तन करो। सभी ने बड़े जोर से कीर्तन किया। स्टीमर का ड्राईवर दूसरे स्टीमर से डीजल लेने वृन्दावन चला गया। स्टीमर में बड़े आर्त भाव से सब लोग कीर्तन कर रहे थे। संयोग से स्टीमर एक झाड़ी में फँस गया और वहीं लगभग ४० मिनट खड़ा रहा, कुछ देर बाद ड्राइवर वृन्दावन पैट्रोल पम्प से डीजल लाया और स्टीमर में डाला तब स्टीमर चला। तब तक भगवन्नाम के प्रभाव से स्टीमर खड़ा रहा, नहीं तो सैकड़ों आदमियों की जान चली जाती। कीर्तन के प्रभाव से सब सुरक्षित रहे।

सन् २००५ की घटना है। एक बार यमुना जी में अचानक पानी बढ़ गया था। वृन्दावन से नावों की व्यवस्था हो नहीं पाई थी। सेई गाँव से यमुना पार करके भांडीरवन जाना था। अगले दिन बड़ी विचित्र लीला हुई। हम लोग सबेरे जब यमुना पार होने को थे, यमुना जी का पानी ३ फुट उतर गया और हमारी यात्रा बिना नाव के यमुना पार पैदल उतर गयी तथा उसी दिन शाम को फिर पानी बढ़कर ७-८ फीट हो गया। यह प्रभु की विशेष कृपा का चमत्कार सभी ने अनुभव किया।

एकबार राधारानी ब्रजयात्रा अपने अंतिम चरण में कामां का दो दिवसीय पड़ाव समाप्त करके बरसाना वापस लौट रही थी। उन दिनों डीग और कामाँ तहसील में पर्वतों का खनन चल रहा था। जब यात्रा सुदेवीसखी के गाँव सुनहरा पहुँची तो वहाँ एक संत यात्रा का स्वागत-सत्कार कर रहे थे। उन्होंने श्रीबाबा महाराज को व यात्रियों को स्वागत हेतु गाँव में एक तम्बू में निमंत्रित किया था, वहीं सभी को प्रसाद भी वितरित किया जा रहा था। उस समय राधारानी ब्रजयात्रा की ओर से एक कैमरे के द्वारा ब्रज के लीलास्थलियों की वीडियो रिकॉर्डिंग की जाती थी, इसी उद्देश्य से एक कैमरामैन एक संत व कुछ अन्य मान मन्दिर के सदस्यों के साथ गाँव में थोड़ा आगे जाकर जहाँ कुछ लोग पर्वत का खनन कर रहे थे, उनकी फोटो ले रहा था। मानमंदिर के सदस्यों को पर्वत के खनन की तस्वीरें लेते देख खननकर्ता भड़क उठे और वे अत्यधिक क्रोधावेश में आकर यात्रा को आघात पहुंचाने के लिए चले आए। यात्रा की ध्वनि विस्तारक यंत्र जिनसे दूर-दूर तक नाम संकीर्तन की ध्वनि प्रसारित होती थी, उन पर डंडों से प्रहार करने लगे, इसी प्रकार जो संत कैमरामेन के साथ खनन स्थली की वीडियो रिकॉर्डिंग करा रहे थे, उनको भी इन खननकर्ता लोगों ने एक कँटीली झाड़ी में पटक दिया तथा उनके सिर पर पत्थरों से प्रहार किया, इसी प्रकार वे यात्रा को क्षति पहुँचाने का भरसक प्रयास करने लगे। कुछ अन्य लोग श्रीबाबा महाराज के पास जाकर कलह करने लगे। पूज्य श्री ने उन्हें समझाने का बहुत प्रयास किया परन्तु वे शांत नहीं हुए, इसके बाद ये खनन कर्ता बन्दूक लेकर आ गए और श्रीबाबा महाराज पर गोली चलाने के उद्देश्य से उनके पीछे बैठ गए। मान मंदिर के सदस्यों ने बाबा श्री पर हमले की तैयारी देखी तो वे भी श्रीबाबा महाराज को घेरकर बैठ गए ताकि बन्दूक की गोली यदि चले तो वह श्रीबाबा का स्पर्श भी न कर सके। ऐसी विस्फोटक स्थिति में श्रीबाबा महाराज ने स्वरचित पद 'राधे किशोरी दया करो' गाना आरम्भ किया। जैसे ही श्रीबाबा द्वारा इस पद का गान हुआ, मान मंदिर की समस्त साध्वियां खड़ी होकर नृत्य करने लगीं, उन्हें नृत्य करते देखकर अन्य यात्री भी नृत्य करने लगे। खून-खराबे की हद तक आ पहुँची विकराल परिस्थिति नृत्य और गान के रसमय वातावरण में परिवर्तित हो गयी। श्रीबाबा के इस पदगान का यह प्रभाव हुआ कि हत्यारे बंदूकें लेकर हतप्रभ होकर देखते ही रह गए, उन्हें गोली चलाने का साहस नहीं हुआ और समस्त यात्री नृत्य और गान करते हुए सुनहरा से पूर्ण सुरक्षित होकर बरसाने की ओर चल पड़े। गाँव में कुछ खनन कर्ता पत्थर लेकर बैठे थे कि हम यात्रियों पर पत्थरों से प्रहार करके यात्रा को भीषण आघात पहुंचाएंगे किन्तु वे भी अभूतपूर्व कीर्तन और नृत्य के आगे धराशायी होकर केवल मूकदर्शक बनकर देखते रहे। उसी समय राजस्थान सरकार की ओर से पुलिस दल आ पहुंचा और वे राधारानी ब्रजयात्रा को खननकर्ताओं के आघात से बचाकर उत्तर प्रदेश की सीमा तक छोड़ आए।

सन् १९९८-९९ की यात्रा के दौरान पिसाया गाँव में पुनः एक विलक्षण घटना घटी। अचानक ही बहुत तेजी के साथ आंधी-तूफान आ गया, भीषण तूफान के आघात से यात्रा के तम्बू उखड़ने लगे। यात्रा प्रबंधको की ओर से यात्रियों से कहा गया कि वे तम्बू के बांस बल्लियों को कसकर पकड़े रहें। तूफान की

विकरालता को देखकर श्रीबाबा महाराज ने स्वयं कीर्तन करना आरम्भ कर दिया, सभी यात्री भी बाबा के साथ कीर्तन करने लगे। महाराज श्री ने ऐसा आवेश युक्त कीर्तन किया कि बहुत देर तक बिना रुके वह कीर्तन करते रहे, उन्हें अपने तन की भी सुध बुध नहीं रही, कीर्तन करते समय उन्हें आसपास के किसी भी मनुष्य की उपस्थिति का आभास नहीं हो रहा था, वह तो केवल अपने इष्ट श्रीराधामाधव की स्मृति में पूर्णतया तन्मय हो चुके थे। उस समय पूज्य श्री के कीर्तन के साथ ढोलक वादक भी इतनी तीव्र गति से ढोलक बजा रहे थे कि उनकी उँगलियों से रक्त का प्रवाह बह निकला। इस उद्दाम कीर्तन का यह प्रभाव हुआ कि भीषण आंधी तूफान का वेग पूरी तरह शांत हो गया। इसके बाद यात्रियों ने तम्बू के बाहर देखा कि पण्डाल से थोड़ी दूर के क्षेत्र में घनघोर वर्षा हुई थी परन्तु पंडाल के आसपास वर्षा की एक बूँद भी नहीं गिरी थी। यह अभूतपूर्व चमत्कार श्रीबाबा महाराज के कीर्तन के प्रभाव से हुआ था।

सन् १९९९ में राधारानी ब्रजयात्रा जब मांट कस्बे से होकर भांडीरवन की ओर जा रही थी तो मांट के बाजार में एक वेशधारी कुटिल साधु ने श्रीबाबा महाराज जी को विष दे दिया था। वह बाबा के पास आया और बोला- 'महाराज'! यह लीजिये त्रिवेणी संगम का जल।' इस जल में तीक्ष्ण विष मिला हुआ था। बाबा श्री ने उस जल को मुख में डाल लिया तो उन्हें इसका स्वाद बहुत तीखा प्रतीत हुआ परन्तु श्री राधारानी के अनन्य भक्त श्रीबाबा महाराज के ऊपर इस भीषण विष का कुछ भी प्रभाव नहीं हुआ, विष पान के बाद श्रीबाबा आगे बढ़े तो बहुत बड़ा ब्रजवासियों का समुदाय उनके स्वागत के लिए खड़ा था। श्रीबाबा ने उन्हें संबोधित किया, प्रभात फेरी चलाकर समाज कल्याण की भावना के प्रति प्रेरित किया। इसके पश्चात जब यात्रा अपने पड़ाव स्थल भांडीरवन पहुँची तो रात्रि के समय वही विष दाता साधु श्रीबाबा महाराज के पास क्षमा मांगने आया, परम करुणा सिन्धु श्रीबाबा महाराज ने उसके अक्षम्य अपराध पर कुछ भी दोष दृष्टि न करते हुए उसे क्षमा कर दिया।

जिन दिनों ब्रज के डीग और कामां तहसील में पर्वतों का खनन अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया था तो श्रीबाबा महाराज इस खनन की रोकथाम हेतु सन २००९ की यात्रा में आमरण अनशन पर स्वयं ही बैठ गए, इस संकल्प के साथ कि जब तक ब्रज पर्वतों पर हो रहे खनन को सरकार प्रतिबंधित नहीं कर देगी तब तक मेरे मुख में जल भी नहीं जाएगा। श्रीबाबा महाराज को आमरण अनशन करते देखकर हजारों यात्री भी अनशन पर बैठ गए। यहाँ तक कि मान मंदिर गुरुकुल के छोटे-छोटे बच्चे भी आमरण अनशन पर बैठ गए। बच्चों से लोगों ने कहा कि तुम लोग अनशन मत करो,भोजन ग्रहण कर लो परन्तु श्रीबाबा महाराज के प्रति पूर्ण समर्पित बच्चों ने कहा-जब तक श्रीबाबा महाराज अन्न-जल ग्रहण नहीं करेंगे तब तक हमारे लिए भी अन्न-जल ग्रहण करना असंभव है। श्रीबाबा महाराज और हजारों यात्रियों तथा छोटे बच्चों द्वारा आमरण अनशन पर बैठने का यह परिणाम हुआ कि बारह घंटे बाद ही विजय पत्र आ गया। रात को बारह बजे राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री ने फोन द्वारा श्रीबाबा महाराज से आग्रह किया कि आप अपना अनशन समाप्त कर दीजिये क्योंकि पर्वत खनन रोकने हेतु आपकी मांगें स्वीकार कर ली गयी हैं। पूरे डीग और कामां तहसील में पर्वतों के खनन पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। श्रीबाबा महाराज द्वारा यात्रा काल में किये गए इस ऐतिहासिक कृत्य का दीर्घकालिक परिणाम हुआ और आज भी ब्रजभूमि के समस्त पर्वत पूर्ण सुरक्षित होकर आनंद से आसमान की ओर सिर उठाये हुए मानो श्रीबाबा महाराज के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त कर रहे हैं।

कई वर्षों पूर्व की एक यात्रा में परम ब्रजनिष्ठ संत श्री सखीशरण महाराज जी की शिष्या कानपुर की एक महिला अस्वस्थ हो गयी। यात्रा के महावन रमण रेती आने पर तो उसकी हालत और अधिक खराब हो गयी। उसकी चिंताजनक स्थिति को देखकर सखी शरण महाराज जी ने श्रीबाबा महाराज जी से प्रार्थना की कि इस महिला का किसी अच्छे चिकित्सक के द्वारा इलाज कराया जाय। सखी शरण महाराज के आग्रह करने पर पूज्य बाबा श्री ने रमण रेती में गुरु शरणानन्द जी से उनके स्वयं के चिकित्सालय में उस महिला का इलाज कराने को कहा। उस महिला का जब रमण रेती के चिकित्सालय में इलाज चल रहा था तो चेतनावस्था में ही उसे यमदूतों के दर्शन हुए। यमदूतों को देखकर के वह घबड़ा गयी और चिल्लाने लगी कि मुझे छोड़ दो, अभी मुझे मत ले जाना, मेरे बच्चे बहुत छोटे हैं, मेरे बिना वे अनाथ हो जायेंगे। उसी समय अपनी रक्षा हेतु वह आर्त स्वर में श्रीबाबामहाराज को पुकारने लगी। जब वह बाबाश्री को पुकार रही थी तभी उसने देखा कि उसके सामने श्रीबाबामहाराज खड़े हैं, उनके शरीर से प्रकाश निकल रहा है और वे हाथ उठाकर उसे अभय दान दे रहे थे। कुछ समय बाद बाबा अंतर्धान हो गए तब उसने अपने साथ के लोगों से कहा कि मुझे यहाँ से अभी इसी समय राधारानी ब्रजयात्रा में ले चलो। इसके बाद उसको यात्रा स्थल पर लाया गया और वह पूर्णतया स्वस्थ हो गयी।

सन २०१६ की ब्रज यात्रा में भी एक विलक्षण चमत्कार हुआ। सागर (म.प्र.) के एक भक्त सन २०११ से लगातार राधारानी ब्रज यात्रा में सम्मिलित होते रहे थे परन्तु २०१६ में उनकी पुत्र वधू

के घातक बीमारी की चपेट में आने के कारण वह यात्रा में नहीं आ सके। उनके साथ जो अकल्पनीय, अविश्वसनीय घटना घटी, २०१६ की यात्रा में कामां में आकर सबके समक्ष उसका पूरा विवरण उन्होंने सुनाया। उनकी पुत्रवधू जिस रोग से ग्रसित थी, उसके इलाज हेतु वह मुंबई, नागपुर आदि शहरों में गए तो डॉक्टरों ने बताया कि उसको कैंसर है और ये जानलेवा बीमारी है, इसका कोई इलाज नहीं है अत: इन्हें घर पर ले जाएं। इसके बाद उन्होंने अपनी पुत्रवधू को भोपाल के अस्पताल में भर्ती करा दिया। वहाँ भी डॉक्टरों ने यही कहा कि इसे कैंसर है और इसके बचने की कोई सम्भावना नहीं है। अत्यधिक कष्ट और चिंता के कारण इन सज्जन के सीने में दर्द होने लगा और हार्ट अटैक पड़ने की सम्भावना होने लगी। तब इन्होंने घबराकर अस्पताल में श्रीबाबा महाराज और राधारानी को याद किया, फिर इन्हें नींद आ गयी तो स्वप्न में इन्होंने देखा कि श्रीबाबा महाराज हँसते हुए इनके पीछे आ रहे हैं और इनके पास आकर बैठ गए। स्वप्न में ही यह व्यक्ति डॉक्टरों से अपनी पुत्र वधू के विषय में बात करते कि वह बचेगी अथवा नहीं। स्वप्न में हँसते हुए श्रीबाबामहाराज १० मिनट इनके आगे पीछे रहे। जब इनकी नींद खुली और यह अपनी पुत्र वधू के पास गए तो वह बोली कि अब मुझे आराम है, ऐसा लगता है कि मुझे कोई बीमारी नहीं है। इन सज्जन के पास सन २०१६ की यात्रा का पर्चा किसी ने पहुँचा दिया था, उसे यह प्रतिदिन देखा करते और विचार करते थे कि आज यात्रा अमुक स्थान पर गयी होगी, उसे अपने सीने पर रखकर यह सो गए और तभी स्वप्न में बाबा का दर्शन हुआ। उसके बाद से इनकी पुत्र वधू के स्वास्थ्य में सुधार हो गया। मुंबई के डॉक्टरों की भी रिपोर्ट आई कि इनकी पुत्रवधू को कैंसर नहीं है। पुत्रवधू का स्वास्थ्य भी सुधर गया, अब वह पूर्णतया स्वस्थ है, इसी प्रकार इन व्यक्ति के सीने में जो दर्द होता था और हार्ट फेल होने की आशंका लगती थी वह बीमारी भी पूर्णतया दूर हो गयी। अब वे सपरिवार कुशल हैं और इस कुशलता का समाचार देने के लिए वह २०१६ की यात्रा के अंतिम दिन कामां में आए थे।

एकबार राधारानी की प्राकट्य भूमि 'रावल' ग्राम में यात्रा के पड़ाव के समय रात को १० से १२ बजे भक्त लोग श्रीजी की स्मृति में भावविभोर होकर कीर्तन कर रहे थे। अर्द्ध रात्रि का समय था, समस्त यात्री गहरी निद्रा में शयन कर रहे थे। उसी समय कीर्तन करने वाले भक्तों को अचानक अत्यंत सुमधुर वंशी की तान सुनाई पड़ी। कीर्तन करने वाले भक्त उस मीठी तान को सुनकर आश्चर्यचकित होकर देखने लगे कि यह मधुर वंशीध्वनि कहाँ से आ रही है, इसे कौन बजा रहा है ? भक्तों ने अनुमान लगाया कि संत नरसिंह दासजी मुरली बजा रहे होंगे क्योंकि वे ही राधारानी ब्रजयात्रा में सुमधुर मुरली वादन किया करते हैं किन्तु सबने देखा कि उस समय वह भी निद्रामग्न थे। फिर यह वंशीवादन कौन कर रहा था, जिन भक्तों ने इस मीठीधुन को सुना उन्होंने यही कहा कि हम लोगों ने अपने जीवन में कभी भी इतनी मधुर वंशीध्वनि पहले कभी नहीं सुनी थी। वंशीध्वनि कुछ देर तक गूंजती रही, बहुत ढूँढने पर भी वंशीवादक का कोई पता नहीं पड़ रहा था। अगले दिन जब यह घटना श्रीबाबा महाराज को बताई गई तो उन्होंने यही कहा कि यह ब्रजभूमि है, भावपूर्ण निष्काम आराधना करने पर भगवान् आज भी इस ब्रजभूमि में किसी न किसी प्रकार अपना अनुभव कराते रहते हैं। अत: यह वंशीध्वनि किसी और की नहीं अपितु श्रीजी की प्राकट्य भूमि 'रावल' ग्राम में श्री राधारानी की कृपा से मुरलीमनोहर श्यामसुंदर के वंशीवादन की ही ध्वनि थी।

हसनपुर में देखा हजारों यात्रियों ने चमत्कार

'राधारानी ब्रजयात्रा' होने से यूं तो प्रत्येक वर्ष यात्रा में कोई न कोई अभूत घटना संघटित होती है, यह इसकी अपनी अनूठी पहिचान है। इस वर्ष भी साक्षात् दर्शन किया हजारों यात्रियों ने श्रीराधारानी की कृपा का। आज हसनपुर में पड़ाव पड़ा हुआ है, दूर–दूर तक यात्रियों के तम्बू हैं, समुचित विद्युत–व्यवस्था है। रात्रि में देखो तो कोई दिव्य लोक मालूम पड़ता है। अखण्ड नामध्वनि के साथ सभी ब्रजयात्री अपनी कल की यात्रा के लिए तैयारी में जुटे हैं। प्रबन्धकों द्वारा पता चला कि कल की यात्रा स्थगित करने का विचार है क्योंकि यमुना जी में एकदम १० फुट जल चढ़ गया है, केवल एक नाव है जिससे १५ हजार यात्रियों का पार होना कल सन्ध्या तक भी सम्भव नहीं है। स्थानीय ब्रजवासियों का भी यह कहना था कि हसनपुर में एक दिन और विश्राम किया जाय अथवा सेतुमार्ग से यमुना पार की जाय किन्तु सेतुमार्ग में २० कि. मी. का मार्ग बढ़ जाता है अत: वृद्ध यात्रियों के लिए यह सम्भव नहीं है। कल की यात्रा हजारों यात्रियों के लिए चिन्ता का विषय बन गई थी। यात्रा के प्रबन्धकगण भी चिन्तित थे यह बात लेकर किन्तु पूज्य बाबा श्री तो कहाँ रुकने वाले हैं। भीषण वर्षा में भी अनेक बार पूज्य बाबा श्री अकेले ही यात्रियों को छोड़कर यात्रा करने चल दिये थे, दैव ही पराभूत हो जाता पूज्य श्री नहीं। प्रात: होते–होते पूज्य बाबा श्री का अबाध गति से यात्रा के लिए निकल पड़ना एवं इधर यमुना का भी तट तोड़ने वाला तीव्र प्रवाह .....। प्रबन्धकों को बहुत शोचनीय स्थिति का सामना करना पड़ रहा था।

न तप्यसेऽग्निना मुक्तो गङ्गाम्भ: स्थ इव द्विप:॥

(श्रीमद्भागवत ११/७/२९)

पूज्य बाबा महाराज तो इस प्रतिकूल परिस्थिति में भी आनन्दित थे। संध्याकालीन सत्संग में अपना अटल विचार सुना भी दिया, कल की यात्रा होगी, यमुना के आरोहण–अवरोहण से श्रीराधारानी ब्रजयात्रा स्थगित नहीं होगी। सहज ही निर्णय दे दिया मानो कल होने वाला चमत्कार इन्हें पूर्व ही विदित था। यात्री भी तैयार थे कल के लिए, जब पूज्य बाबा महाराज जाएंगे तो हम सभी जाएंगे। इधर रात्रि में १२ बजे यात्रा समिति के सदस्य वाहनों द्वारा यमुना जी की स्थिति जानने गये। इन्हें नींद कहाँ? देखा कि प्रवाह बराबर बढ़ ही रहा है।

होइहि सोइ जो राम रचि राखा॥

(रा. बा. कां.- ५२)

कहकर सो गये .....। प्रातः श्रीराधामानबिहारी लाल की आरती के साथ शंखनाद हुआ, घंटा–घड़ियाल की ध्वनि हुई, जय ध्वनि हुई, श्रीजी की ध्वजा उठाई और पूज्य श्री के संरक्षण में चल पड़ा हजारों यात्रियों का समूह। आज कीर्तन में भी भाव की विलक्षण तीव्रता थी। प्रत्येक यात्री के मुख से उच्च स्वर में निकल रहा था युगल नाम संकीर्तन।

राधे कृष्ण राधे कृष्ण कृष्ण कृष्ण राधे राधे।
राधे श्याम राधे श्याम श्याम श्याम राधे राधे।

मध्य–मध्य में श्री यमुना महारानी की जय ..... श्री यमुना महारानी की जय ..... जयघोष हो रहा था।

यात्रियों के कदम बढ़ रहे थे यमुना जी की प्रवाह तीव्रता देखने को। जैसे ही निकट आये, हजारों यात्रियों को कृष्णावतार की घटना साकार हुई।

मघोनि वर्षत्यसकृद् यमानुजा गम्भीरतोयौघजवोर्मिफेनिला।
भयानकावर्तशताकुला नदी मार्गं ददौ सिन्धुरिव श्रियः पतेः॥

(श्रीमद्भागवत १०/३/५०)

जल केवल ३ फिट ही रह गया था। यमुना जी ने मार्ग दिया इन ब्रजयात्रियों को पार होने का, हजारों यात्री सहज ही यमुना पार आ गये।

श्री यमुना महारानी जू की जय! श्री यमुना महारानी जू की जय! अब सब यात्री समझे कि ओह! यही कारण था पूज्यश्री का प्रतिकूलता में भी आनन्दित होने का।

तुमसौं कहा छिपी करुनामय, सबके अन्तरजामी॥

(सूर–विनयपत्रिका–१९५)

जब यात्रा श्रीराधारानी की तो यात्रियों के सुख–दुःख का ध्यान भी उन्हें! इससे तो यही समझ में आता है "भावना में यदि शुद्धि हो तो इष्टकृपा का अवश्य अनुभव होता है।"

प्रतिवर्ष तो क्या इन महान विभूति के निकट बैठकर देखो तो प्रतिदिन ही चमत्कार दिखाई देते हैं।

२३/१०/२००८ में हसनपुर में पुनः घटी घटना

इस बार भी यात्रियों को हुआ श्रीजी की कृपा का अनुभव। विपत्ति पर कृपा का यह क्रम हर बार ही देखने को मिलता है और मन श्रीसूरदासजी की पंक्तियों को गुनगुना उठता है –

मनसा करि सुमिरत हे जब जब, मिलते तब तब ही॥

इस बार यात्रा में बड़ा विकट संकट आया, हजारों यात्री एक साथ डायरिया से ग्रस्त हो गये। यात्रा समिति के प्रबन्धकों द्वारा तुरन्त ही यात्रियों को हसनपुर, मथुरा, वृन्दावन अस्पतालों में पहुँचाया गया किन्तु उचित उपचार के बाद भी महामारी पर लगाम न लग सकी।

२३/१०/२००८ को जब यात्रा हसनपुर पहुँची तो संध्याकालीन सत्संग से पूर्व प्रबन्धक व समिति सदस्यों ने पूज्य बाबा श्री से प्रार्थना की "इस बार यात्रा का यही विसर्जन कर दिया जाय तो उचित रहेगा अन्यथा यह अनियंत्रित महामारी जिस वेग से बढ़ रही है, ऐसा लगता है २–५ दिन में तो और भी उग्र रूप लेकर सबका काल बन जाएगी।"

कुछ क्षण मूक रहकर पूज्य बाबाश्री ने कहा– "क्या भगवन्नाम पर भरोसा नहीं है? यात्रा में यह कोई प्रथम संकट तो आया नहीं और फिर जब–जब बाधायें आयीं, श्रीजी ने रक्षा की। सब लोग भगवन्नाम लो।" कुछ समय बाद संध्याकालीन सत्संग आरम्भ हुआ। आज अन्य कुछ गाने–कहने के पूर्व पूज्य बाबाश्री ने श्रीअली किशोरीजी महाराज का एक विलक्षण पद गाया –

आधो नाम तारिहैं श्री राधा।
रा के कहे रोग सब मिटिहैं, धा के कहे मिटै भव बाधा॥
जुग अक्षर की महिमा को कहै, गावत वेद पुराण अगाधा।
'अली किशोरी' नाम रटत नित, लागी रहत समाधा॥

लगभग एक घण्टा यह पदगान हुआ, सम्पूर्ण वातावरण राधानाममय हो गया।

बस फिर क्या था, अगले दिन ही सूचना प्राप्त हुई – "डायरिया नियन्त्रित हो गया है, यात्री स्वस्थ होकर अस्पताल से लौट रहे हैं।"

यह साक्षात् श्रीराधारानी की कृपा का अनुभव हजारों यात्रियों ने किया। प्रतिवर्ष प्रतिकूल परिस्थितियाँ आती अवश्य हैं परन्तु श्रीराधारानी की यात्रा होने से वे सब विद्युतवत् चमक कर गायब हो जाती हैं।

अद्भुत घटना घटी सुपाना में

एक बार श्रीराधारानी ब्रजयात्रा 'सुपाना' ग्राम से होकर गुजर

रही थी, उस समय एक भीषण दुर्घटना घटी। इस ब्रजयात्रा में २४ घंटे अखंड कीर्तन चलता रहता है। जब यात्रा प्रात:काल अपने पड़ाव स्थल से अगले पड़ाव की ओर कूच करती है उस समय भी नाम-संकीर्तन होता रहता है। श्रीबाबा महाराज का कहना है कि सतत् नाम-संकीर्तन से जुड़े रहने के कारण ही यात्रा सफल होती है इसीलिए उनकी प्रेरणा से पदयात्रा करते समय ठाकुरजी के डोले के पास जो भी भक्त कीर्तन करते रहते हैं, ध्वनि विस्तारक यंत्रों द्वारा ऐसी व्यवस्था बनायी जाती है कि ३-४ किमी. की दूरी तक फैले समस्त यात्रियों को वह कीर्तन सुनाई देता रहता है, इसके लिए वायरलेस (तारविहीन)प्रणाली की व्यवस्था बनायी जाती है, जिसमें एक ऐसे एंटीने का प्रबंध किया जाता है जो बिना तार के ही ३-४ किमी. तक कीर्तन ध्वनि का प्रसारण कर सके। उस यात्रा में जो नवयुवक भक्त ऐंटीने को लेकर चल रहा था, अनजाने में वह ऐंटीना सुपाना ग्राम में लगे एक बिजली के खम्बे से छू गया जिसमें ११ हजार वोल्ट का तीव्र करेन्ट प्रवाहित हो रहा था। इतनी अधिक तीव्र शक्ति के ऐंटीने का स्पर्श होने से जो भी साधक भक्त और साध्वियां माइक से कीर्तन कर रहे थे, उनके माइकों में भी यह भीषण करेन्ट प्रवाहित हुआ, जिसके प्रभाव से वे अचेत होकर गिर पड़े, लाउडस्पीकर लेकर चलने वाले भक्त भी मूर्छित होकर गिर पड़े। सबसे अधिक दु:खद घटना यह घटी कि गुजरात का नवयुवक जो अत्यंत सेवाभाव से ऐंटीना लेकर चल रहा था, ११ हजार वाल्ट के करेन्ट के प्रहार से घटना स्थल पर ही उसका देहांत हो गया। रसमय नृत्य और गान के मध्य अचानक यह दुर्घटना घटी और एक-एक करके कीर्तन करने वाले भक्त गिरकर मूर्छित होते जा रहे थे। इससे थोड़ी देर को कीर्तन बाधित हो गया परन्तु ऐसी विकराल परिस्थिति में भी श्रीबाबा महाराज ने अन्य भक्तों को बुलाकर उनके द्वारा कीर्तन पुन: आरंभ करवा दिया। यह श्रीराधामानबिहारीलाल की अद्भुत कृपा का चमत्कार था कि ११ हजार वोल्ट बिजली के करेन्ट के भीषण आघात की चपेट में आए अन्य सभी भक्त कुछ दिन अस्पताल में उपचार के उपरान्त स्वस्थ हो गए और फिर से यात्रा में सम्मिलित हो गए। श्रीबाबा महाराज की सेवा के प्रति अनन्य रूप से समर्पित और महान कीर्तनकार संत श्री ब्रजराज शरण जी भी इस भीषण करेन्ट के आघात से मूर्छित हो गए थे परन्तु अचेतनावस्था में भी वह अपने परम पूज्य श्रीबाबामहाराज का स्मरण करते हुए 'बाबा-बाबा' कह रहे थे। कुछ दिन अस्पताल में चिकित्सा कराने के पश्चात् वह पुन: ब्रजयात्रा में आ गए और पैदल चलने में असमर्थ होने के कारण उन्होंने वाहन में बैठकर पुन: कीर्तन करना आरंम्भ कर दिया। इसी प्रकार महाराष्ट्र के एक भक्त मोहनजी 'जो प्रति वर्ष इस ब्रजयात्रा में कीर्तन का लाउड स्पीकर उठाकर सबसे आगे चलते थे' को करेन्ट लगने से मूर्छित होने पर जब उन्हें अस्पताल पहुँचाया गया तो होश आने पर उन्हें बहुत दु:ख हुआ कि मेरी सेवा छूट गयी। वह डॉक्टरों के मना करने पर भी अपना उपचार पूरा कराये बिना ही राधारानी ब्रजयात्रा में दौड़े चले आए और अगले दिन की यात्रा में लाउड स्पीकर लेकर तैयार हो गए, उनकी ऐसी अद्भुत सेवाभावना देखकर श्रीबाबामहाराज ने गुलाब की पुष्पमाला उनके गले में पहना दी। इस प्रकार यह बहुत बड़ा चमत्कार हुआ कि इतने घातक करेन्ट के प्रहार से जर्जरित हुए कई भक्त फिर से ठीक होकर यात्रा में सम्मिलित होकर नाम-संकीर्तन में तन्मयता के साथ आ जुटे।

निष्किंचन ब्रजयात्रियों की भावना-शक्ति से मिला पूज्यश्री को पुनर्जीवन

सन् २०११ की यात्रा में श्रीबाबामहाराज के हृदय का वाल्व फट गया था, प्राणघातक स्थिति हो गयी थी। उनके मुख से रक्त प्रवाहित होने लगा। ऐसी स्थिति में उन्हें तुरन्त अस्पताल ले जाया गया। भारतवर्ष के प्रसिद्ध डाक्टरों ने श्रीबाबा का चिकित्सकीय परीक्षण किया और वे उनकी हालत देखकर स्तब्ध रह गये। डाक्टरों ने कहा कि श्रीबाबा का तुरन्त ही ऑपरेशन करना होगा परन्तु इसमें बहुत बड़ा खतरा यह है कि ऑपरेशन के बाद श्रीबाबा को ब्रेन हैमरेज हो सकता है, लकवा हो सकता है, नेत्रहीन होने का खतरा है अथवा बाबा श्री कोमा में जा सकते हैं। ऑपरेशन से पूर्व कोई हादसा होने की स्थिति में डॉक्टरों ने एक मेडिकल पेपर पर लिखित रूप से ऑपरेशन की सहमति हेतु हस्ताक्षर करने को कहा। श्रीबाबा महाराज के अनन्य सेवक संत श्री ब्रजराज शरण जी ने मेडिकल पेपर पर हस्ताक्षर करके ऑपरेशन करने की स्वीकृति प्रदान कर दी। ६घंटे तक श्रीबाबा का अत्यन्त जटिल ऑपरेशन हुआ किन्तु डॉक्टर यह देखकर अत्यधिक आश्चर्यचकित थे कि उन्होंने ऑपरेशन पूर्व शारीरिक आघातों की जो आशंका की थी, उनमें से एक भी दुर्घटना नहीं घटी। डॉक्टरों के लिए भी यह एक अकल्पनीय चमत्कार था, उन्होंने अपने जीवन में किसी मरीज के साथ ऐसी अभूतपूर्व घटना पहले कभी नहीं देखी थी।इसीलिए उन्होंने श्रीबाबामहाराज का नामकरण कर दिया miracle बाबा (चमत्कारी या जादूगर बाबा)। श्रीबाबा के स्वास्थ्य के साथ यह चमत्कारिक घटना इसलिए घटी क्योंकि उन्होंने धर्म को कभी भी व्यवसाय नहीं बनाया। इसी तरह ब्रजयात्रा को भी उन्होंने कभी व्यवसाय नहीं बनने दिया। आजकल ब्रजयात्राओं का संचालन करना भी एक बहुत बड़ा व्यवसाय बन गया है। अनेकों संस्थाएं और संप्रदाय ब्रजयात्रा कराने के लिए

यात्रियों से मोटी रकम वसूल करते हैं, इस कारण निर्धन यात्री ब्रजयात्रा का लाभ नहीं उठा पाते हैं। इसीलिए श्रीबाबा ने नि:शुल्क यात्रा का सूत्रपात किया ताकि निर्धन यात्री भी ब्रज परिक्रमा का लाभ उठा सकें। श्रीबाबा महाराज की इस निष्काम सेवा का ही यह चमत्कार था कि प्राणघातक बीमारी भी उन्हें कोई हानि नहीं पहुंचा सकी और चमत्कारिक रूप से वह पूर्ण स्वस्थ हो गए। जिन निर्धन यात्रियों की सेवा हेतु श्रीबाबा ने नि:शुल्क यात्रा का शुभारम्भ किया, उनकी बीमारी के समय वे करुण क्रंदन के साथ श्री राधारानी से शीघ्र ही श्रीबाबा महाराज के पूर्ण स्वस्थ होने की प्रार्थना किया करते थे। उनकी प्रार्थना श्रीजी ने सुनी और अविश्वसनीय ढंग से उन्हें घातक रोग से मुक्त किया।

यात्रा से ही गौशाला की निरन्तर संवृद्धि

मान मंदिर द्वारा संचालित माताजी गौशाला की स्थापना भी श्री राधारानी ब्रजयात्रा का चमत्कार है क्योंकि प्रतिवर्ष यात्रा के बरसाना पड़ाव स्थल पर श्रीबाबा महाराज ब्रजाचार्य श्रीनारायणभट्टजी की पुस्तक 'ब्रजभक्तिविलास' से ब्रज की लीला स्थलियों का जो प्रणाम मन्त्र बुलवाते हैं उसमे श्री बरसानाधाम को भी प्रणाम करने का मन्त्र बुलवाया करते थे, जो इस प्रकार है –

महीभानसुतायैव कीर्तिदायै नमो नमः।
सर्वदा गोकुले वृद्धिं प्रयच्छ मम कांङ्क्षिताम्॥

वृषभानुजी व कीर्ति मैया को नमस्कार है। गौओं के कुल (गौवंश) वृद्धि की मेरी आकांक्षा को आप पूर्ण करें।

बरसाना के इस प्रणाम मन्त्र में श्री राधारानी के माता–पिता श्री कीर्ति मैया और श्री वृषभानु बाबा से गौओं के समुदाय की वृद्धि होने की प्रार्थना की गयी है। श्रीबाबा महाराज प्रति वर्ष इस प्रार्थना मन्त्र को बरसाना के पड़ाव स्थल पर यात्रियों से उच्चारण करवाया करते थे।इस प्रार्थना मन्त्र के उच्चारण करवाने का यह चमत्कार हुआ कि श्रीजी की कृपा से माताजी गौशाला की स्थापना हुई और उसमे आज ४५ हजार से अधिक गौओं की मातृवत सेवा हो रही है और गौवंश की संख्या भी उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त हो रही है।

आज से ७० वर्ष पूर्व ब्रजयात्राओं में ३०–३० हजार यात्री गण चलते थे, जिससे कुओं का पानी सूख जाया करता था।आज सांप्रदायिक वैमनस्य के कारण इन यात्राओं के संचालकों में फूट पड़ गयी और अब थोड़ी संख्या में ही यात्री ब्रज परिक्रमा कर पाते हैं, इसके अतिरिक्त वर्तमान युग में पद यात्रायें भी पूर्णतया समाप्त हो गयी हैं, अब तो केवल वाहन यात्रायें रह गयी हैं।अत्यधिक शुल्क लेकर वाहनों में बिठाकर ब्रज के गिने–चुने प्रमुख लीला स्थलियों का दर्शन करा दिया जाता है।काफी समय से एक प्रमुख संप्रदाय की यात्रा अपने अनुपम वैभव और विशाल संख्या के साथ ब्रज परिक्रमा किया करती थी। सन २०१७ में तो वह यात्रा भी बहुत छोटी रह गयी। इस प्रकार कई अन्य महत्वपूर्ण आचार्यो–महापुरुषों के स्थानों से चलने वाली यात्राओं पर भी अब विराम लग गया है परन्तु श्रीजी की अहैतुकी कृपा से सन १९८८ से केवल २५० यात्रियों के साथ प्रारंभ हुई श्री राधारानी ब्रजयात्रा प्रति वर्ष अदम्य उत्साह के साथ ब्रज–परिक्रमा करती आ रही है, अनेकों बाधाओं, अनेकों समस्याओं तथा धन का अभाव होने पर भी कभी भी यह बंद नहीं हुई। यहाँ तक कि सन २०११ में यात्रा के दसवें ही दिन प्राणघातक बीमारी के कारण श्रीबाबा महाराज की अनुस्पथिति में भी यह यात्रा पूर्ण सफलता के साथ संपन्न हुई। वर्तमान काल में ब्रज में यही एकमात्र पदयात्रा है जो सुचारु रूप से ४० दिन तक ब्रज के दुर्गम स्थानों का यात्रियों को नि:शुल्क रूप से दर्शन कराती है और इसमें सम्मिलित होने वाले यात्रियों की संख्या भी प्रति वर्ष वृद्धि को प्राप्त होती जा रही है। यह भी श्रीजी की कृपा का एक विलक्षण चमत्कार है।

श्री राधारानी ब्रजयात्रा में पिछले ३ वर्षो से जो लोग आर्थिक सहायता किया करते थे, किन्हीं कारणों से आर्थिक सहयोग करने में वे असफल हो गए, इसके साथ ही ३ वर्षो में कुछ लोगों ने इस यात्रा का बहुत अधिक विरोध किया परन्तु यह एक अद्‌भुत चमत्कार है कि आर्थिक सहयोग बंद हो जाने और भारी विरोध के बावजूद भी इस पर न तो कोई रोक लगी और न इसकी व्यवस्था और संचालन में कोई त्रुटि हुई अपितु बाहरी आर्थिक सहायताओं के बंद होने और विरोधों के बावजूद भी यह यात्रा पूर्व की अपेक्षा और अधिक कुशलता के साथ संचालित हो रही है। यात्रियों की संख्या में भी कमी आने के बजाय उनकी संख्या भी उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होती जा रही है। श्रीबाबामहाराज इसका यही कारण बताते हैं कि भगवान् के आश्रय और उनके विश्वास के साथ जो कार्य किया जाता है उसमें कोई बाधा और असफलता अवरोध उत्पन्न नहीं कर सकती, इसके विपरीत मनुष्यों के सहयोग और उनके आश्रय पर निर्भर होकर जो कार्य किया जाता है, उसमें असफलता और बाधाओं का आना अवश्यम्भावी है। श्रीराधारानी ब्रजयात्रा केवल श्रीजी के आश्रय और उन्हीं के प्रति सुदृढ़ विश्वास के साथ परिसंचालित की जाती है इसीलिए आज भी आर्थिक सहयोग और भारी विरोध के बावजूद भी यह उन्नति के पथ पर सतत् अग्रसर है।

धामप्रेम-प्राप्ति का स्रोत 'सत्संग'

(श्रीबाबामहाराज के सत्संग 'धाम-महिमा' (३/५/२००६) से संग्रहीत)

संकलनकर्त्री/लेखिका - साध्वी अचलप्रेमाजी, दीदी माँ गुरुकुल (मान मंदिर) की छात्रा

नाम निरूपन नाम जतन तें।
सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें॥

(श्रीरामचरितमानस, बालकाण्ड - २३)

नाम की महिमा व माहात्म्य श्रवण करने को निरूपण कहते हैं। जब नाम का निरूपण सुनते हैं तब फिर उसका जतन अर्थात् उसका साधन शुरू होता है। इसी प्रकार धाम का निरूपण सबसे पहले सुनना चाहिये कि कैसे धाम के निवासियों में श्रद्धा की जाए, किस भाव से उनको देखा जाए? जैसे - एकबार एक महात्मा ने अपने शिष्य को एक मणि देकर कहा कि इसे बाजार में ले जाकर सभी प्रकार के दुकानदारों से इसका मूल्य पूछकर आ लेकिन इसको बेचना नहीं। गुरु-आज्ञानुसार शिष्य सर्वप्रथम उस मणि को लेकर एक साग बेचने वाले के पास पहुँचा और उससे पूछा कि इसका तुम क्या मूल्य दोगे? उसने देखा कि यह चमकता हुआ पत्थर है अत: वह बोला कि इसके बदले में दो मूली दे देंगे। मणि का मूल्य दो मूली सुनकर वह शिष्य आगे बढ़ा और एक बनिया के पास पहुँचा और बोला कि मेरे पास यह चमकीला पत्थर है, तुम इसका क्या मूल्य दोगे। बनिया बोला कि इसके बदले एक किलो चीनी दे दूँगा। शिष्य बोला कि मुझे इसे बेचना नहीं है। इसके बाद वह सुनार के पास पहुँचा और उससे पूछा - "भाई! इस चमकीले पत्थर को देखो, यह क्या है?" सुनार ने सोचा कि यह तो अंगूठी में जड़ने लायक कोई कीमती नग है, वह बोला इसके बदले में मैं तुम्हें एक हजार रुपया दूँगा। शिष्य बोला कि मुझे बेचना नहीं है। वहाँ से वह एक जौहरी के पास गया और उसे भी वह मणि दिखाकर बोला कि तुम इसका क्या मूल्य दे सकते हो। जौहरी ने मन में सोचा कि यह तो लाखों रुपये का हीरा है। वह बोला कि इसके बदले में मैं पचास हजार रुपये दूँगा। शिष्य ने कहा कि मुझे इसे बेचना नहीं है। तदनन्तर वह राज-जौहरी के पास गया और उसे भी वह मणि दिखाकर उसकी कीमत पूछी तो राज-जौहरी सोचने लगा ओहो ! ऐसा ऊँचा रत्न तो दुनिया में है ही नहीं। वह बोला कि मैं इसका मूल्य दस करोड़ रुपये दे दूँगा। शिष्य ने कहा कि मुझे बेचना नहीं है।अब जैसे उस महात्मा के शिष्य द्वारा बाजार में रत्न का मोल पूछने से रत्न की महिमा प्रकट हुई, वैसे ही भगवन्नाम की महिमा हम जैसे साधु लोग तो दो पैसे की मूली में बेच देते हैं। कैसे बेचते हैं? पहले एक घंटे कीर्तन करेगें और उसके बदले में १०० रुपया दक्षिणा तथा वस्त्र लेते हैं, प्रात:काल बाल भोग में हलुआ मिलता है, इस प्रकार हरिनाम को मूली की तरह बेच देते हैं, कथाकार भी कथा करने के लिए पहले से पैसा तय कर लेते हैं। जिस प्रकार मणि की प्रत्येक दुकान पर जाकर कीमत पूछने से अंत में उसकी वास्तविक महिमा प्रकट हुई कि यह इतनी कीमती है, इसी प्रकार भगवन्नाम की परख करने वाला, उसकी महिमा जानने वाला कोई-कोई ही होता है। जैसे

नाम प्रभाउ जान सिव नीको।
कालकूट फलु दीन्ह अमी को॥

(रामचरितमानस, बालकाण्ड - १९)

शिवजी नाम की महिमा जानते हैं, तभी तो उन्होंने नाम के प्रभाव से कालकूट विष को अमृत बना दिया। महिमा जानने के बाद ही विश्वास होता है, जैसे

जानें बिनु न होइ परतीती। बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती।।

(रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड - ८९)

बिना जाने विश्वास नहीं होता। जब आपको पता लग जाता है कि यह आदमी अच्छा है तब आप उसे अपने कमरे में भी बिठा लेगें, कोई शंका नहीं करेंगे, उसके सामने ही तिजोरी से पैसा निकालेंगे-रखेंगे। जब जान-पहचान नहीं है तो विश्वास नहीं होगा और उससे प्रेम नहीं करेंगे। विश्वास हो गया तो प्रेम भी करेगें। इसलिए पहले स्वरूप का ज्ञान होना चाहिए। कोई भी वस्तु है तो पहले उसकी कीमत व महिमा को जानना बहुत आवश्यक होता है। इसी प्रकार कोई आदमी है तो यह जानना जरूरी होता है कि उसका क्या स्वरूप है? स्वरूप जानने के बाद विश्वास होता है और विश्वास के बाद प्रेम होता है अन्यथा किसी रास्ते चलते अनजान व्यक्ति पर न कोई विश्वास करता है और न कोई प्रेम करता है। इसीलिए गोस्वामी तुलसीदासजी ने कहा है

जानें बिनु न होइ परतीती। बिनु परतीति होइ नहिं प्रीती।।
प्रीति बिना नहिं भगति दिढ़ाई।
जिमि खगपति जल कै चिकनाई।।

(रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड - ८९)

प्रेम नहीं होगा तो भक्ति कहाँ से आ जायेगी ? अब जैसे हम लोगों का प्रेम लड्डु-पेड़ा, भोगों और धन में है तो भक्ति कहाँ से आ जायेगी? हमारा प्रेम तो लड्डु-पूड़ी में है और हम चाहते हैं कि हमें श्रीजी के प्रेम की प्राप्ति हो जाए। हमारा प्रेम तो पैसे में है, ऐसी स्थिति में प्रभु में प्रेम कैसे होगा ? पैसे में प्रेम क्यों है ? क्योंकि विश्वास है कि जेब में पैसा है तो कुछ भी मनचाही वस्तु खरीद सकते हैं, इसी तरह भोगों में प्रेम क्यों है, क्योंकि यह विश्वास हृदय में जमा है कि भोग से आनंद की प्राप्ति होती है, हृदय में इस तरह की एक धारणा बन चुकी है। धन, भोगादि दु:खरूप हैं, ऐसा किसी को विश्वास ही नहीं है। काकभुशुण्डिजी गरुड़जी से कहते हैं **"जिमि खगपति जल कै चिकनाई॥"** न्यायशास्त्र में और वैशेषिक में पंचतत्वों का वर्णन किया गया है, उसमें बताया गया है कि पृथ्वी क्या है? जो गंधवती है, वह पृथ्वी है क्योंकि उसका लक्षण गंध है। जल क्या है? जल का गुण है रस। जैसे - जो पिता है, वही पौत्र भी है। शब्द तन्मात्रा से आकाश उत्पन्न हुआ और उसका गुण, उसका बेटा भी आकाश हुआ, पिता भी आकाश था। इसी तरह से स्पर्श तन्मात्रा से वायु उत्पन्न हुआ, उसका बेटा भी स्पर्श हुआ। उसी प्रकार रूप तन्मात्रा से तेज उत्पन्न हुआ। रूप तन्मात्रा तेज का पिता हुआ और तेज का बेटा, तेज का गुण भी रूप हुआ। उसी तरह रस तन्मात्रा से जल उत्पन्न हुआ और उसका गुण, उसका बेटा भी 'रस' हुआ किन्तु वह 'रस' जब गाढ़ होता है तो चिकना हो जाता है। उसी प्रकार जैसे-जैसे प्रीति गाढ़ी हो जायेगी, वैसे-वैसे भक्ति का आकार बदलता जाता है। जैसे - रस गाढ़ होते-होते स्निग्धता में, चिकनापन में आ जाता है, वैसे ही जहाँ पर प्रीति गाढ़ी हो जाएगी, वहीं स्नेह उत्पन्न हो जाएगा। रुपया में, भोग में, स्त्री में, लड्डुआ-पेड़ा में, मान-सम्मान आदि में जहाँ भी हमारी रुचि गाढ़ हो जाती है, वहीं पर प्रीति पैदा हो जाती है और वही प्रीति भगवान् में होने पर भक्ति बन जाती है तथा संसार में होने पर प्राकृत काम का रूप बन जाती है, जिससे भगवद्विमुख हो जाता है। इसलिए पहले किसी वस्तु का स्वरूप जाना जाता है, जैसे - धाम में रहने के लिए धाम की महिमा को सुनना चाहिए, वैसे ही नाम-कीर्तन, नाम-जप से पहले नाम की महिमा को सुनना या जानना चाहिए। जैसे रूप तन्मात्रा से तेज प्रकट हुआ और तेज का गुण रूप जब अच्छा बन गया तो हमारा मन उसकी ओर खिंचने लगा और उसमें ग्राहकता आ गयी, आकर्षण होने लगा। सभी इन्द्रियाँ उसे ग्रहण करने लगीं, वैसे ही जब रस गाढ़ होकर स्निग्ध बन गया और उसमें घी-बूरा डाल दिया तो आप उसे चाटने लगेंगे, प्रीति हो जायेगी। रसगुल्ला खाने को मिलेगा तो आप अत्यन्त रुचिपूर्वक उसे खाने लगेंगे, वह प्रीति का आधार बन गया, उसमें ग्राहकता आ गयी, स्थूल इन्द्रियाँ भी उसे पकडनें लग गयीं। दुनिया की हर जीभ चिकनाई पसन्द करती है। ऐसा उदाहरण गोस्वामी जी ने इसलिए दिया है क्योंकि हम जैसे इन्द्रियलोलुप लोग साधु बन जाते हैं तो जिह्वा इन्द्रिय की आसक्ति में भोजन की पंगतों में खूब दौड़ते रहते हैं, लेकिन जब दो घंटे कीर्तन करते हैं तो उसमें कोई आस्वाद नहीं मिलता है, थक जाते हैं। नाम-संकीर्तन का आस्वाद नहीं मिलता है क्योंकि प्रीति की दृढ़ता नहीं है। भक्ति में स्वाद तभी आएगा जब उसमें हमारी प्रीति हो जाएगी, उसके बिना तो यही हाल होगा जैसे किसी दुकान पर एक सेठजी माल लेकर बैठे थे, इतने में कोई ग्राहक आया और बोला - "सेठ ! चीनी क्या भाव है ?" सेठ जी बोले - "यह पचास रुपये किलो वाली चीनी है और यह पचपन रुपये किलो वाली चीनी है।" ग्राहक कहता है कि इतनी महँगी देता है, मुझे ठग रहा है। सेठ कहता है - "अरे, यह चीनी कितनी बढ़िया है और ५०-५५ रुपये में मुझे तो कुछ भी फायदा नहीं मिल रहा है - राधेश्याम राधेश्याम राधेश्याम .....।" वह सेठ 'राधेश्याम-राधेश्याम' जपता जा रहा है, उसकी माला भी चल रही है परन्तु आस्वाद तो उसको ५० या ५५ रुपये में हो रहा है, भगवन्नाम का आस्वाद तो उसको नहीं हो रहा है क्योंकि उसकी प्रीति रुपये में है। अब नाम का आस्वादन उसको कैसे हो सकता है? यह है भाव की चिकनाई। जब वस्तु चिकनी होती है अर्थात् मधुरता गाढ़ होती है तब वह आपको आनंद देगी। भगवन्नाम के लिए कहा गया कि नाम अमृत से भी अधिक मीठा है

रस सागर श्रीगोविन्द नाम है, रसना जो तू गाये।
तो जड़ जीव जनम की तेरी, बिगड़ी हू बन जाये।।
परम मधुर यह नाम अमृत तज, काहे विष फल खाये।
जो तू खावे नाम अमृत फल, जीव अमर हो जाये।।

सब कहते हैं कि नाम अमृत से भी मीठा है लेकिन जिस समय रसगुल्ला आता है, उस समय नाम-जप या कीर्तन छूट जाता है क्योंकि जीभ को रसगुल्ला का आस्वाद मिलता है परन्तु भगवन्नाम का स्वाद नहीं मिलता है। नाम का स्वाद तब मिलेगा जब उसमें प्रीति हो जायेगी। प्रीति कब होगी, जब हम नाम का स्वरूप समझेंगे।

जैसे – समझने के लिए एक उदाहरण है कि एकबार एक लड़की किसी लड़के के साथ भाग गयी, जिसके साथ उसका प्रेम हो गया था। उसके परिवार के लोग बहुत परेशान हुए और अंत में उसकी सहेली के पास गए जिसके साथ उस लड़की की अधिक मित्रता थी। वह लड़की बोली कि मुझे तो पता नहीं कि वह कहाँ गयी? मुझे तो वह कॉलेज में मिली थी और मैंने उससे कहा कि मुझे अपनी पुस्तक दे दो। मैं उसकी पुस्तक ले आई हूँ और पढ़ रही हूँ। परिवार के सदस्य बोले – "लाओ, वह पुस्तक हमें दो।" उन लोगों ने पुस्तक को देखा तो उसमें एक पृष्ठ के किनारे उस लड़के का नाम लिखा था। जीव का स्वभाव है कि जिससे प्रेम होता है तो भूलचूक में उसका नाम अवश्य स्मरण करेगा, लिखेगा। इसी प्रकार उस लड़की ने भी अपने प्रेमी का नाम पुस्तक के किसी कोने में लिख रखा था। नाम के आधार पर उन लोगों ने पता लगा लिया कि हमारी लड़की उस लड़के के साथ गयी है। वह लड़की अपने प्रेमी का नाम बार–बार पुस्तक पर लिखती थी क्योंकि उस नाम वाले से उसे प्रेम था। मान लीजिये किसी लड़के का नाम है दीनदयाल तो उससे प्रेम करने वाली लड़की दीनदयाल नाम लिखेगी क्योंकि व्यक्ति दीनदयाल का स्वरूप उसके सामने है, उससे प्रीति है, उस प्रीति का आधार विषय–भोग है, इसलिए उस लड़के के नाम से भी लड़की को प्रेम हो जाता है, नामी के कारण नाम से प्रेम हो गया। जब प्रेम हो जाता है तो प्रेमी के नाम में आस्वाद आता है। इसी को स्निग्धता या चिकनापन भी कहते हैं। इसीलिए गोस्वामी जी ने कहा है हमारा भगवान् में प्रेम नहीं है इसीलिए हमें उनके नाम में आस्वाद की प्राप्ति नहीं होती है। जब भगवान् से हमारी प्रीति हो जायेगी तब उनके नाम में हमें आस्वाद होगा। लौकिक प्रेमियों को भी प्रीति के कारण अपने प्रेमास्पद के नाम में आस्वाद आता है। उसी तरह से धाम के बारे में भी प्रभाव कहा गया है

अवध प्रभाव जान तब प्रानी। जब उर बसहिं रामु धनुपानी।।

(रामचरितमानस, उत्तरकाण्ड ९७)

गोस्वामी जी ने कहा है कि जब धामी में प्रेम होता है तब धाम में प्रेम होता है, ये नियम है। नामी में प्रेम होगा, तब नाम में प्रेम होगा। संसार में तो नाम व नामी में भिन्नता होती है। मृत्यु के बाद हमारा नाम भी मिट जाएगा। संसार में सभी वस्तु मिथ्या है लेकिन भक्तिमार्ग में नाम और नामी में अभेद है। इसलिए जब तक नामी सामने नहीं आता, उसका रूप नहीं दिखाई पड़ता तब तक आप नाम का स्मरण कीजिये तो नामी हृदय में आ जाएगा, सामने नहीं पहले हृदय में आएगा अर्थात् – नामी को प्राप्त करने का साधन नाम है। क्यों है? क्योंकि नाम, नामी में अभिन्नता है, संसार वाला सम्बन्ध नहीं है। संसार में तो नामी ही मिथ्या है, अतः नामी का नाम भी मिथ्या है। अध्यात्म जगत में नामी सत्य है तो नाम भी सत्य है।

इसी प्रकार धामी तो हमारे समक्ष नहीं है, ऐसी अवस्था में धामी व धाम की महिमा का नित्य–निरन्तर श्रवण करना चाहिए, जिससे धामी और धाम के प्रति सहज ही सुदृढ़ विश्वास व प्रीति उत्पन्न होकर उसका स्वरूप हृदय में प्रकट हो जाएगा।

श्रीराधारानी ब्रजयात्रा का शुभारम्भ

मानमन्दिर बरसाना से श्रीराधारानी ब्रजयात्रा का ३ अक्टूबर से शुभारंभ हुआ। इस यात्रा में भारतवर्ष के सुदूर प्रान्तों से १५,००० से अधिक श्रद्धालु भक्तगण सम्मलित हैं। उनकी संख्या प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। यात्रा के प्रथम दिन पूज्य श्रीबाबामहाराज की सन्निधि में समस्त ब्रजयात्रियों को श्रीराधामानबिहारीलाल एवं गौमाता के पूजन के साथ ब्रजयात्रा का संकल्प दिलाया गया। अनन्तर प्रथम दिवसीय यात्रा में ब्रजयात्रियों ने मानगढ़, दानगढ़, मयूरकुटी, विलासगढ़, साँकरीखोर, माहेश्वरी सर, दोहिनी कुण्ड व माताजी गौशाला का दर्शन किया। इसके पश्चात् ४ अक्टूबर को ब्रज–परिक्रमार्थियों ने श्रीराधारानी की सर्वाधिक प्रिय सखी ललिताजी के ग्राम ऊँचा ग्राम की यात्रा की, जहाँ उन्होंने ललिताजी व श्रीकृष्ण के विवाह स्थल 'ब्याहुला' का दर्शन किया। इसके अतिरिक्त ऊँचा गाँव के अन्य स्थलों में देह कुण्ड, ललिता अटा, त्रिवेणी कूप एवं श्रीनारायणभट्टजी द्वारा प्रकटित श्री बलरामजी–रेवतीजी के अर्चा विग्रहों का दर्शन किया, इसके बाद बरसाने के अन्य स्थलों सोनोखर, पीलीपोखर (प्रियाकुण्ड) एवं वृषभानु कुण्ड का दर्शन करते हुए श्रीजी की अष्ट सखियों में चित्रा सखी के ग्राम चिकसौली में प्रवेश किया, वहाँ से यात्रा अपने पड़ाव स्थल पर वापस लौट आयी। संध्याकालीन सत्संग में व्यासाचार्या बालसाध्वी मुरलिकाजी ने इन सब स्थलियों की लीला का शास्त्र–प्रमाण से वर्णन किया, जिसे सुनकर ब्रजयात्रीगण ब्रजभाव में निमग्न हो गए।

मोहविभंजनी श्रीगीताजी

श्री बाबा महाराज के सत्संग 'श्रीमद्भगवद्गीता' (१०,११/१/२०१२) से संग्रहीत

द्वितीय अध्याय का माहात्म्य :-

आत्मज्ञान की प्राप्ति

दक्षिण दिशा में वेदवेत्ता ब्राह्मणों के पुरन्दरपुर नामक एक ग्राम में देवशर्मा नामक एक विद्वान ब्राह्मण रहते थे। उन्होंने अनेकों यज्ञों तथा सत्कर्मों का अनुष्ठान किया, दीर्घकाल तक देवताओं को तृप्त किया परन्तु उन्हें शान्ति नहीं मिली। तदनन्तर वह प्रतिदिन साधुजनों की सेवा करने लग गए। एक बार उनके घर पर एक त्यागी महात्मा का आगमन हुआ, देवशर्मा ने उन्हें प्रणाम करके कहा- "महाराज! मैं अत्यंत दु:खी हूँ, मुझे शान्ति किस प्रकार मिलेगी?" देवशर्मा की बात सुनकर वह तपस्वी महात्मा बोले-"चिन्ता मत करो, तुम्हें शान्ति की प्राप्ति होगी। मित्रवान नामक एक बकरियों का चरवाहा, जो सौपुर ग्राम में निवास करता है, उसके पास जाओ, वह तुम्हें ज्ञानोपदेश करेगा तब तुमको शान्ति की प्राप्ति होगी।" उन महात्मा की बात को सुनकर देवशर्मा सौपुर ग्राम में पहुँचे, उसके उत्तरी भाग में स्थित एक विशाल वन में नदी के किनारे एक शिला पर 'मित्रवान' आसीन थे। मित्रवान ने देवशर्मा का सत्कार किया। देवशर्मा ने उनसे कहा - "मैं आत्मज्ञान प्राप्ति के लिए आपके पास आया हूँ, कृपा करके मुझे उपदेश दीजिये ।" देवशर्मा की बात सुनकर मित्रवान ने एक क्षण तक विचार करने के उपरान्त कहा- "एकबार की बात है कि मैं वन के भीतर बकरियों की रक्षा कर रहा था, इतने में ही एक भयंकर बाघ वहाँ आया, उसे देखकर भय के कारण मैं वहाँ से भाग गया किन्तु एक बकरी पूर्णतया निर्भय होकर उस बाघ के निकट जा पहुँची। बकरी को निर्भय देखकर बाघ भी अपने द्वेष का त्याग कर चुपचाप खड़ा हो गया। बकरी बोली- 'हे व्याघ्र! तुम्हें तो स्वत: भोजन प्राप्त हो गया है। मेरे शरीर से माँस निकाल करके खा जाओ, खड़े क्यों हो?' बाघ बोला - 'हे अजा ! तुम्हारे आते ही मेरे मन से द्वेष का नाश हो गया, भूख-प्यास मिट गयी, अब मैं तुम्हें खाना नहीं चाहता।' बकरी ने कहा- 'मैं भी निर्भय कैसे हो गयी, क्या तुम्हें इसका कारण पता है?' बाघ ने कहा - 'मैं नहीं जानता, चलो सामने खड़े इन महापुरुष से पूछें।' उन दोनों के स्वभाव में इस अद्भुत परिवर्तन को देखकर मैं अत्यंत आश्चर्यचकित था। इतने में उन दोनों ने मेरे पास आकर अपने स्वभाव में हुए इस विचित्र परिवर्तन का कारण पूछा। वहाँ वृक्ष पर एक वानर बैठा था। मैंने उस वानर से ही यही प्रश्न पूछा तब उसने कहा - प्राचीन समय की बात है, इस वन के भीतर एक बहुत विशाल मंदिर है, उसमें ब्रह्माजी के द्वारा स्थापित किया गया एक शिवलिंग है। पुरातन काल में यहाँ सुकर्मा नामक एक विद्वान् महात्मा रहते थे, जो इस मंदिर में उपासना करते थे। वह वन से पुष्प चयन करके लाते और भगवान शिव की पूजा किया करते थे। बहुत समय पश्चात् उनके पास एक अतिथि आया, सुकर्मा ने भोजन हेतु फल लाकर उन्हें अर्पित किये और कहा -"मैं तत्वज्ञान-प्राप्ति के उद्देश्य से प्रतिदिन भगवान् शिव की आराधना करता हूँ, आज इस आराधना का फल मुझे मिल गया क्योंकि आप जैसे महापुरुष का मुझे दर्शन हुआ।" उनकी बात सुनकर उन महात्मा को बहुत प्रसन्नता हुई, उन्होंने एक शिलाखंड पर गीता के द्वितीय अध्याय को लिख दिया तथा सुकर्मा को उसके पाठ और अभ्यास करने की आज्ञा देते हुए कहा कि तुम्हारा आत्मज्ञान-प्राप्ति का लक्ष्य इसी द्वितीय अध्याय के पाठ से पूर्ण हो जायेगा।' ऐसा कहकर वह महात्मा अंतर्धान हो गए। विस्मित होकर सुकर्मा ने उन महात्मा के आदेशानुसार उस शिलाखंड पर गीता के द्वितीय अध्याय का अभ्यास किया और ऐसा करने पर उन्हें आत्मज्ञान की प्राप्ति हो गई, तत्पश्चात् वह जहाँ-जहाँ भी गए, वहाँ-वहाँ का तपोवन प्रशांत व आनन्दप्रद हो गया, मायिक विकार की बाधाएँ राग-द्वेष, सर्दी-गर्मी आदि बिल्कुल नष्ट हो गईं। सुकर्मा की इस आश्चर्यजनक उपलब्धि का वृत्तान्त सुनकर मित्रवान, बकरी और बाघ उस मंदिर के भीतर गए जहाँ शिलाखंड पर गीता का द्वितीय अध्याय लिखा हुआ था, मित्रवान ने उसे देखा और उसका पाठ किया तो उन्हें भी आत्मज्ञान की प्राप्ति हो गयी। इस प्रकार से यह गीता के द्वितीय अध्याय के पाठ का अद्भुत चमत्कार था। इसी तरह जो भी मनुष्य गीता के द्वितीय अध्याय का श्रद्धा के साथ पाठ करता है तो उसे अवश्य आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है और वह माया से मुक्त हो जाता है।

अध्याय -२

श्लोक

१. संजय द्वारा मोहज दयामय अर्जुन की स्थिति का कथन

संजय उवाच-

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम।
विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदन: ॥१॥

अन्वय - "तं मधुसूदन: इदं वाक्यं उवाच।" उस अर्जुन से मधुसूदन ये वाक्य बोले। कैसा अर्जुन था? विषीदन्तम् - जो दु:ख कर रहा था। हृदय में मोहजनित वेदना को शोक कहते हैं। कृपयाविष्टम् - कृपा से भरा हुआ था, अश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् (अश्रुपूर्ण आकुल एक्षणम)- आँसुओं से भरे हुए व्याकुल नेत्र । आँसू इतने आ गए थे कि उसकी ईक्षण 'दृष्टि'आँसुओं से आकुल 'भर गई'थी दिखाई नहीं पड़ रहा था, इतने आँसू निकल रहे थे। अर्जुन के मन में मोह के कारण कृपा का आवेश है, २ प्रकार की कृपा होती है - एक मोहज और एक ज्ञानज। संसार में हर माँ अपने बेटे पर दया करती है, वह मोहज दया है। दया करना भी मोह (अन्धकार) है,

जिससे विवेक रूपी प्रकाश चला जाता है। बच्चा मरने पर माँ रोती है, वह मोहज विलाप है, मोह के कारण रोती है। संसार में शोक और मोह दो चीजें हैं जो मनुष्य को विवेकहीन बना देते हैं। संतजन दया करते हैं ज्ञान से, संतों की कृपा से विवेक 'भक्तिमय प्रकाश' मिलता है।

अर्जुन मोहज दया से भरा हुआ था और आँसुओं के कारण दिखाई नहीं पड़ रहा था उसको, इतने आँसू थे। बाहर आँसुओं के कारण दिखाई नहीं पड़ रहा है, भीतर मोह के कारण कुछ समझ में नहीं आ रहा है, बाहर की भी दृष्टि बन्द और भीतर की भी दृष्टि बन्द। ऐसी विषम परिस्थिति सूरदासजी ने भी कही है – **सूर कहा कहै द्विविध आँधरो, बिना मोल को चेरो।** 'हम तो दोनों प्रकार से अन्धे हैं, बाहर की आँख भी गयी, भीतर की भी गयी।' यहाँ यह दिखाया गया है कि अर्जुन के अन्दर ऐसा मोह था कि इतने अधिक आँसुओं के आने से उसकी बाहर की भी आँख बंद है और मोहज दया से भीतर की भी आँख बंद है, ऐसी स्थिति में वह अन्दर–बाहर से अंधे (द्विविध आँधरे) हैं। 'कृपयाविष्ट' और 'अश्रुपूर्णाकुलेक्षणम' अर्जुन के विशेषण हैं । कृपयाविष्टम् – भीतर की आँख फोड़ दिया मोह ने (शोक और मोह के द्वारा अंतः दृष्टि चली गई), अश्रुपूर्णाकुलेक्षणम्– बाहरी आँख भी फूट सी गयी तो ये वही बात हो गयी– ''सूर कहा कहै द्विविध आँधरो'' दोनों दृष्टि चली गयी, अर्जुन के अन्तः – बाह्य की ऐसी अवस्था में भगवान् मधुसूदन ने कहा। ('मधुसूदन' – श्री कृष्ण) 'मधु' सारतत्त्व को कहते हैं, फूलों के रस से शहद बनता है जो 'सार' होता है, भौंरा उसी मधु को खाता 'सूदन करता' है तो उसको भी 'मधुसूदन' कहते हैं अथवा समस्त सारतत्त्व के सिद्धान्त को जो खाता है, भोगता है वह मधुसूदन 'कृष्ण'।

श्लोक –२

श्रीभगवानुवाच

कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थित।
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन॥

श्रीभगवान् बोले – कुतः– कहाँ से, त्वा– तुमको, इदं कश्मलम्– ये मोह (मैल), विषम– असमय में (ठीक समय में नहीं), समुपस्थित– उपस्थित हुआ है। ये कैसा मैल है? अनार्यजुष्टम् –आर्य (श्रेष्ठ), अनार्य (हीन लोगों) से, जुष्ट– सेवित है, कीर्तिकर– नाम देने वाला, अकीर्तिकरम्– बदनामी देने वाला है, अस्वर्ग्यम्– नरक देने वाला है (स्वर्ग्य– स्वर्ग्य देने वाला, अ– नहीं) अर्थात् ये रास्ता नरक का है, बदनामी का है और नीच पुरुषों से सेवित है। ये 'अकीर्तिकर' दोनों के लिए है, गुरु–चेला दोनों के लिए है, तुम्हारी ही नहीं, हमारी भी बदनामी है। लोग क्या कहेंगे? किसी डरपोक के हिमायती बनकर आये थे कृष्ण और ठीक समय पर उसका गाण्डीव हाथ से गिर गया और हाथ काँपने लग गया। (यह प्रसंग पहले अध्याय में वर्णित है, अर्जुन ने कहा था कि मेरे अंग ढीले हो गए हैं, हाथ–पाँव,मुख सूख रहा है, शरीर में कंप हो रहा है ।

अर्जुन उवाच

दृष्टवेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम्॥
सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति।
वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते।
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चौव परिदह्यते।
न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः।

(श्रीमद्भगवद्गीता १/२८,२९, ३०)

गाण्डीव धनुष हाथ से गिर रहा है, शरीर में दाह हो रहा है, खड़ा नहीं रह सकता हूँ मैं, चक्कर आ रहा है। दोनों सेना के लोग देख रहे हैं कि अर्जुन काँप रहा है, रोंगटे खड़े हो गए हैं। ये सब चीजें अकीर्तिकर हैं, बदनामी कराने वाली हैं और नरक देने वाली हैं। क्यों बदनामी है? ५–६ कारण बताये (गीता १/२९,३०) ये सब लक्षण सब लोग देख रहे हैं, जो हमारी बदनामी करायेंगे और तुम्हारी भी करायेंगे। हमारी इसलिए बदनामी होगी कि हम द्वारिकाधीश हैं और संसार की सबसे बड़ी गद्दी है द्वारिका, कभी भी यदुवंशी हारे नहीं, पीछे नहीं हटे, सारा कुल कलंकित हो जाएगा हमारा। ये जो यश है

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥

(गीता १८/७८)

'जहाँ कृष्ण व अर्जुन हैं, वहाँ श्री व विजय है।' यह सुयश नष्ट हो रहा है क्योंकि पहले ही तुम हार गए हो, युद्ध से भाग रहे हो,अकीर्ति तो पहले ही मिल रही है। अकीर्ति से नरक भी होता है। एक दृष्टान्त है दो व्यक्ति मरे और दोनों का जुलूस निकला बड़े धूम–धाम से। तो वहाँ कुछ लोग खड़े थे, उन्होंने पूछा कि कौन इसमें से नरक को गया है? कौन स्वर्ग को गया है? तो वहाँ एक वेश्या खड़ी थी, उसने कहा कि इसका फैसला मैं करूँगी। उस वेश्या ने जाकर के जो मनुष्य पहले मरा था, उसके पड़ोसियों से पूछा कि भाई! ये आदमी मरा है, इसका तुमको दुःख है? तो लोगों ने कहा कि नहीं, हम बड़े खुश हैं,यह बड़ा दुष्ट था, सबको सताता था, लड़ता–झगड़ता था। इसके बाद उसने जो दूसरा मनुष्य मरा था, उसके पड़ोसियों से पूछा – "अरे भाई! ये आदमी मरा, इसका तुमको दुःख है?" वे सब बोले– "बहुत ज्यादा दुःख है, बड़ा भला (बहुत अच्छा) आदमी था।" यह सुनकर उस वेश्या ने फैसला दिया–"इस जीव की अकीर्ति है, इसलिए यह नरक को गया है। उस जीव का सुयश है, इसलिए वह स्वर्ग को गया है।" तो **'अस्वर्ग्यम्–अकीर्तिकर'** का जोड़ा है। मनुष्य को ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए कि अकीर्ति फैले, उससे अस्वर्ग्य (नरक) की प्राप्ति होती है। हर मनुष्य को पुण्य यश वाला होना चाहिए ।

भक्त-आसक्ति से भव-मुक्ति

(व्यासाचार्या ब्रजबालिका साध्वी मुरलिका जी, मान मन्दिर, गह्वर वन, बरसाना)

कलियुग की ही लगभग ५०० साल पुरानी घटना का एक भावमयी भक्ति प्रदायक वृत्तान्तका वर्णन श्रीभक्तमाल में वर्णित है।श्री रामानुजाचार्य जी महाराज के एक शिष्य हुए हैं श्री लालाचार्य जी महाराज। लालाचार्य जी ने रामानुजाचार्य जी से दीक्षा ली तो दीक्षा के बाद गुरुदेव 'शिष्य' को कोई न कोई उपदेश जरूर देते हैं। लालाचार्य जी ने रामानुजाचार्य जी महाराज से प्रार्थना की-हे भगवन्! आप मेरे लिए उपदेश बतावें, आज्ञा करें। श्री रामानुजाचार्य जी ने लालाचार्य जी से कहा- "भैया! कलिकाल में तो भगवद्भक्त व भगवन्नामका आश्रय लेकर ही भव सागर से पार हुआ जा सकता है, अगर हो सके तो भगवान् के भक्तों को भगवान् से भी करोड़ों गुना अधिक मानना।" लालाचार्य जी ने हाथ जोड़कर निवेदन किया "गुरुदेव! झूठ बोलूँगा नहीं किन्तु ये भाव हम से बन नहीं पाएगा। मैं भक्तों को भगवान् से अधिक नहीं मान पाऊँगा।" श्रीआचार्यजी ने कहा - "ठीक है, भगवान् से बढ़कर नहीं मानो तो भगवान् के समान मानलो।" लालाचार्यजी बोले- "गुरुदेव! झूठ क्यों बोलूं, यह भाव भी मुझ से सिद्ध नहीं होगा।" आचार्यजी बोले-"अच्छा चलो, भगवान् नहीं मानते तो भगवान् के भक्तों को गुरु के रूप में मानो।" लालाचार्य जी ने कहा- "गुरुदेव! सभी भक्तों को मैं गुरु के रूप में भी नहीं देख पाऊँगा। अभी मेरे मन की ऐसी स्थिति नहीं है, आप कोई अन्य उपाय बताएँ।" तो गुरुदेव बोले- "ठीक है, भगवान् के भक्तों को अपना भाई मान लो।" लालाचार्य बोले- "हाँ, ये बात बिल्कुल बन जाएगी।" तभी से श्री लालाचार्य जी का ऐसा प्रेम संत-भक्तों के चरणों में हो गया कि जब भी कोई संतरूप में, साधु-वेष में कण्ठी- माला, चन्दन-तिलक धारण किये हुए दिखाई देता तो साष्टांग दंडवत करते, उसका आलिंगन करते, घर में बुलाते, उसे भोजन कराते तथा सत्संग करते, बिल्कुल भाई के समान ही भक्तों से प्रेम किया करते। एक दिन लालाचार्य की स्त्री कावेरी नदी में स्नान करने गयी तो वहाँ एक मुर्दा बहा हुआ जा रहा था तो किसी पड़ोसिन ने उसकी ओर व्यंग्य-वचन कहा कि अरी! तेरा पति तो हर संत को अपना भाई मानता है, देख! ये तेरा देवर बहा जा रहा है, तू इसका अंतिम संस्कार नहीं कराएगी। इतना सुनते ही वह लौटकर घर में आई और अपने पति श्रीलालाचार्यजीसे कहा ''स्वामी! एक शव बहा हुआ जा रहा था, उसके गले में तुलसी की माला, मस्तक पर चन्दन का तिलक था, तो किसी पड़ोसिन ने मुझसे कहा कि देख तेरा देवर बहा जा रहा है, क्या तू इसका अंतिम संस्कार नहीं करेगी ?" इतना सुनते ही लालाचार्य जी दौड़ते हुए कावेरी के तट पर गये और अथक प्रयास करके उस शव को बाहर निकाला तथा उस शव को अपनी गोद में रखकर दहाड़ मार-मार कर बड़ी जोर से रोने लग गये। ऐसा रुदन किया जैसे कोई अपने भाई के प्रेम में रो रहा हो और फिर उसका विधिवत अंतिम संस्कार किया, जबकि वह उनका कोई परिचित नहीं था फिर भी विधिवत उसकी तेरहवीं की, लेकिन समस्या यह हुई कि जब तेरहवीं की गई तो भंडारे के लिए बहुत-सा भोजन-प्रसाद बनवाया किन्तु गाँव का कोई भी व्यक्ति, कोई ब्राह्मण वहाँ भोजन करने नहीं आया। लोग कहने लगे कि ये तो मूर्ख आदमी है, पता नहीं किसको पकड़ लाया, किस जाति का है, कैसा है, ऐसे अनजान व्यक्ति की तेरहवीं का भोजन कैसे खाया जा सकता है? इस तरह गाँव का कोई भी व्यक्ति, कोई भी ब्राह्मण भोजन करने वहाँ नहीं गया। लालाचार्य जी ने रामानुजाचार्य जी से प्रार्थना की "गुरुदेव! आपके कथनानुसार मेरा प्रेम संत-भक्तों में भाई की तरह तो हो गया किन्तु मेरे भाई की अंत्येष्टि-संस्कार में कोई नहीं आया।" रामानुजाचार्य जी ने कहा- "तुम चिंता मत करो। इनकी तेरहवीं पर तो स्वयं भगवान् के नित्यसिद्ध परिकर आयेंगे।" श्रीगुरुदेव की वाणी सत्य हुई और एकाएक सचमुच ही वैकुण्ठ से ठाकुरजी के नित्य पार्षद लालाचार्य जी के भंडारे में ब्राह्मण का रूप बनाकर आये। अत: कथनाशय है कि श्रीलालाचार्यजी महाराज का भक्तों के प्रति एक विलक्षण भाव और विशेष प्रेममयी स्थिति थी, ऐसा ही चरित्र मिलता है राजा मधुकर शाहजी का, इनका भी संत-वेष मात्र के प्रति ऐसा प्रेम था कि अगर कोई मस्तक पर त्रिपुंड धारण किए, गले में तुलसी माला धारण किये और संत के वेष में दिखाई पड़ जाता तो राजा मधुकर शाह उसे देखते ही उसके चरणों में साष्टांग (भूमिष्ट होकर) गिर पड़ते थे।एक बार कुछ ईर्ष्यालु लोगों ने मन में विचार किया कि राजा की परीक्षा लेनी चाहिए, ये तो किसी व्यक्ति में भी भक्तों के चिन्ह देखते हैं तो वहीं गिर पड़ते हैं भूमि पर, कहीं ऐसा तो नहीं कि केवल ढोंग-ढाँग हो? ऐसा सोचकर कुछ ईर्ष्यालुओं ने एक गधे को माला पहनाकर, मस्तक पर बहुत अच्छा

तिलक लगाकर राजा के सामने उसे खड़ाकर दिया। भक्तमाल जी के शब्द हैं कि राजा मधुकरशाह अपने सामने उस गधे को देखकर साष्टांग भूमि पर गिर गये और उन्होंने कहा –

अब लौ दोय-दोय पाँव के देखे संत अनंत।
चारि चरण के आजु ही देखे संत लसन्त॥

आज तक तो मैंने दो पैर वाले ही संत के दर्शन किए,

आज भगवान् की कृपा से चार चरण वाले संतों का दर्शन हो रहा है।

मेरे प्रभु समर्थ हैं सकै रूप सब धारि।
खर नाहीं वैष्णव खरे प्रभु तुम लेहु उधारि॥

ये खर नहीं है, ये तो खर के रूप में साक्षात वैष्णव खड़े हैं, ये गधा नहीं है, ये तो स्वयं भगवान् हैं।

मच्छ कच्छ सूकर बने भक्त हित भगवान् ।
मधुकर हित गर्दभ बने जैजै कृपानिधान ।।

भगवान् ने आज तक मत्स्यावतार लिया, कूर्मावतार लिया, सारा संसार जानता है पर मधुकर के लिए भगवान् ने गर्दभावतार लिया, ये कोई नहीं जानता होगा। ठाकुर जी कितने कृपालु हैं, ये मेरे लिए गर्दभ रूप में आ गये। इस प्रकार गर्दभ में भी इन्होंने ऐसी भावना देखी। भागवत में कपिल भगवान् कहते हैं- **स एव साधुषु कृतो**.....ऐसा प्रेम संतो में होना चाहिए। ढोंग-ढांग की बात नहीं होनी चाहिए। होता क्या है कि हम लोग औपचारिकताओं में फँसकर वैष्णव अपराध करने लगते हैं। हमारे वैष्णव ग्रंथों में कहा गया है कि ६ प्रकार का भक्तापराध होता है। (१) भक्त को मारना (२) भक्त की निंदा करना (३) भक्त से द्वेष करना (४) भक्त आये हैं तो उनका खड़े होकर अभिनन्दन न करना (५) भक्त पर क्रोध करना और (६) भक्त के आगमन से मन प्रसन्न न होना। कई बार हम लोग औपचारिकताओं में आओ जी, उठोजी, बैठो जी – ये तो बहुत कर देते हैं पर यदि मन नहीं प्रफुल्लित हुआ वैष्णव के पदार्पण से तो औपचारिकताएँ अपराध से नहीं बचा पाएँगी, अपराध लग ही जाएगा। कोरे (केवल) उठोजी, बैठो जी कहने से अपराध से नहीं बच पाओगे। वैष्णव के पदार्पण से मन प्रमुदित होना चाहिए, मन प्रसन्न होना चाहिए। परमानन्द स्वामी जी का एक बहुत सुन्दर पद है–

आये मेरे नन्दनंदन के प्यारे हृदय कमल के मध्य
विराजत, श्री बलराम दुलारे।
न जानूँ कहा पुण्य उदयभयो, मेरे घर जो पधारे।

भक्त-संतजन चलते-फिरते श्रीठाकुरजी के मन्दिर हैं, इसलिये रसिकों ने कहा है – ''साँचे मन्दिर हरि के संत।'' भगवान् ने खुली छूट दे दी है –

प्रसङ्गमजरं पाशमात्मनः कवयो विदुः।
स एव साधुषु कृतो मोक्षद्वारमपावृतम्॥

(श्रीमद्भागवत ३/२५/२०)

मुझमें मन न लगे तो चिंतामत करो किन्तु मेरे जनों में तो मन लगना ही चाहिए लेकिन वो ढोंग-ढांग का न हो, औपचारिकता का ना हो, वास्तव में हृदय से प्रेम होना चाहिए भक्तों के प्रति। कैसे भक्त? कपिल भगवान् कह रहे हैं

तितिक्षवः कारुणिकाः सुहृदः सर्वदेहिनाम्।
अजातशत्रवः शान्ताः साधवः साधुभूषणाः॥

(भागवत ३/२५/२१)

भक्त का सबसे पहला गुण है कि उसे तितिक्षु (सहनशील) होना चाहिए। करुणा का जिनका सहज स्वभाव है, जो प्राणी मात्र के सुहृद हैं। अजात शत्रवः – जिनका दुनिया में कोई शत्रु नहीं है, जो चित्त से (मन से) एकदम शांत है। साधवः साधु भूषणः – ऐसे संतों में दृढ आसक्ति हो जाए, चारो-ओर से मन लग जाए। प्रश्न है अगर संतों में मन लग गया या वैष्णव भक्तजनो में मन लग गया तो लाभ क्या होगा? इसका बहुत बड़ा लाभ बताया गया है। क्या लाभ होगा? कपिल भगवान् कह रहे हैं –

देवानां गुणलिङ्गानामानुश्रविककर्मणाम्।
सत्त्व एवैकमनसो वृत्तिः स्वाभाविकी तु या॥

(भागवत ०३/२५/३२)

जो भक्ति शास्त्र पढ़ने से नहीं मिलेगी, जो भक्ति कोरे यज्ञ व्रतादि साधन करने से नहीं मिलेगी, वही भक्ति संतों का संग करने से सहज ही जीवन में आ जायेगी, सहज रूप में आ जायेगी। जड़ भरत महाराज ने राजा रहूगण से कहा –

रहूगणैतत्तपसा न याति न चेज्यया निर्वपणाद् गृहाद्वा।
न च्छन्दसा नैव जलाग्नि सूर्यैर्विना
महत्पादरजोऽभिषेकम्॥

(श्रीमद्भागवत ५/१२/१२)

अरे राजन् ! इतने दिनों तक समय बर्बाद करते रहे तुम तप, व्रतादि में। बिना **महत्पादरजोभिषेकं**.... संतों की चरण धूलि के बिना, संतों के चरणाश्रय के बिना संसार का कोई साधन और कोई अनुष्ठान कल्याण नहीं कर सकता है। भगवद्भक्तों का आश्रय बहुत आवश्यक है। नारदजी ने भक्ति सूत्र में कहा है- **तदेव**

साध्यतां तदेव साध्यता। (नारद भक्तिसूत्र- ४२) संतों का आश्रय बहुत जरूरी है भक्ति मार्ग में। भक्ति दो प्रकार की होती है १. वैधी भक्ति २. रागानुगा भक्ति। दोनों भक्ति में अंतर है, जैसे घर में कोई नौकर भोजन बनाए और दूसरी ओर माँ भोजन बनाए तो मौलिक रूप से कार्य दोनों का एक ही है। भोजन वह भी बना रहा है और भोजन वह भी बना रही है लेकिन दोनों के बनाने में बहुत अंतर है। नौकर के द्वारा भोजन बनाना तो उसकी नौकरी है तनख्वाह पाने के लिए लेकिन माता के द्वारा जो भोजन बनाया जा रहा है उसमें भाव है कि मेरा बालक उस भोजन से तृप्त हो, वह पुष्ट हो। नौकर के मन में ये भाव नहीं रहेगा। कोई खाए मत खाए, उसे लेना-देना नहीं, उसको तो नौकरी करनी है। इसी प्रकार वैधी भक्ति इस प्रकार की है जैसे नौकर का भोजन बनाना तनख्वाह के कारण है, वैसे ही वैधीभक्ति जो होती है वह सद्गति की इच्छा से होगी या शास्त्र के भय से होगी या दुर्गति से बचने के लिए होगी किन्तु रागानुगा भक्ति जो होती है उसमें भगवान के चरणों में स्वाभाविक प्रेम होता है जैसे माता का भोजन बनाने का लक्ष्य है बालक की पुष्टि वैसे ही रागानुगा भक्ति में भक्त का लक्ष्य है भगवान् की प्रियता प्राप्त करना। वह भक्ति न मोक्ष की इच्छा से है न सद्गति की इच्छा से है और न संपत्ति की इच्छा से। भक्त संग का सबसे बड़ा लाभ यही है कि भगवान् के चरणों में रागानुगा भक्ति हो जायेगी। स्वाभाविक प्रीति रागानुगा भक्ति है, स्वाभाविक प्रेम है। उस स्वाभाविक प्रेम का लाभ क्या है? स्वाभाविक प्रेम का लाभ है -

अनिमित्ता भागवती भक्तिः सिद्धेर्गरीयसी।
जरयत्याशु या कोशं निगीर्णमनलो यथा॥

(भागवत ३/२५/३३)

पहली बात तो यह है कि स्वाभाविक भक्ति मोक्ष से भी बड़ी है। दूसरी बात **जरयत्याशु या कोशं निगीर्णमनलो यथा**- जैसे भोजन करने के बाद हमारे तुम्हारे पेट में एक अग्नि होती है जठराग्नि। उसको अलग से जलाने की जरूरत नहीं पड़ती है, वह तो भगवान् के द्वारा की हुई व्यवस्था है, भोजन करके चाहे सो जाओ, चाहे आप बैठ जाओ, चाहे आप पढो, चाहे कुछ भी करो, जठराग्नि अपना काम कर रही है, वह भोजन को पकाती है। सातों धातुएं बनाती है। ३ दिन में रस बनेगा फिर मेद बनेगा, मज्जा बनेगी, अस्थि बनेगी, वीर्य बनेगा। ये जठराग्नि का कार्य है। उसके लिए हमको तुमको प्रयास नहीं करना पड़ेगा । वैसे ही भक्त का आश्रय करने से भक्ति की प्राप्ति का अलग से प्रयास नहीं करना पड़ेगा। भक्ति रूपी दीपक या भक्ति रूपी अग्नि स्वयं चित्त में प्रज्वलित हो जायेगी। भक्त संग का सबसे बड़ा लाभ यही है और वह भक्ति रूपी अग्नि क्या करेगी? जैसे जठराग्नि भोजन पकाती है, जलाती है वैसे ही ये भक्ति रूपी अग्नि हमारे तुम्हारे अन्दर जो ५ कोष हैं, समझ लो ५ प्रकार के पर्दे हैं, जो भगवान् के साक्षात्कार होने में बाधक हैं। एक अन्नमय कोष है, एक प्राणमय कोष है, एक विज्ञानमय कोष है, एक आनंदमय कोष है और एक मनोमय कोश है। ये पाँच पर्दे हैं जो ईश्वर साक्षात्कार में बहुत बड़े आवरण हैं, बहुत बडी बाधा हैं। भक्त के आश्रय से ऐसी भक्ति हृदय में जागृत होगी कि इन पाँचों आवरणों को नष्ट कर देगी। अब समझो कि ये पांच कोष रहते कहाँ हैं? ये ५ आवरण क्या हैं? जैसे हमारा-तुम्हारा जो स्थूल शरीर है तो किसी का गोरा चर्म है, किसी का काला चर्म है। ये स्थूल शरीर है जो अन्नमय कोष है जो अन्न से बनता और पकता है इसको अन्नमय कोष कहते हैं, उसके भीतर प्राणमय कोष रहता है और उस प्राणमय कोष में ५ प्राण और ५ कर्मेन्द्रियाँ रहती हैं, उसके भी भीतर मनोमय कोष होता है जिसमें ५ ज्ञानेन्द्रियाँ और १ मन होता है और उसके भी भीतर विज्ञानमय कोष होता है जहां बुद्धि रहती है। इन कोषों में इतने तत्व हुए, ५ प्राण, १० इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि, इस प्रकार १७ तत्व हो गए। बहुत से लोग चित्त और अहंकार को भी मान लेते हैं इसलिए १९ तत्व हो जाते हैं। १९ तत्वों का जो समुदाय है उसे सूक्ष्म शरीर कहते हैं। स्थूल शरीर तो हमारा-तुम्हारा दिखाई पड़ रहा है। डाक्टर को भी चीर-फाड़ करनी है या कोई ऑपरेशन करना है तो कर लेगा पर स्थूल शरीर के भीतर जो सूक्ष्म शरीर है वहाँ किसी डॉक्टर की पहुँच नहीं है, वहाँ तो केवल योगियों की पहुँच होती है, भक्तों की पहुँच होती है। स्थूल शरीर तो हमें तुम्हे दिखाई पड़ रहा है, इसके भीतर है सूक्ष्म शरीर जिसमें १७ तत्व हैं और उस सूक्ष्म शरीर के भीतर भी एक शरीर है जिसका नाम है कारण शरीर। ये कारण शरीर ही आनंदमय कोष है। आनंदमय कोष क्या है? कई बार ऐसी-ऐसी स्थितियां देखने को मिलती हैं कि लोग कोमा में चले जाते हैं। अब मन में जिज्ञासा उठती है कि कोमा वाले मनुष्य की स्थिति क्या है, उसे सुख मिल रहा है या दुःख मिल रहा है। वह खुद तो कह नहीं सकता न बता सकता है तो कहीं ऐसा तो नहीं कि सुख-दुःख से उपराम हो गई उसकी स्थिति, नहीं उपराम नहीं है। आनंदमय कोष (कारण शरीर) के द्वारा जीव वहाँ भी सुख-दुःख भोगता है अपने कर्मो के अनुसार। आनंदमय कोष में सुषुप्ति अवस्था है, ऐसी अवस्था जहां न मन है न बुद्धि है तो वहाँ सुख-दुःख को भोगने वाला कौन है? वहाँ सुख-दुःख को भोगने वाली है चेतना, जो आत्मा का प्रकाश है। चेतना ही वहाँ उस समय सुख भी भोगती

है और दु:ख भी भोगती है। उस समय जीव को बहुत अधिक कष्ट होता है, ऐसा ना समझें कि जो कोमा में चला गया है उसे कोई सुख-दु:ख नहीं हो रहा है। वहाँ भी कष्ट होता है, वहाँ भी कर्मो के अनुसार सुख-दु:ख भोगना पड़ता है। अगर बोलने की क्षमता हो तो कह सुनके आदमी सुख-दु:ख को बाँट ले लेकिन जहाँ आदमी बोल नहीं सकता, किसी को अपनी व्यथा सुना नहीं सकता, उसका उपचार करा नहीं सकता वहाँ तो बहुत कष्ट, अनंत गुना ज्यादा हो जाता है। ऐसी स्थिति एक तो जन्म के समय होती है और एक मरण के समय होती है। गर्भ में बंद पिंजरे में जैसे पक्षी बंद है ऐसे ही जीव बंद रहता है, कितना कष्ट हो रहा है, किसी को कह नहीं सकता है किन्तु इतना कष्ट उसे उस समय होता है कि हम तुम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। यह कष्ट भोगा हम सभी ने है परन्तु कल्पना नहीं कर सकते हैं। वही स्थिति मरते समय भी होती है। **कफ, पित, वात, कंठ पर बैठे।** आदमी बोल नहीं पाता है, जिह्वा चिपक जाती है, धातुयें बोलने की क्षमता को नष्ट कर देती हैं। बहुत कष्ट उस समय होता है। **जनमत मरत दुसह दु:ख होई।** गोसाईं जी महाराज ने इसे कहा है। तो उस समय कष्ट का भी अनुभव होता है जीव को और आनंद का भी अनुभव होता है। जैसे कई बार आदमी गहरी नींद में से उठे तो कहता है कि आज बहुत आनंद आया सोने में। आनंद कहाँ से आ गया, तुमको तो होश ही नहीं था। आनंद भोगने वाला वहाँ कौन था? मन नहीं था, बुद्धि नहीं थी, सोये हुए शरीर के ऊपर से साँप निकलकर के चला जाए तो न डर लगता है न चिंता होती है क्योंकि न वहाँ मन है न बुद्धि है, सुषुप्ति में गाढ़ी निद्रा में पहुँच गया है तो जब मन बुद्धि है नहीं तो वहाँ सुख-दु:ख का कौन अनुभव कर रहा है? वहाँ सुख-दु:ख को अनुभव करने वाली चेतना है। जैसे आग में से कभी भी प्रकाश और ताप को दूर नहीं किया जा सकता है वैसे ही चेतना में से ज्ञान शक्ति को कभी दूर नहीं किया जा सकता है चाहे आप कोमा में पहुँच जाओ, चाहे आप मूर्छित हो जाओ, वहाँ भी चेतना सुख-दु:ख का अनुभव करती है और हमने ऐसा सुना है पूज्य गुरुजनों के श्रीमुख से कि गाढ़ निद्रा में नित्य जीव का भगवान् से मिलन होता है। सुषुप्ति की स्थिति में गाढ़ी नींद होती है तो उस नींद के बाद एक अलग प्रकार के आनंद की अनुभूति होती है क्योंकि वहाँ जीव भगवान् से मिलता है किन्तु उसका वह मिलन सावरण मिलन होता है। वहाँ अभी पाँचों कोष हैं अगर साक्षात् मिलन हो जाए तो पाँचों आवरण नष्ट हो जाएँ और सामने भगवान् आ जाएँ तो यह निरावरण मिलन है तथा ये ही साक्षात्कार की स्थिति है। डॉक्टर भी कहते हैं कि गाढ़ी नींद नहीं आई तो पागल हो जाओगे। गाढ़ निद्रा में प्रतिदिन भगवान् से जीव का मिलन होता है। बैटरी चार्ज होती है और यदि गाढ़ी नींद नहीं आये तो आदमी पागल हो जाएगा, दिमाग खराब हो जाएगा लेकिन उस समय जो मिलन होता है वो आवरण सहित मिलन होता है। माया का पर्दा बीच में है, एक तरफ जीव है और दूसरी तरफ ईश्वर। ये आवरण यदि हट जाए तो इसी को साक्षात् मिलन या साक्षात्कार की स्थिति कहा गया है। कबीर दास जी का एक पद है। -

घूंघट के पट खोलरे तोहे राम मिलेंगे।
घट-घट रमता राम रमैया, कटुक बचन मत बोल रे॥
रंग महल में दीप जरत है, आसन से मत डोलरे।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, अनहत बाजे ढोलरे॥

सुषुप्ति में भगवत मिलन आवरण मिलन है, सावरण मिलन है और एक मिलन की वह भी स्थिति होती है कि ठाकुर जी साक्षात आकर खेल रहे हैं जैसे कुम्भन दास जी के साथ खेले, सूरदास जी, तुलसीदास जी के साथ खेले, अनेकानेक भक्तों के साथ क्रीडाएं कीं, धन्नाजाट के साथ खेले, त्रिलोचन भक्त के साथ खेले। ये माया रहित मिलन है। मिलन हमारा तुम्हारा भी प्रतिदिन हो रहा है पर वह माया सहित मिलन है परन्तु भक्तों का जो मिलन है वह माया रहित मिलन है। माया सहित मिलन क्या है? ये ५ कोष जब तक हमारे तुम्हारे नष्ट नहीं हुए हैं-अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, विज्ञानमय कोष, मनोमय कोष और आनंदमय कोष। जब तक ये पांच-पांच पर्दे हैं तब तक जो भी अनुभूति होगी वह सब सावरण अनुभूति और सावरण मिलन कह लायेगी। लेकिन कपिल भगवान् कह रहे हैं कि भक्तों के आश्रय का ही यही परम फल है। उनके आश्रय से चित्त में जो भक्ति जगेगी, वो सबसे पहले इन पाँचों कोषों को नष्ट करेगी। ये भक्ति अपने आप शास्त्रों के पढ़ लेने से या अपने आप कोई भी साधन या अनुष्ठान करने से नहीं मिलेगी। ऐसी भक्ति जो माया का नाश कर दे वह तो माया मुक्त भक्तों के ही संग से प्राप्त होगी। इसीलिये कपिल भगवान् कह रहे हैं **'स एव साधुषु कृतो'** मुझ में मन नहीं लगा सकते तो कोई चिंता की बात नहीं है किन्तु मेरे जनों में तो मन लगाते ही रहना, लगाते ही रहना। स्वाभाविक भक्ति, रागानुगा भक्ति का हृदय में अभ्युदय हो जाएगा, जो किसी साधन से या किसी भी अपने प्रयास से नहीं हो सकता है।

रानी झालीबाई की गुरु भक्ति

(श्री बाबा महाराज के एकादशी–सत्संग (२८/११/२००९) से संग्रहीत)

संकलनकर्त्री/लेखिका – साध्वी जयाजी, दीदी माँ गुरुकुल (मान मंदिर) की छात्रा

जिसके अन्दर भक्ति आ जाती है, उसको भगवत प्रेम मार्ग में आगे बढ़ने से रोकने वाला कोई नहीं है। हिरण्यकशिपु ने बहुत कोशिश किया लेकिन प्रह्लाद जी की भक्ति अवरुद्ध नहीं हुई। विभीषण जी की भक्ति रावण बाधित नहीं कर सका। श्री मीराजी का गिरिधारीलाल में प्रेम प्रतिक्षण वर्द्धमान होता गया, कभी रुकावट नहीं आई, अनेकों बार उनको मारने के लिए षडयंत्र रचे गए–जहरीली शैया पर सुलाया गया, सर्प भेजे गये, जहर पिलाया गया लेकिन इन विषम परिस्थितियों में भी मीरा मरी नहीं अपितु उनका दिव्य तेज और अधिक बढ़ता गया। भक्तों का सारा संसार मिल करके भी बाल बाँका (टेढ़ा) नहीं कर सकता।

जो घट अन्तर हरि सुमिरै।
ताको काल रूठि कहा करिहै, जो चित चरन धरै॥

(सूरविनय पत्रिका–८८)

काल भी भक्त का कुछ नहीं बिगाड़ सकता। प्रह्लाद, विभीषण की तरह कलियुग में भी मीरा, सूर, तुलसी, कबीर आदि अनेक भक्त हुए, जिनको संसार दबा नहीं पाया। श्री मीराबाई जी ने सभी लोकलाज, कुल मर्यादा आदि की सभी श्रृंखलाओं को तृणवत तोड़कर द्वापर कालीन गोपीप्रेम कलियुग में प्रत्यक्ष प्रकट करके दिखाया। ऐसे ही श्री कृष्ण प्रेमी भक्तों में झालीरानी हुई हैं चित्तौड़ में । ये जन्म से ही अपने माँ–बाप के यहाँ भक्ति करतीं थीं लेकिन लड़की को समाज भक्ति नही करने देता, हर माँ–बाप सोचता है कि मेरी बेटी ब्याह करे। इनका विवाह जबरदस्ती किया गया चित्तौड़ के महाराज के साथ। विवाह के बाद ये महारानी बनीं, सुन्दर तो थी हीं, ब्याह हो जाने के बाद भी इनमें भक्ति–भाव घटा नहीं और ये गुरु बनाने के लिए चलीं। राजा साहब से कहा कि हम संत या गुरु ढूँढ़ने जा रही हैं। राजा ने रोका लेकिन वह रुकी नहीं और राजा साहब से कहा कि आप लोग तो शिकार में जाते हैं, खेल–कूद देखते हैं, आप मुझको क्या रोकते हैं? मैं तो भगवान के भक्तों को, संतों को ढूँढ़ती हूँ। ये मनुष्य शरीर इसीलिये मिला है।' ये हिन्दुस्तान के अनेक तीर्थों में ढूँढ़ते–ढूँढ़ते काशी (बनारस) पहुँच गयीं, वहाँ अनेक संतों को देखा, इनको रैदासजी का भक्तिभाव बहुत मनोनुकूल लगा, वे बड़े सिद्ध संत थे, कबीर दासजी के गुरु भाई थे। इनका जन्म चमार जाति में हुआ था, ये बहुत ही सरल, सहज प्रेमी भक्त थे। भगवान भक्ति देखते हैं, जाति–पाँति नहीं देखते हैं। झाली रानी बड़ी वीर क्षत्राणी थीं, वीर आदमी जब झुक जाता है तो झुक ही जाता है, इन्होंने संत रैदास जी को गुरु बनाया। काशी के पंडित नाराज हो गए कि ये छोटी जाति का है और रानी के गुरु बनने का इसे क्या हक? पंडितों ने काशी के राजा से रैदास जी की शिकायत किया कि इनको जेल भेज देना चाहिए, क्योंकि ये ब्राह्मण नहीं हैं, इनको गुरु बनने का अधिकार नहीं है, ये हिन्दू धर्म के विरुद्ध है। तो राजा ने रैदास जी को सभा में बुलवाकर कहा कि आप क्यों गुरु बने? रैदास जी बोले – अरे भाई ! मैं क्या करूँ, रानी से पूछो, मैं उसको बुलाने नहीं गया और वह अपने आप आयी और बोली – हमको भगवान के भजन का मार्ग बताओ। मैंने कहा 'भजन में तो सबको अधिकार है, तुम भी भगवान का नाम जपो, कीर्तन करो, यही रास्ता है।' उसने मुझे गुरु मान लिया। राजा ने कहा कि अगर भगवान इस बात का समर्थन करें तब तो ठीक है, नहीं तो सब पंडित तुम्हारे विरुद्ध हैं। राजा ने कहा कि यहाँ पर हमारे मन्दिर के ठाकुर जी हैं, तुम सभा के बीच में इनको बुलाओ और ये अगर तुम्हारे पास आ जायेंगे तो तुमको छोड़ दिया जाएगा और नहीं तो पंडित लोग जो कहेंगे वही दण्ड मिलेगा। राजदरबार में ठाकुर जी का सिंहासन रखा गया तो रैदासजी ने कहा कि अजी ! मैं तो छोटी जातिका हूँ, मुझमें कोई चमत्कार नहीं है, पहले आपके पंडित लोग ठाकुर जी को बुलावें, ये इनके पास चले जायेंगे। तब राजा ने सभी पण्डितों से कहा कि आप लोग अपने वेद–मन्त्रों से आवाहन करिये। पण्डितों ने वेद मन्त्रों के द्वारा ठाकुरजी का आह्वाहन किया परन्तु वह नहीं आये। अब रैदास जी से कहा गया कि पण्डितों के बुलाने पर तो ठाकुर जी नहीं आये, अब आप प्रयत्न करो। रैदास जी ने आर्त भाव से अश्रुपात करते हुए श्रीभगवान को बुलाया। इनके द्वारा आहूत किये जाने पर श्रीठाकुर जी सिंहासन समेत इनकी गोद में आ गये। अब तो जिन पण्डितों ने मुकदमा रखा था, वह असफल हो गया। रैदासजी वहाँ से मुक्त होकर अपनी कुटिया में आकर भजनाराधन में लग गये। झालीरानी जो इनकी शिष्या बनी थीं, उनको बड़ा दु:ख लगा कि इतने ऊँचे महात्मा और इनको हमारे कारण दरबार में जाना पड़ा, रानी ने मन में विचार किया कि ये काशी है, मेरा यहाँ कोई राज्य नहीं है, अत: मैं यहाँ कुछ नहीं कर सकती, मैं अपने गुरु को चित्तौड़ में बुलाऊँगी । रानी चित्तौड़ गयीं और वहाँ से रैदास जी को निमंत्रण भेजा "गुरुदेव! आप हमारे यहाँ आइये।" रानी बड़ी भक्त थीं। रानी के विशेष आग्रह पर रैदासजी चित्तौड़ में साधु–संतों के साथ संकीर्तन करते हुए गये। सारे राज्य में हल्ला मच गया कि काशी से रैदास जी आये हैं जो रानीजी के गुरुदेव हैं। राजा उनसे द्वेष करता था क्योंकि ब्राह्मणों ने उनकी बहुत निन्दा की थी कि रैदास छोटी जाति के हैं, इनको गुरु नहीं बनना चाहिए, रानी तो मूर्ख है। राजा ने रैदासजी को सूचना भेजी कि आप हमारे महल में मत आइये और पहरेदारों को

आदेश दिया कि रानी इनके पास न जा पाए। संत–भक्तों की संकीर्तन–मंडली के साथ रैदास जी दूर एक बगीची में रुक गये और वहाँ अखण्ड कीर्तन–भजन करने लग गये । रानी ने सुना कि हमारे गुरुदेव आये हैं, बगीचे में रुके हैं। लेकिन दासियों ने बताया कि आप वहाँ नहीं जा सकती है, क्योंकि राजाज्ञा से फाटक पर सैकड़ों सिपाही बल्लम, तलवार लेकर पहरा दे रहे हैं, बहुत ऊँची किले की दीवारें हैं। (प्राचीन काल में किले की दीवारें बहुत ऊँची होती थीं।) यह सुनकर रानीजी अपने कमरे से चलीं, देखा कि चारों ओर सिपाही पहरा दे रहे हैं। झाली रानी फाटक के भीतर खड़ी होकर रोने लग गई और बोलीं – हे गोपाल ! मैंने कोई पाप तो नहीं किया है, आज मेरे गुरुदेव आये हैं और मैं उनका स्वागत भी नहीं कर सकती, पहरा लगा दिया गया है!! **मैं कैसे जाऊँ हाय! संत शरण में कैसे जाऊँ। बन्द महल के द्वारे साँकर लग रहे तारे। फांद सकै न कोई, ऊँची हैं दीवारें। कैसे जाऊँ हाय! संत शरण में .. ....**

रानी ने देखा कि दरवाजे की ओर सैकड़ों सिपाही बल्लम, भाले, नंगी तलवार लिए खड़े हैं। राजा ने आदेश कर दिया था कि दरवाजा बन्द है, अगर कोई बाहर निकले तो उसका वध कर देना, क्योंकि हमारी रानी एक भिखमंगे नीच जाति के साधु के पास सेवा–सत्कार व सत्संग के लिए जाएगी, इससे हमारे राजमहल की इज्जत जाती है।

रानी ने देखा भाले टँग रहे आगे, नंगी हैं तलवारें।
सैनिक खड़े हजारों, बनके पहरे वारे॥
कैसे जाऊँ हाय! सत संगति को कैसे पाऊँ।
कैसे जाऊँ हाय! संत शरण में कैसे जाऊँ॥

रानी विरह को रोक नहीं पायीं और दौड़ीं कि इस दरवाजे के कील पर सिर पटक के मर जाऊँगी, लोहे की नुकीली कीलें दरवाजे के किले पर लगीं थीं। विरह में रानी दौड़ पड़ीं।

विरह व्यथा जब भारी, रानी अबला नारी।
दौड़ पड़ी वह मरने, द्वार पे सीस पटकने।
मर जाऊँगी हाय! सत्संग बिना न जीऊँ।
कैसे जाऊँ हाय! संत शरण में कैसे जाऊँ॥

अचानक जब रानी मरने के लिए दौड़ी तो किले के दरवाजे, जिसमें सात ताले लगे थे, वे खुल गये लेकिन यह रहस्य कोई जान नहीं पाया। पहरेदारों को तो यही प्रतीत हुआ कि दरवाजे बन्द हैं। यह भगवान की माया है। पहरेदारों को दिखाई नहीं पड़ा, वह तलवार घुमाते घूम रहे हैं।

खुल गये बन्द किवारे, देखे न पहरे वारे।
लीला जान न पाये, फिरते तलवार घुमाये॥

सैकड़ों सिपाहियों के बीच में होकर रानी चली गयीं, लेकिन कोई भी देख नहीं पाया। राजा का आदेश था – अगर रानी बाहर जाये तो उसका सिर काट डालना।

निकल गयी वह रानी, जान सकै न सेनानी।
राज आज्ञा थी निकले जो, सिर काटो तो उसको।

जिसकी भगवान् रक्षा करता है, उसको मारने वाला कौन है? रानी पहुँच गयीं जहाँ गुरुदेव रुके हुए थे।

उसका नहीं मारन हारा, जिसका प्रभु है रखवारा।
पहुँची रानी और बोली, गुरु चरनन सीस नबाऊँ॥

वहाँ पहुँची जहाँ कीर्तन हो रहा था। **रस में डूबी वह रानी, जहाँ हरि कीर्तन सब करते।** वहाँ कीर्तन हो रहा था – कृष्णगोविन्द, गोविन्द गोपाला, राधे गोविन्द, गोविन्द गोपाला। कीर्तन में रानी नाचने लग गयीं, हल्ला मच गया चितौड़ में कि झालीरानी पहरेदारों के बीच से उस बगीचे में पहुँच गयीं जहाँ संतजन रुके हुए थे और उनके साथ संकीर्तन में नाच रही हैं। राजा सिपाहियों के पास गया और बोला कि मैं तुम सबका सिर काट डालूँगा, रानी बाहर कैसे गयी? सिपाही बोले ''महाराज दरवाजे तो बंद हैं, ताले भी लगे हैं, हम विश्वास कैसे मान लें।'' राजा ने देखा तो सच में ताले लगे थे किवाड़ में। राजा ने कहा ''अब वह जब लौटे तो सिर काट देना, घुसने मत देना।'' उधर रैदास जी ने आज्ञा दिया कि तुम अब अपने महल चली जाओ –

बोले गुरु जा अब महलन, हरी भक्त नहीं हैं डरते।
मैं धन्य भई पा दर्शन बोली रानी मैं जाऊँ॥

सारे चित्तौड़ में शोर मच गया कि रानीजी नाच रही हैं

रानी नाची कीर्तन में, ये शोर हुआ जन–जन में ।
सुन राजा समझ न पाया, कैसे रानी निकली यहाँ से॥

राजा ने सिपाहियों को आदेश दिया कि रानी आये तो उसको महलों में नहीं घुसने देना।

रानी न घुसने पाए, आज्ञा सबको सुनवाए।

पहरेदार और अधिक क्रोधित हुए कि अबकी बार रानी आएगी तो काट डालेंगें। **खीझे सब पहरे वाले खीचें अपनी तलवारें।** तलवार लेकर क्रोधावेश में घूम रहे हैं। रानी आई, भगवान की माया से फाटक खुला और सिपाहियों के बीच से होकर चली गयीं, कोई देख नहीं पाया, वह महल के अन्दर चली गयीं। जब महल में पहुँच गयी तब राजा को खबर मिली कि रानी आ गई है, वह भी वहाँ घोड़े से चारों ओर चक्कर लगा रहा था, देख रहा था कि पहरेदार, दीवार और तालों के रहते रानी कहाँ से, कैसे अन्दर आ गयी, क्या पक्षी बनकर उड़ आयी? **फिर गयी महल में रानी, नहीं जान सके सेनानी।**

यह आश्चर्यजनक चमत्कार देखकर राजा समझ गया कि हमारी रानी सच्ची भक्त है । ये भक्ति का प्रताप है कि हजारों सिपाही देख नहीं पाए। श्रीरानी जी के पास राजा गया और उनके चरणों में गिर पड़ा। **सब समझ भक्त हुआ राजा, भक्ति का डंका बाजा।** सारे चितौड़ में लोग झाली रानी की जय–जय बोलने लग गए।

भक्ति फैली सब बोले, झाली रानी की जय जय।
हरि कृपा महातम गाऊँ, हरि लीला गाय सुनाऊँ॥

इस तरह झाली रानी ने श्री गुरुदेव भगवान् की कृपा से अविचल प्रेममयी भक्ति प्राप्त की ।

'रसीली ब्रजयात्रा भाग- २' ग्रन्थ का विमोचन

ब्रजप्रेमी भक्तों के द्वारा चिर प्रतीक्षित ग्रन्थ रसीली ब्रजयात्रा द्वितीय भाग का मानमन्दिर के आराधना-भवन रस मण्डप में ४ अक्टूबर को रमणरेती के महामण्डलेश्वर कार्ष्णि श्रीगुरुशरणानंदजी महाराज के कर-कमलों द्वारा विमोचन किया गया। इस अद्वितीय ग्रंथ की लेखिका हैं मान मन्दिर सेवा संस्थान की अति नि:स्पृह भागवत वक्ती बाल साध्वी मुरलिकाजी। इस ग्रन्थ के विमोचन समारोह में परम पूज्य संत श्रीरमेश बाबाजी महाराज ने श्रद्धालु श्रोताओं को इस प्रकार संबोधित किया -

बाबाश्री के शब्दों में सन् १९५३-५४ में प्रथम बार जब मैं ब्रज में आया तो किसी ब्रजवासी के आग्रह पर मैं 'महावन रमणरेती के संत पूज्य श्रीहरिनामदासजी महाराज द्वारा संचालित ब्रजयात्रा में सम्मिलित हुआ। इसके दूसरे वर्ष जब मेरी माताजी प्रयाग से मुझसे मिलने आयीं तो मेरे अनुरोध करने पर वह भी इस ब्रजयात्रा में शामिल हुई थीं। यात्रा के समापन पर जब वह प्रयाग वापस जाने लगीं तो स्वामी हरिनाम दास जी महाराज ने उनसे कहा कि अगर तुम ब्रज में आना चाहती हो तो इस यात्रा में जिन स्थलों में तुम गयी हो उन लीला स्थलियों का नित्य पाठ करना व उनका नामोच्चारण करना, इससे तुम्हें ब्रजवास की प्राप्ति हो जाएगी। रमणरेती की ब्रजयात्रा का जो मार्ग था, उसकी लीला स्थलियों को मैंने माताजी को एक कागज पर लिखकर दे दिया। माताजी प्रयाग में उस कागज पर लिखे स्थलों का प्रतिदिन पाठ करती थीं और इसी से उन्हें ब्रजवास की प्राप्ति हो गई। गहवर वन में उन्होंने सौ वर्ष की आयु तक भजन किया, उनकी मृत्यु के उपरांत उन्हीं के नाम से माताजी गौशाला की स्थापना की गई क्योंकि वह महान गौ-भक्त थीं और आज लगभग पचास हजार भारतीय नस्ल की गायें एक स्थान पर यहाँ रह रहीं हैं जो अन्यत्र दुर्लभ हैं। जहाँ उन्होंने भजन किया वहाँ आठ मंजिल के भवन रसकुंज का निर्माण हो गया जहाँ सवा सौ दिव्य आराधिकाएँ आराधनरत हैं। तदनन्तर मैंने विचार किया कि ब्रज क्या है, कितना बड़ा है, इसको जानना चाहिए। उस समय बाजार में ब्रजसंबंधी कोई संतोषजनक ग्रन्थ उपलब्ध नहीं था, तब मैंने संकल्प किया कि एक ब्रज सम्बन्धी ग्रन्थ निर्मित किया जाएगा, इसके लिए ब्रज के समस्त स्थलों का ज्ञान होना परमावश्यक है, इसी उद्देश्य से मान मन्दिर द्वारा ब्रजयात्रा का उद्भव हुआ, उसके प्रेरक थे रमणरेती के महामंडलेश्वर श्रीगुरुशरणानंदजी महाराज के गुरुदेव स्वामी श्रीहरिनामदासजी महाराज, उन्हें मैं गुरु रूप में मानता हूँ और इसी नाते महाराजश्री मुझे गुरु भाई कहकर संबोधित करते हैं। मैं यह विचार करता था कि कभी ये राधारानी ब्रजयात्रा के अवसर पर पधारेंगे। आज मेरी वह मनोकामना पूर्ण हुई। भागवत के प्रारंभ में शौनकादि ऋषियों ने कहा -

अतिमर्त्यानि भगवान् गूढः कपटमानुषः॥

(भा: १/१/२०)

भगवान् कपट रूप (गुप्त रूप) से मनुष्य बनकर आये और अतिमर्त्य लीलाएं उन्होंने कीं। यह आज भी पूर्णतया सत्य है, क्योंकि मान मन्दिर इस स्थिति में नहीं है कि ब्रजयात्रा का संचालन करे, कारण कि यहाँ धन-सम्पत्ति का अभाव है, मेरा कोई शिष्य नहीं है, यहाँ किसी से दान की याचना भी नहीं की जाती है। यहाँ के समस्त साधु-साध्वियां एवं बच्चे ब्रजवासियों के शुद्ध अन्न मधुकरी के द्वारा जीवन-निर्वाह करते हैं, ऐसी स्थिति में ब्रजयात्रा का संचालन करना हमारी क्षमता के बाहर है। फिर भी चूंकि भगवान् अति मर्त्य लीलायें करते हैं और उन्होंने आज भी इसे किया है, इसका प्रमाण है कि मान मन्दिर से सर्वप्रथम १००-२०० व्यक्तियों के द्वारा ब्रज-परिक्रमा का शुभारम्भ किया गया था। अत्यंत निर्धनावस्था में यात्रा चली, न तम्बू-तनात, न भोजन की व्यवस्था किन्तु प्रभु ने सब निर्वाह किया और आज प्रभु-कृपा से विश्व की यह सबसे बड़ी नि:शुल्क यात्रा बन गई है। रसीली ब्रजयात्रा ग्रन्थ की लेखिका मुरलिका जी कथावाचन हेतु प्रत्येक वर्ष तीन महीने के लिए विदेश का दौरा करती हैं, दो वर्षों की विदेश यात्रा में इन्होंने जो भी द्रव्य प्राप्त किया, वह सब ब्रज यात्रा हेतु अर्पित कर दिया। उसी द्रव्य से यात्रा का संचालन होता है। विदेश यात्रा में ये किसी से धन की याचना नहीं करती हैं। इस बार की अमेरिका यात्रा में वहाँ की कथा आयोजन समिति के अध्यक्ष ने घोषणा की कि मुरलिका जी जैसा कथावाचक आज तक भारतवर्ष से अमेरिका कभी नहीं आया। जहाँ-जहाँ ये अमेरिका में कथा के लिए गयीं, उन्होंने कभी भी दान के लिए याचना नहीं की। यद्यपि मानगढ़ में विशाल गौशाला है, २० लाख रुपये गौ-सेवा हेतु प्रतिदिन का व्यय है किन्तु भगवान् अति मर्त्यलीला करते हैं, हमारी सामर्थ्य न होने पर भी ब्रजयात्रा का निर्वाह कर रहे हैं। सारी यात्रा ब्रजवासियों के शुद्ध धन द्वारा पोषित हो रही है। अमेरिका और कनाडा के दौरे में मुरली जी ने रिकॉर्ड

तोड़ दिया, किसी भी कथा में कहीं भी धन-याचना नहीं की। विदेश में उनकी कथा के आयोजकों ने एक प्रशस्ति पत्र में उनके बारे में लिखा कि हमारे देश में भारत या अन्य किसी देश से मुरलिका जी जैसा कोई कथा वाचक अथवा प्रचारक नहीं आया, जो आदर्श उन्होंने यहाँ स्थापित किया, हमारा समस्त समाज उसकी सराहना करता है। मुरलिकाजी की कथा का विदेशों में यह प्रभाव पड़ा कि ६ नवंबर २०१७ से बरसाना में आयोजित होने वाली 'गौ-भागवत कथा' में सम्मिलित होकर वे लोग ब्रज-दर्शन करने के लिए लालायित हैं ।

मुरलिका जी द्वारा रचित यह ग्रन्थ हजारों वर्षों तक ब्रजप्रेमियों का मार्गदर्शन करता रहेगा । रसीली ब्रजयात्रा का प्रथम भाग जब 'नाथद्वारा' राजस्थान के वल्लभ सम्प्रदाय के आचार्यों को भेंट किया गया तो उन्होंने और अधिक पुस्तकों की माँग की, उनके प्रबल अनुरोध पर उन्हें २५० प्रतियाँ भेजी गईं, वहाँ के आचार्यों ने मुक्त कंठ से इस ग्रन्थ की सराहना की । रसीली ब्रजयात्रा के द्वितीय खंड के प्रकाशन में अधिक समय व्यतीत हुआ क्योंकि ब्रज कितना बड़ा है, इसकी जानकारी हेतु प्रामाणिक प्राचीन ग्रन्थों का अभाव था । २० वर्षों से मेरी यह प्रबल अभिलाषा थी कि ब्रज सम्बन्धी एक ऐसे ग्रन्थ की रचना की जाए जो सम्पूर्ण ब्रज का प्रतिनिधित्त्व करे । वृहद् ब्रज के लेखन-कार्य हेतु प्राचीन ग्रन्थों की खोज में मान मन्दिर के संतों को 'मथुरा पुस्तकालय' से श्रीरूपगोस्वामीजी द्वारा विरचित ग्रन्थ 'मथुरा-माहात्म्य' की प्राप्ति हुई । इस पुस्तक में ब्रज के पाँच विभागों का वर्गीकरण किया गया है । इसके अतिरिक्त राधावल्लभ सम्प्रदाय के रसिकाचार्य चाचा वृन्दावनदासजी द्वारा रचित 'प्राचीन ब्रज परिक्रमा' ग्रन्थ की उपलब्धि हुई, उसमें कुछ ऐसे गाँवों का उल्लेख किया गया है जो मध्यप्रदेश में हैं । अनेक वर्षों से हम जिन प्राचीन प्रामाणिक ग्रन्थों की खोज में थे, उनकी प्राप्ति होने पर 'रसीली ब्रजयात्रा भाग २' में उनका प्रमाण दिया गया है । सुदूर सीमान्त के गाँवों में क्या लीलाएँ हुई हैं, इसका कुछ पता नहीं था, इसलिए मैंने मुरलिका से कहा कि तुम ब्रजवासिनी हो, अतः नाम साम्य से लीलाओं का अनुसन्धान करो, जैसे - वरषाणा से बरसाना बन गया, गोवर्द्धन से गोवर्धन, नन्दिग्राम से नंदगाँव बन गया । शाण्डिल्य जी ने वज्रनाभ से कहा था कि तुम लीलाओं के आधार पर ब्रज के गाँवों का नाम रखो । इस प्रकार 'रसीली ब्रजयात्रा भाग २' में नाम-साम्य के आधार पर ब्रजग्रामों की लीलाएँ लिखी गई हैं, उनसे सम्बन्धित महापुरुषों के पद लिखे गये हैं और इस तरह ३ वर्षों में यह ग्रन्थ पूर्ण हो सका । ऐसा ग्रन्थ बाजार में कहीं भी उपलब्ध नहीं है ।

स्वामी श्री गुरुशरणानंद जी ने अपने उद्‌गार इस प्रकार व्यक्त किए

इस ब्रज धाम को भगवान् ने अपने आप स्वयं से प्रकट किया है, यह कोई लौकिक स्थल नहीं है। श्रीराधारानी के कहने पर स्वयं भगवान् ने अपने को इस रूप में प्रकट किया है। अब भगवान् और उनके धाम के एकत्व का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है? यह ब्रज धाम भगवान् का ही स्वरूप है। अंतर्मुखी वृत्ति वाले को तो यहाँ के कण-कण में युगल रूप का दर्शन होता है। ब्रज के किस स्थल में कौन-सी लीला हुई है, यदि इसका स्पष्ट प्रमाण शास्त्रान्तर से प्राप्त नहीं होता है तो नाम के सारूप्य से लीला का अनुसन्धान किया जा सकता है। लीला की कल्पना की गई है, ऐसा कहना-समझना अशुद्ध है।

श्रीमद्‌भागवत के प्रकांड पंडित स्वामी श्रीअखण्डानन्दजी ने एक बार ऐसी लीला का वर्णन कर दिया जो प्रायः भागवत के इतिहास में उचित प्रतीत नहीं होती थी। विरक्त शिरोमणि एक संत श्रीवामदेवजी महाराज को यह लीला अनुकूल प्रतीत नहीं हुई। उन्हें इस सम्बन्ध में कुछ आशंका हो गई तो उन्होंने स्वामी श्रीअखण्डानन्दजी से चर्चा की। स्वामी जी ने उत्तर दिया कि जिस प्रकार भगवान् अनन्त हैं, उसी प्रकार उनकी लीला-कथा भी अनंत है।

हरि अनंत हरि कथा अनन्ता। कहहिं सुनहिं बहुविधि सब संता॥

कोई कितनी भी दूर की कल्पना करके भगवान् में किसी लीला का आधान करे, कितनी भी दूर तक चिन्तन करे, किसी न किसी कल्प में भगवान् ने वह लीला अवश्य की है, इसमें कोई सन्देह नहीं है। सन्देह नहीं करना चाहिए, वह लीला अवश्य हुई है। इसलिए श्रीबाबा महाराज के वचन प्रमाण हैं कि नाम-साम्य के आधार पर लीलाओं का वर्णन किया जा सकता है।

सतां हि संदेह पदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तः करण प्रवृत्तयः।

(अभिज्ञान शाकुन्तलम् १/२२)

महापुरुषों के अन्तःकरण की प्रवृत्ति ही सबसे बड़ा प्रमाण होती है। इसलिए इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि ब्रज के जिन स्थलों का, जिन लीलाओं का वर्णन अन्यत्र उपलब्ध नहीं है और उनको इस ग्रन्थ में प्रकट किया गया है तो 'प्रमाणमन्तः करण

प्रवृत्तय:' तथा स्वामी श्रीअखण्डानन्दजी के वचनों के द्वारा वह पूर्णतया प्रमाणित है, पूर्णतया सत्य है, इसमें कोई शंका नहीं करना चाहिए। शास्त्र और महापुरुषों की वाणी के प्रति शंका करना घोर अपराध है, नास्तिकता का परिचायक है। गुरु और शास्त्र को परम सत्य मानना ही सर्वश्रेष्ठ अधिकारी का लक्षण है। श्री बाबा महाराज अनेकों वर्षों से ब्रज लीला की उपासना करते आ रहे हैं, वह भागवत के अभूतपूर्व विद्वान हैं। आधी शताब्दी से अधिक वर्षों से आप ब्रजभूमि की आराधना कर रहे हैं। संतों के मुख से हमने सुना है कि ब्रज में जाने की यदि किसी के मन में अभिलाषा जाग्रत होती है, संकल्प उदय होता है कि हम ब्रज में जायेंगे तो यह न जाने कितने अधिक पुण्यों का फल है और ब्रज में आना श्रीराधारानी कृपा के बिना असम्भव है और श्रीजी की कृपा के बिना किसी को ब्रजवास नहीं मिल सकता। श्रीबाबामहाराज विगत ६५ वर्षों से अखण्ड ब्रजवास कर रहे हैं तो वह राधारानी के परम अनुग्रह पात्र हैं, इसमें कोई सन्देह ही नहीं है।

ब्रजयात्रा भगवान् की उपासना और भगवद्–साक्षात्कार का सर्वश्रेष्ठ साधन है। ब्रजयात्रा में हमारे साथ कई लोगों को अत्यन्त अद्‌भुत अनुभूतियाँ हुई हैं। एकबार आदिबद्री की यात्रा में हमलोग मार्ग से भटक कर इधर–उधर विचरण कर रहे थे तो एक बालक पर्वत पर खड़ा होकर बोला – 'अरे बाबा ! उस रास्ते से मत जाना, इधर के मार्ग से होकर आओ।' उसके बताये मार्ग पर जाने से हमें अपनी मंजिल प्राप्त हो गई। जब गुरुदेव महाराज से उस बालक के विषय में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि रमणबिहारीलाल ठाकुरजी ही तुम लोगों को रास्ता बताने के लिए आये थे।

असंयमित होकर ब्रजयात्रा नहीं करना चाहिए, वाणी पर संयम रखना चाहिए, नेत्रों का भी बहुत संयम रखना चाहिए। ब्रजयात्रा एक तपस्या है, भगवान् की अपरोक्षानुभूति का एक श्रेष्ठ साधन है। ब्रजयात्रा इस भाव से करनी चाहिए कि हम भगवान् के दर्शन हेतु चल रहे हैं, एक–एक कदम में भगवान् के सान्निध्य का अनुभव किया जाए तो ब्रजयात्रा सफल हो जाती है। ब्रजोपासकों व भागवतोपासकों के लिए ब्रजयात्रा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। कई बार जब मुझे भी ब्रज के बारे में कोई सन्देह हुआ तो मैंने श्रीबाबा महाराज से निवेदन किया और लोगों को भेजकर पुछवाया कि मुझे इन विषयों में सन्देह हो रहा है कि ब्रज में कौन–से वन हैं, कौन अधिवन हैं, कौन उपवन हैं तो बाबाश्री ने लिखित रूप में मुझे इन सबका विस्तृत विवरण उपलब्ध कराया।

'रसीली ब्रजयात्रा' ग्रन्थ की रचना साक्षात् भगवान् की उपासना है क्योंकि जैसे ठाकुरजी की सेवा महत्त्वपूर्ण है, उसी प्रकार ठाकुर जी के सेवकों की सेवा भी महत्त्वपूर्ण है। जैसे –ब्रज की, ब्रजविहारी की सेवा महत्त्वपूर्ण है उसी प्रकार ब्रजयात्रियों की सेवा भी महत्त्वपूर्ण है। यह ब्रजरसमय ग्रन्थ ब्रजयात्रियों की सेवा के उद्देश्य से रचा गया है, प्रमाण से रचा गया है, सन्देह निवारण के लिए रचा और रचवाया गया है। यह मानबिहारीलाल की साक्षात् सेवा है, अद्‌भुत सेवा है, मानबिहारी के सेवकों की एवं ब्रजयात्रियों की सेवा है। इसमें सभी संतों ने, विद्वानों ने परिश्रम किया, दुर्लभ ग्रन्थों का संचयन किया गया और सबसे बढ़कर अपनी अनुभूति का संचयन किया गया। मुरलिका जी की यह कृति अद्‌भुत है, इसमें कोई सन्देह नहीं है लेकिन मुरलिका से जो ध्वनि निकलती है वह मुरलिका केवल माध्यम है, उसमें स्वर और प्राण तो कोई और फूंकता है परन्तु मुरली महत्त्वपूर्ण है। जैसे – हम माइक पर बोल रहे हैं और यह माइक ठीक हमारी आवाज को ही प्रसारित करे तो ठीक है लेकिन यदि यह स्वयं अपनी आवाज में घुर्र–घुर्र करना शुरू कर दे तो हम कहेंगे कि यह माइक खराब है, इसे हटा दो। हमको बड़ी प्रसन्नता है कि मुरलिका जी को साक्षात् अपने गुरुदेव श्री बाबा महाराज का आशीर्वाद प्राप्त है। मुरली ने वही स्वर निकाले जो सद्‌गुरुदेव श्री बाबा महाराज ने उनमें प्रेषित किये। मुरलिका बहुत प्रबल, मुख्य माध्यम है। इनकी महिमा की कोई सीमा नहीं है। मुरलिका देवी का अपने गुरुदेव के प्रति पूर्ण समर्पण है, गुरुदेव ने इनमें जो प्राण फूंके, वही ध्वनि इन्होंने निकाली है, भिन्न ध्वनि नहीं निकाली है। यह मुरलिका की विशेषता है। इस विशेषता के लिए मैं अवश्य इन्हें साधुवाद देता हूँ और भगवान् से प्रार्थना करता हूँ कि गुरु कृपा उन पर और अधिक बनी रहे।

पूज्य श्री बाबा महाराज के साथ मेरा गुरु भाई का सम्बन्ध है। मैं अपने हृदय से ज्येष्ठ गुरु भ्राता के रूप में बाबाश्री का सम्मान करता हूँ। कई बार जब ब्रजयात्रा के सम्बन्ध में संकट आया तो मैंने श्री बाबा से कहा कि मार्ग में बहुत संकट आ रहे हैं, क्या करना चाहिए तो बाबा महाराज ने जो प्रमाण दिया उसे लेकर हम चले।

अन्त में, मैं आप लोगों से निवेदन करता हूँ कि इस ग्रन्थ के रूप में भगवती मुरली देवी और उनके सहयोगियों ने जो पुनीत कार्य किया है, उसके लिए मैं इन सबको बहुत–बहुत साधुवाद देता हूँ। वस्तुत: श्री बाबा महाराज का अनुग्रह ही इस ग्रन्थ के रूप में हम सबके समक्ष प्रकट हुआ है। इसलिए मैं श्रीबाबामहाराज के चरणों की वंदना करता हूँ।